श्री ब्रज किशोर शर्मा
चेयरमैन, प्रबंध समिति
रामलाल आनंद महाविद्यालय

संदेश

हमारे संज्ञान में कुछ जानकारियां आती हैं। हम उनका विश्लेषण करके उनमें कुछ सूत्र या संकेत खोजने का प्रयास नहीं करते। सूत्र हाथ लगने पर ज्ञानवर्द्धन के साथ-साथ मनोरंजन भी होता है।

मैं दो उदाहरण प्रस्तुत कर रहा हूं।

वर्ष 1893 का भारत के लिए बहुत महत्त्व है।

1893 में स्वामी विवेकानंद ने शिकागो की धर्म संसद में भाषण देकर भारतमाता का भाल ऊंचा किया। समग्र विश्व को दिशा दान किया। आज 125 वर्ष बाद भी वे हमारे प्रेरणा स्रोत हैं।

1893 में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने घोषणा की कि "स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है"। इस एक वाक्य ने स्वतंत्रता आंदोलन को गति प्रदान की। भारत माता की बेड़ियां कट गईं।

1893 में श्री अरविंद इंग्लैंड से भारत आए। उनके पिताजी ने उन्हें पांच वर्ष की आयु में इंग्लैंड भेज दिया था जिससे वे अंग्रेजों के संस्कार ग्रहण कर सकें। किंतु I.C.S की नौकरी को त्यागकर वे भारत आ गए।

1893 में श्रीमती एनी बेसेंट भारत आईं। स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका सर्वविदित है।

1893 में पूज्य महात्मा गांधी भारत छोड़कर दक्षिण अफ्रीका गए। वहां से वे 1915 में वापस आए।

दूसरा उदाहरण ज्ञानप्रद और मनोरंजक दोनों है।

सामान्यतया जो कारागार तोड़कर या पुलिस की अभिरक्षा से भाग जाता है उसे गंभीर अपराधी माना जाता है। किंतु कुछ ऐसे भी हैं जो ऐसा करने पर भी पूज्य, आदरणीय और श्रद्धास्पद हैं।

भगवान श्रीकृष्ण ने तो जन्म लेते ही स्वयं को कारागार से मुक्त करा लिया। आज वे पूजित हैं।

उनका चरित्र और उनका गीतोपदेश सहस्रों वर्षों से करोड़ों व्यक्तियों का मार्ग आलोकित कर रहा है।

छत्रपति शिवाजी महाराज औरंगजेब के कारागार से मुक्त हो गए। पूरे देश की दिशा बदल गई। हिंदुओं के धर्म और प्राणों की रक्षा हुई। आदर्श शासक के रूप में उनके जैसा कोई शासक नहीं मिलता। उनकी योजना के कारण ही औरंगजेब 26 वर्षों तक दक्षिण में फंसा रहा। कुछ ही वर्षों में देश को मुगल शासन से मुक्ति मिल गई।

नेपोलियन को बंदी बनाकर एक द्वीप में रखा गया था। वहां से भागकर उसने पुनः सेना गठित की और फ्रांस की विजय पताका फहराई।

आयरलैंड के डी. वेलेरा ने जेल से भागकर देश को एक सूत्र में पिरोया।

नेताजी सुभाषचंद्र बोस पुलिस की अभिरक्षा से निकल भागे। इसी कारण वे जापान से मिलकर Indian National Army का गठन कर सके। उनके इस प्रयास से ही स्वतंत्रता इतने शीघ्र मिली।

1942 के आंदोलन के बाद श्री जयप्रकाश नारायण जेल की दीवार फांदकर भाग गए। इंदिरा गांधी के निरंकुश शासन और आपात की अंधेरी रात में देश श्री जयप्रकाश नारायण के पीछे खड़ा हो गया।

ब्रजकिशोर शरण

Message

It gives me immense pleasure to write a few words as prologue to our college magazine 'Samdrishti' that encompasses writings of students and their achievements. I congratulate all the contributors and the editorial board for bringing out such a beautiful magazine.

Our College is a public funded higher educational institution with the vision to facilitate development of youth as nation-builders through affordable quality education and to inculcate critical and innovative thinking among teachers and students. We are striving to empower our students for their all-round development through education, skill enhancement, building character and improving employability of young talent, the future leadership. Through this message, I take the opportunity to reflect on the year's successes and to refocus on goals that we need to accomplish to work towards our vision.

This year we have successfully introduced two new undergraduate courses: B. Sc (Hons) Mathematics and Bachelor of Management Studies in the college. We have also started two new Centres: 1. Centre for Entrepreneurship and Technology Development to enrich and sharpen the entrepreneurial skills of students who wish to establish and successfully run their own enterprises in future. 2. Centre for Disaster Management to provide training and education to students on this important aspect.

We have taken several initiatives this year to promote research culture in the college by submitting research proposals for extra-mural funding, to strengthen Alumni Association through interactive sessions with current students, to provide new skills to our students and faculty through Add-on courses and Faculty Development Programmes and to provide career guidance, soft-skill trainings and placement opportunities through campus interviews and internship fair.

Throughout the year the various societies, clubs, Nee, NSS, sports units remained busy with a range of activities, making the campus vibrant and colorful, the glimpses of which you will see in this magazine. Many students have brought laurels to college in academics, cultural activities, debate and quiz competitions and sports. My Heartiest Congratulations to all of them. The Student Union of the college deserves my special appreciation for their hard work, good human values and effective student leadership.

I on behalf of Ram Lal Anand College family wish that the students achieve greater success and attain new heights in the coming session. Students please set your goals, reexamine your priorities, and make specific plans to achieve what you desire. This will help you to move forward with a purpose in life and have the pleasure of watching your dreams turning into reality.

I thank all the teaching and non-teaching staff for planning and organizing various activities throughout the year to bring forward the talent of students and instilling confidence among them. I extend my gratitude towards the Chairman and members of Governing Body for their unstinted support and able guidance. I am sure that with this diligence, devotion and dedication of all stakeholders, RLA College will turn into a World Class Institution.

With blessings and warm wishes,

Rakgupta

Dr Rakesh Kumar Gupta
Principal

संरक्षक
डॉ. राकेश कुमार गुप्ता
प्राचार्य

समदृष्टि समिति
डॉ. सुभाष चन्द्र डबास

संयोजक
डॉ. संजय कुमार शर्मा
डॉ. अर्चना गौड़
डॉ. कृष्ण गोपाल त्यागी
डॉ. अशोक कुमार मीणा
डॉ. मानवेश नाथ दास
डॉ. अलंकार
डॉ. साक्षी साहनी
डॉ. सलोमी जॉन
निधि किरण
मीसा सबरीन

छात्र मंडल
अंजलि सिंह, निधि सिंह, किशन सरोज, लक्ष्मी तोमर, ईशा सुरभि, शुभांगी, योशी, आरुषी, शुभम राज, सुदामा

आवरण एवं अंतिम पृष्ठ पर प्रकाशित कृतियाँ पुरस्कृत हैं

सम्पादकीय...

सृष्टि सौंदर्य मानव हृदय को सदा प्रेरित करता रहा है। रचनात्मकता और समानता प्रकृति के दो महत्वपूर्ण तत्व हैं। प्रकृति के इन प्रेरणादायी तत्वों के सम्मिलन से मानवीय सौंदर्य की अप्रतिम रचना का निर्माण होता है। 'समदृष्टि' ऐसे ही प्रयास का उदाहरण है। 'समदृष्टि' को आधार बना सभी विभाग के छात्र छात्राओं द्वारा रचित रचनायें, सभी समितियों में उनकी भागीदारी, उनके अनुभवों को इसमें स्थान दिया गया है। इस पत्रिका का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों के सृजन पक्ष को कल्पना की नई ऊंचाइयों तक ले जाना है। उनकी अनुभूति की उन्मुक्त अभिव्यक्ति को 'समदृष्टि' द्वारा ऐसा स्थान मिलता है जहाँ अपनत्व होता है। आज के डिजिटल युग में सभी अभिव्यक्ति के लिये स्वतंत्र है। किंतु सोशल मीडिया ने सभी को साहित्यिक परिधि के बाहर ला खड़ा कर दिया है। इस पत्रिका के माध्यम से विद्यार्थियों की रचनात्मकता साहित्यिक कलेवर के साथ अवतरित हुई है, जहाँ एक दूसरे की भावनाओ का सम्मान है, और जहाँ मौलिकता ने विश्व कल्याण का भाव नहीं छोड़ा है।

10 मार्च 2018 का दिन राम लाल आनन्द महाविद्यालय के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा। डॉ. राकेश गुप्ता ने इस दिन नव नियुक्त स्थायी प्राचार्य का कार्यभार ग्रहण किया। महाविद्यालय के सभी शिक्षक, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों के लिए यह अत्यन्त हर्ष एवं सौभग्य की बात है। राम लाल आनन्द की आत्मा भी इस दिन खुशी से झूम रही होगी। पिछले एक वर्ष में कॉलेज का युगान्तर हो गया है। निःसंदेह महाविद्यालय के सजग नेतृत्व का यह प्रतिफल है, जहां सम्पूर्ण वातावरण सौहार्द, उत्साहवर्धक और प्रेरणादायक है। महाविद्यालय के प्रवक्ता, प्रशासनिक कर्मचारी और विद्यार्थी–गण सभी अपने कार्यभार को पूरी निष्ठा और सहयोग से सफल बनाते हैं। बसंत ऋतु प्रकृति के चरमोत्कर्ष का प्रतीक है और आज रामलाल आनंद विद्यालय में भी बसंत ऋतु अपनी दस्तक दे चुका है। परस्पर सद्भाव, प्रेम और विश्वास महाविद्यालय को प्रगति के पथ पर अग्रसर कर रहा है।

'समदृष्टि' महाविद्यालय की सभी शैक्षणिक एवं शिक्षेतर गतिविधियों के एक जगह समाहित और समादृत प्रकाशन का माध्यम है। इसी सद्प्रयास के साथ पत्रिका 'समदृष्टि' 2018 आपके हाथों मे है। आप सब को साधुवाद।

डॉ. सुभाष चन्द्र डबास

Contents....

चेयरमेन संदेश	1
Principal's Message	2
सम्पादकीय...	3
Arts And Culture Society	5
Career Counseling and Placement Cell	8
NSS Unit Ram Lal Anand College	10
NCC Report	13
New Expectations...	17
Report of Website Committee	17
Students' Union Report	18
Parda – The Film Society	20
Sangosthi: A forum for Seminars Report 2017-18	22
Chitra Report	23
ENACTUS	24
मैं पक्षी गगन का	25
महिलाओं को कहाँ मिल रहा सम्मान?	25
किन्नर	26
चट्टान सा इतिहास....	26
क्यों ये दीवारें	27
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ एक सपना	28
चलो कुछ ऐसा करें कि....	29
पर्यावरण सामूहिक और व्यक्तिगत जिम्मेदारी	30
सुन्दर वरदान	31
भारत में लिंग अनुपात	32
मेरी गलती क्या?	33
मेरे आसपास	34
प्रदूषण	35
पुस्तक	35
ये दीवारें	36
खुशी की तलाश	37
या रब्बा मेरे दोस्तों तक संदेश पहुँचा दे	37
अस्तित्व : एक पहचान	38
अभिव्यक्ति	39
माई भात ला दे रे	39
और मैं रो पड़ी...	40
भेदभाव क्यूँ?	41
बेटियों का अधिकार	42
मेरा गाँव शहर नहीं होना चाहिए	43
मन की बात	43
अपमान	44
दिल्ली	44
कभी दो मिनट का समय मिले तो	44
ग्रामीण महिलाओं को कितनी स्वतंत्रता	45
नारी शोषण	46
बाल मजदूरी और नशा: एक अभिशाप	47
वाह रे सत्ता....	48
आँगन की चिड़िया	49
अब हम दूर होने लगे हैं	49
योग और युवा	50
एक भारत श्रेष्ठ भारत	51
A Gold Medalist Student Address	52
Who runs the world?	53
Environment Today....	54
Real and Imaginary	55
Another Brick in the Wall	56
My Angel	56
Freedom within Boundaries	57
She sang to me	57
A Girl Educated is A Family Educated	58
Millenials and Management	58
I am the one that you kill, every day	59
Battle of Known and Unknown	60
Our Freedom and Education	61
Promises are Just words...	61
Dubious Resolution	62
A Description	62
Why Should I be Sophisticated Always?	63
She is the Princess of his Heart	63
A Letter of Desperation	64
My Thoughts	64
गाँधी स्टडी सर्किल	65
''हिंदी साहित्य परिषद्''	66
हिंदी एवं हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग:	67
'आरोह' हिंदी वाद–विवाद समिति : रिपोर्ट	68
'समदृष्टि'... एक झलक	70
Quiz Competition	71
Yoga and Meditation Committee	72
Women's Welfare Advisory Committee...	74
Eco Club	75
Department of Mathematics	77
Geology Department Activity...	78
Department of History	80
Department of Political Science	81
Department of Commerce	82
Report on Remedial Classes	82
Department of English	83
Department of Microbiology	84
Department of Statistics	86
Department of Computer Science	88
Alumni Association	90
Department of Physical Education	92
Sports Stars 2018	94
Department of Management Studies	95
Report on Disaster Management Committee	96
नेक्सप्लोरा 2018 की धूम	97
Felicitating 25 Years Of Contribution	100

Arts and Culture Society

All the four dimensions of Arts and Culture Society namely Fine Arts Society **"ईnara"**, Music Society "Dastoor", Dance society "Illusion", and Fashion Society "Sovereign" worked as enthusiastic as ever. The auditions were held in the college for all the four societies to select its members for the session 2017-18. There was a tough competition and students participated enthusiastically with bubbling energy to be part of these societies. They all worked very hard with dedication to bring big success to various celebrations held in the college Fresher's Welcome, Independence Day, Republic Day, Annual Cultural Fest Nexplora' 18 to name the few.

ईnara

ईnara - The fine arts society of our college with stout efforts and resolute motives have maintained its work in this session too. We did organized events with different ideas and with a thought of learning and make others experience and explore something new too. And it wouldn't be possible without our president Amrita Dagar English (H) IIIrd year and the selected team members Ankit Kumar, Gurpreet Kaur, Prerna Rajput, Rishika Ahuja, Pooja Yadav, Prerna, Megha Bodwal, Geeta Malik, Yamini Raghav, Neha Rustagi, Harshita, Divya Bhargav, Vikrant, Shubham Raj, Rajesh, Savi, Srishti, Keshav, Ankita Anand, Bhavya Mehta and Danish Ahmed.

Exhibition of ईnara Auditions

Wall Decoration by ईnara for Nexplora'18

ईnara coordinated together and organized and participated in different events and competitions. We participated in the exhibition organized at The Hindu College, some of our members represented our college in the exhibition. After that we did managed our college fresher's as the decoration duty is on our shoulders and we did it in a different style this time with more funny items with the help of our team's idea. Not only fresher's but yes we did the decoration work of our college fest too. This time we came up with the Rainbow theme to be accomplished and it made out to be colorful as we thought. We decorated the college's entrance with the attractive colorful woolen threads like a rainbow fair and we did decorate the college with our respective theme .We also organized three different events; Hand Art, Comic Art, 3-DArt Work. We are working hard and we will be working with more enthusiasm next time. Not only these events but ईnara is always there to help other departmental societies too for their fest decoration as it seems to be fun working together with such energetic colors and papers.

Dastoor

Dastoor, the Indian Music Society continued its musical journey in the session of 2017- 2018 as well. The music society, under the supervision of Arts and Culture convener Dr. Neena Mittal, received several new resources to enhance the capabilities of members. Under the guidance of their new music teacher Mr. Saptak Chatterjee, the team prepared their annual choir piece in the month of October and for the first time represented RLAC in the classical choir event of the annual fest of IIT Kanpur- Antaragini'17.

The society under the leadership of its President, Piyush Kumar Geology IInd Year and its members Zitni Handoo, Moumita Dasgupta, Anindita Ghosh, Aniket Prasanna, Dipen Gupta, Deveshwara Sharma,Shreeya Dikshit, Shubham Jain, Lucky Chaudhary, Supriyo Mukherjee, Marvin Savio, Abinash Suman, Tarun Sharma also performed in annual freshers party of the college wherein they performed a piece in an acapella form (Western form). Dastoor also performed in Gargi, PGDAV and is looking forward for more performances in the ongoing fest season.

Dastoor came up with its list of competitions in Classical Singing, Semi-classical and Battle of bands in Nexplora'18.

Illusion

Illusion the dance society of the college was revived last year only. In a short span of one year the society had practiced dedicatedly and was able to participate in other colleges/institutions. This year a team of 17 members Deepak, Manikanta, Kunal, Amit, Jaydeep, Gaurav, Abraar, Sweety, Bhawna, Jagriti, Pratibha, Aadhya, Monica, Ankita and Divya worked very hard under the leadership of its President Priyanka Gupta and Vice President Ankit Singh. The society has participated in renowned institutes like BITS Pilani, Sharda University, Dyal Singh College (E), ISBF College and Deshbandhu College with the help and guidance of their choreographer and alumni of RLA Manish Kumar. Participation at these events has been a tremendous learning opportunity and bonding experience for the team. The team also organized the dance events 'Groove' and 'Sweat It Out' in the college fest 'Nexplora'. Various colleges like Miranda House, Kamla Nehru College, Keshav Mahavidyalaya and so on. The winners of the event were teams 'Crunk' from Sri Aurobindo College and 'Inertia' from Amity University.

The society is proud to share that this year the society won First Position in group dance competition at Vivekananda College of DU. The society has got a boost up with this win and is participating in many more such competitions in the coming fest.

First Position in group dance competition at Vivekananda College

SOVEREIGN

Fashion, the style of body, creates an aura which expresses confidence and well-being without speech. This year's team consists of Ovind Yadav, Vaibhav Jaiswal, Kehsav Siroria, Himanshu Kumar, Vaibhav Luthra, Nikhil, Himalaya Tanwar, Firdaus Bano, Priyanka, Yasha Sood, Sapna Yadav, Swatantra, Drishthi, Panwar, Rohit and Gurpreet Kaur Randhawa. Sovereign society which got established in Jan'17 performed at various stages where participants keen their interest in giving the best of their performance such as BITS Pilani GOA, Bharti College DU, AIIMS Pulse, IIT Delhi, LINGYAS and will try to give their best and better performances with great dignity and spirit in time to come. Though, have achieved so much in such a short span of time, the society and its members still have a long way to go.

Dr. Neena Mital: Convener
Dr. Archana Gaur: Co-Convener

ENACTUS

Going by the famous proverb,

"GIVE A MAN A FISH AND YOU FEED HIM FOR A DAY. TEACH A MAN TO FISH AND YOU FEED HIM FOR A LIFETIME"

ENACTUS, RAM LAL ANAND COLLEGE was formed under the guidance of our honorable Principal Dr. Rakesh Gupta, Convener Dr. Neena Mital and Co-convener Dr. Rita Jain and came into effect on October 26, 2017. It has flourished immensely with the team of 20 members, the core team headed by Ujwal Gupta, Akankshya Mohanty, Atrijit Das and Riya Mehta are working tirelessly to reach out to the people in need, working on principles of entrepreneurship and philanthropy. ENACTUS at Ram Lal Anand College encourages and motivates budding entrepreneurs to work for the upliftment of the deprived and carve a niche in the society. We aim to reach out to people who have the zeal to work and potential to create a difference but have less or no opportunities.

Our first project 'VRIDDHI' was introduced with substantial ideas for creating a Green Environment and a healthy way of living with plants and their medicinal uses. Our target includes a community, wherein the women are seasonally employed. We have collaborated with an NGO, Harit Foundation which has helped us reach the community.

We also collaborated with ENACTUS, College of Vocational Studies for their Project 'Raah'. We helped them organize a shoe collection drive at the college on 1st Feb'2018, wherein the old shoes would be sent to cobblers to get them repaired, which would later be sold at competitive rates to provide the community with a stable source of income. People turned out to donate shoes in a large number.

After all the presentations, to all our delight, ENACTUS RLAC bagged the second position in the competition held on 7th February, 2018 at the fourth annual ENACTUS conference at Ramjas College. The scalability projected by our idea as compared to others was highly appreciated and awarded.

With the selfless and tireless efforts of all the members, and the cooperative and timely advises of Our Principal, and Faculty Advisors, ENACTUS RLAC is motivated to make it bigger in the society in the near future!

Ujwal Gupta
President, ENACTUS RLAC
B.Sc.(Hons.) Statistics, IInd Year

Pathway: Career Counseling and Placement Cell

The Career Counseling and Placement Cell activities started on a very positive note this year. The committee coined the name "PATHWAY" for the society. Before the start of the new session in the beginning of July i.e on 4th and 6th July, Tech Mahindra and M/S Sadashiv & Associates set up a KPO. It was a recruitment session for training cum placement for GST helplines of Govt. of India. All students/professionals with commerce/ tax/economics background participated in the recruitment drive where 120 recruitments were made which included commerce graduates of our college as well.

This year a student team of PATHWAY was also selected by the process of interview. A team of 10 students under the leadership of its president Tanmay Sinha and guidance of faculty members of the committee worked very diligently and efficiently and added many laurels to the committee.

The next placement drive was of KPMG India for commerce graduates. The placement drive was completed in two days on 9th and 11th Aug. Forty four commerce undergraduates of batch 2018 of the college were shortlisted on the basis of online test on first day and 8 finally got selected for the post of Analyst –Assurance. Recently, on 9th January the selected students also attended KPMG brunch connect conducted to promote a better understanding of the firm, and to familiarize them with the work environment and help address their queries.

An interactive workshop for Soft Skill assessment & development in line with the industry criteria under competency building programme was held on 24-25th October, 2017. The workshop was conducted by Abbscissa HR consulting Pvt. Ltd. for third year students of the college. The workshop was attended by 62 students from across courses. The complete assessment with individual and group assessment report in the form of CD was provided to students on individual basis.

The third placement drive was done by Amazon India, on 1st November 2017. The drive was open for all the under-graduates batch of 2018. Out of more than 100 registrations, 70 were shortlisted who took online test and 52 qualified. In the final round of interview, 24 candidates got selected and got their appointment letter on the same day for the post of Customer Service Associate.

Internship Fair: Pathway in association with Students' Union organized a two-day internship fair on 6-7th November, 2017. The college saw history being created with an event of such kind occurring for the very first time. The event witnessed the participation of about 20 companies offering a plethora for the students of the college. About 400 students participated in the event from diverse courses and filed up their resumes in different

companies and over 200 of them landed up bagging various profiles such as Business Developer, Operations Intern, Content writer etc. Companies like IDBI Federal Life Insurance, Career Marshal, Inkpot Online, UMEED-NGO engaged in grueling rounds of interviews and group discussions to decide their selections.

The fourth placement drive was of Smart School Education Pvt. Ltd. held on 29th March at Noida Office. Two of our students were selected for the post of Business Development Manager.

Inauguration of Internship fair by the Principal

This year, College also signed a MoU with CALYXPOD Talent Solutions Pvt. Ltd. on 1st December 2017, to manage placement/internship schedules and record. Pathway team is managing the registration of the students to this portal. A workshop in this regard was kept on 15th January, 2018 in college amphitheater, where CALYXPOD personnel discussed the problems on one-to-one basis.

Also, this year for the very first time, Pathway managed to engage a renowned professional career consultant Dr. Sanjib Kumar Acharya, for carrier guidance. A three day intense Career Counseling Workshop was held in three separate batches for Science/Commerce/Humanities students on 22-24th January, 2018. The workshop attended by 565 students was highly appreciated among students as well as faculty. The event was indeed a successful one where the students were engaged with all their enthusiasm.

Thus, it would not be wrong if we say that Pathway has touched several lives by the end of this year.

Convener: Dr. Neena Mital
Co-Convener: Dr. Rita Jain
President: Tanmay Sinha

NSS Activities 2017-18

National Service Scheme or NSS was launched in Mahatma Gandhi's birth centenary year 1969 in 37 Universities with the primary aim to develop the personality of Youth student volunteers through community services. The scheme is currently running in all states and universities under the Ministry of Youth Affairs and Sports. The motto of NSS is "Not Me But You".It helps students to develop a sense of selfless service and consideration for fellow human beings.

This year NSS volunteers worked very hard during the summer vacation to guide and help the admission seekers and their parents coming to college during the entire admission process in June-July 2018. The college also hosted the NSS trials for admission of students for the whole of the University of Delhi under NSS category. The Preliminary trails were conducted from 18 -20thJune 2017 and final trial on 5thJuly 2017 under the guidance of Dr. Capt. Parminder Sehgal, NSS Coordinator, University of Delhi. NSS volunteers Ravinder Kumar, Gaurav Diwakar, Pratisksha Mishra, Shivani Negi, Shivam Rana, Pradeep Shah, Rishika Ahuja, Pragya and Saloni deserve a special mention as they worked from morning till evening in the coordination of this big event and helped all the students seeking admission.

During the Orientation Program, a talk on NSS for new students was delivered to make new students aware about the NSS scheme and its activities. The NSS unit registered students interested to work as NSS volunteers from August 3-4, 2017. We got a great response with 167 students registering in the NSS unit of RLA College.

The following award winning hardworking and dedicated volunteers of last year were nominated as Office Bearers and group leaders of NSS for the year 2017-18:

President: Ravinder Kumar, B.A (H) Hindi, III year

Vice President: Shivani Negi, B.A (H) Hindi, III year

Secretary: Gaurav Diwakar, B.A (H) Hindi, III year

Simran, Arvind, Sangeet, Shivam, Geetanshu, Pradeep and Gaurav were also nominated as group leaders of NSS.

I attended a meeting along with two of our volunteers Ravinder and Gaurav on 10th July 2017 with the Hon'ble MoS, Youth Affairs & Sports Sh. Vijay Goel, at India Habitat Centre to discuss restructuring of NSS.

On August 11, 2017 NSS unit organized its first Swachhta Abhiyaan of the session in the college wherein NSS volunteers participated in full strength with lot of energy and enthusiasm to clean the campus and areas outside the gate of college.

NSS volunteer, Geetanshu was nominated to be SVEEP College Campus Ambassador to work for awareness among the voters for electoral process. He attended a workshop on 13.10.2017 at Chief Election Office, Delhi. Electoral Registration drive was conducted in the campus on 26-27 July 2017 by NSS Unit where 94 students filled forms for their voter IDs. NSS volunteers also actively participated in the Flag Hoisting Ceremony on 15th August 2017.

NSS unit in association with Indian Spinal Injuries Centre held a poster competition on the theme " Disability is not Inability" on 22 August 2017 at 11am. Forty Seven students took part in this poster competition. The three winners of this competition were rewarded 1st Prize: INR 10,000 to Geeta Malik, 2nd Prize; INR 5000to Manik Goel and 3rd Prize: INR 3000 to Komal Agarwal at Talkatora Stadium on 5th September 2017, the SCI day (Spinal Cord Injury day). An awareness talk on Spinal Cord and sports Injuries was also held in the college for the students on the on 22 August 2017 at 12.30 pm.

A tree plantation drive was held on Teachers day, September 5, 2017 where NSS volunteers, NCC cadets, teachers and students participated to plant trees in the college ground.

On NSS day, 22 volunteers participated in'Ek Bharat

Shrestha Bharat' event organized by SDMC at Bikaji Cama Place.During NSS day celebrations at college a Competition was held on "Alternative NSS Motto" writing (Hindi or English) on 26th September 2017 in which 12 students participated and the best entries were forwarded to the Ministry of Youth Affairs and Sports, Govt. of India.

"Swachhta hi Sewa" a second Cleanliness Drive was organised in the month of September to clean the defaced college campus due to college and DUSU elections (prevention of defacement of property Act.).The group leaders actively lead their group of volunteers to make this drive a success.

NSS volunteers followed Sankalp Se Siddhi (New India Movement 2017-2022) a movement started by Hon'ble Prime Minister to achieve New India by 2022 Volunteers took New India Pledge on 75th anniversary of 'Quit India Movement' and Swachhta Pledge to remove filth from our country.

NSS organized an Essay Competition on the theme "Mei Swachhta key leyay kya karunga/karunge / "What will I do for cleanliness?" 23 students took part in the competition. Gourav Sinha, B.Sc (H) Microbiology, II year) got the first prize, Krishna Kant B.A (H) Political Science, I year got the II prize and Neema Ramola of B.A (H) Hindi, II year got the III prize.

NSS volunteers also participated in a seminar on Drug Abuse at ARSD Collegeon 1st November, 2017 which sensitized them on the dark side of our society which is deeply consumed by drugs.

This year NSS unit of RLA college has Adopted a nearby Slum, J.J. Camp Shastri Market, South Motibagh, to do various awareness programs on health and hygiene. An initial survey has been conducted in the slum to chalk out the activities to be conducted. This slum has nearly1000-1100 families mainly migrated from Uttar Pradesh, some from South India and are mostly engaged in vegetable selling.

NSS volunteer, Shivani Negi, III year B.A. (Hons.) student was selected for 22nd National Youth Festival (NYF) 2018, the biggest Youth Festival of its kind in the Country at Gautam Buddha University, Greater Noida, UP inaugurated by Honorable Prime Minister Shri Narendra Modi. The objective of NYF is to commemorate the birth anniversary of Youth Icon Swami Vivekananda and provide a platform to bring the diversity of youth together to showcase their talents, cultural exchange, and sharing knowledge and values. This blend of diverse socio-cultural milieu creates 'Ek Bharat Shrestha Bharat.'(The Theme of the Festival this time was 'Sankalp Se Siddhi,' to capitalize on the demographic dividend of young(India, to capture the vibrancy and fresh perspective of youth and to pledge to accomplish the Goal of New India.

In Khelo India School Games (KISG) organized by Govt of India from January 28, to February 9, 2018 three of our NSS volunteers Amit Ranjan, Sachin Ranga and Happy Sharma worked to facilitate the participants. They attended orientation and Training also for the same. The volunteers worked very hard for the accommodation of the players from all over India and they were awarded National Certificates and honorarium also.

The NSS volunteers participated in third cleanliness drive where cleaning and organization of Microbiology laboratories was done from January 29 till 1st February 2018.

Recently NSS volunteers Ravinder Kumar, Pratiksha Mishra, Shivani Negi, Aditya and Ajay worked at International Book Fair from 6 to 14thJanuary 2018 with the theme Environment and climate.

A blood donation camp was organized in college on 6th February 2018 in association with Red Cross Society. NSS volunteers participated with lot of enthusiasm and happily donated and facilitated all blood donors. 60 units of blood were collected from donors.

Dr Prerna Diwan
NSS Program Officer

National Cadet Corps (NCC)

NCC is a tri-services organisation, engaged in grooming the youth of the country into disciplined and patriotic citizens. It was formed with the National Cadet Corps Act of 1948. It is a voluntary organization which recruits cadets from high schools, colleges and universities all over India. Our college NCC is affiliated to 7 DBN. Like every year, this year also, our cadets participated in various camps and activities with remarkable impression.

DU NCC Trials

This year the NCC & NSS trials of Delhi University was conducted in our college on 24th,25th & 26th of June. The NCC cadets provided all the necessary help required in the conduction of trials. The top official of NCC also visited the campus during trials.

Officials during NCC trials in the college

International Yoga Day

21st of June is celebrated as International Yoga Day. Our college organised a yoga session on the occasion of Yoga

Day in which NCC cadets along with other students, teachers and staff participated with full enthusiasm.

NCC cadets along with teachers and staff on International Yoga Day

Independence Day

This year the college celebrated the Independence Day on 15th of August. Despite being a gazetted holiday, the students, teachers and staff turned out in good numbers. The NCC cadets decorated the whole campus on the occasion & offered guard of honour.

Tree Plantation

The best time to plant a tree was 20 years ago and the second-best time is now. – Anonymous

Keeping in view the role which trees play in our life, the college organised a tree plantation awareness programme on 5th of September. The NCC cadets participated in the awareness programme and planted trees. The college chairman was also present on the occasion and gave the event a green signal by planting a palm tree.

Chairman of our college planting the tree

Thal sainik camp (TSC)

Thal Sainik camp is one of the most prestigious camps in NCC. The journey of Thal Sainik camp started from 29th July to 30th October. CDT Inderjeet from RLA NCC was selected as an all rounder to compete from Delhi Directorate. He was also camp senior of the Delhi Directorate in the camp. In the words of CDT Inderjeet this camp made him optimistic and he developed a never give up attitude in himself.

Cadet Inderjeet during Thal Sainik Camp

Advanced Leadership Camp (ALC)

One of the main aim of NCC is to inculcate leadership qualities amongst the cadets so that they can lead in various facets of life. Cadet Gaurav Jagota attended Advanced leadership camp in Agra from 21st Aug to 1st November. In the camp he learnt various leadership attributes which will definitely help him in being a good and responsible citizen of the country.

Cadets during the ALC camp

National Integration Camp (NIC)

Confucius has said the strength of a nation derives from the integrity at home. NIC teaches the cadets national integrity. Cadets get to know and share the culture and values of various states and thereby promoting national integrity. Our cadets went to Mumbai and Dhanbad for National integration camp. Our cadets participated in various activities and got rewarded also.

Cadets during a dance competition at the camp

Trekking Camp

NCC organises various adventurous activities to help cadets overcome the fear and teach them self-reliance & teamwork by coming out of their comfort zone. Our cadets attended trekking camp in Dehradun from 21st october to 28th october.

Cadets learning the do's and dont's of Trekking

Air Marshal Naresh Verma during flag hoisting ceremony

Cadets during weapon training in the camp

NCC Cadets with Capt. Parminder Sehgal and
Vice Chancellor Prof. Y K Tyagi after flag hoisting

Army Attachment Camp (ATC)

Our cadets participated in this camp which was held in Meerut. This camp familiarises cadets with the army lifestyles. They got to know about the various weapons and war tactics used by the Indian army.

Combined Annual Training Camp (CATC)

Our cadets took part in the annual training camp and also participated in various games and cultural activities with full enthusiasm. This camp was organised in Delhi from 1st to 10th of December.

69th Republic day

A flag hoisting ceremony was organised on the occasion of Republic Day on the 25th January. Retd. Air Marshal Naresh Verma was the chief guest of the day. NCC cadets offered guard of honour on the occasion. JUO Kishore Bagdwal was the commander of the guard team.

Guard of Honour at VC office

On the occasion of Republic Day, the guard team of our college offered guard of honour at VC office while Vice Chancellor of Delhi University, Professor Yogesh K Tyagi hoisted the national flag. It was a proud moment for the RLA NCC team. SUO Adarsh Kumar Singh was the commander of the guard team on the occasion.

SUO Adarsh Kumar Singh

Chitra Report

Chitra – The Photography Society of Ram Lal Anand College welcomed this session (2017-2018) with the enrolment of new participants, exhibiting passion of photography and talent of the art form. The society organised an on the spot photography competition through which new members were shortlisted. The team strengthened from six members to 21 members now, irrespective of equipment they hold or work on.The year started with a mesmerising lecture on the nuances of photography, delivered by Dr Rajesh Sachdeva, to educate and improvise the knowledge students have. Apart from this, various assignments and tasks were given to the members by the senior members of the society to enhance exploration of the art with a new vision. Monthly assignments (red, fashion, leading lines, subframe, lights, etc.) were successfully completed and showcased in the college which was appreciated by students, teachers, and the Principal alike.

The Photography Society members covered and made memorable, every single event that the College organised. Photo-walk is the groundwork for every photographer, and thus a monthly photo-walk was arranged, at times with a fixed theme but mostly leaving it as free exploration of the photographers creativity. We went to places like Chandni Chowk, Yamuna Ghat, Shahpur Jat etc. From these photo-walks emanated the idea of a photography competition wherein a story can be narrated via a few clicks. We thereafter organised an inter-college event titled "A Tale Of A Lens" with great success, wherein the participants were storytellers but the language was photography. We also organised weekly photo competition with photo features on our Facebook and Instagram pages.

The Society marked its reach among people when an on the spot photography competition based on technical themes was organised during the annual fest, Nexplora 2018. Apart from the University students from across the colleges, participants with no affiliation and enrolment were enthusiastic enough to exhibit their talent. This has been a satiating year in terms of both creativity and team-work, as the Society metamorphosed and grew to new heights.

Shalu Shukla
Member, Chitra – Photography Society

Students' Union Report

On 12th September 2017, election for the Ram Lal Anand College Student Union was organized. Students participated with great enthusiasm and vigour. Finally the new Students' Union was elected for the session 2017-18. Following are the names of the students who were elected:

1. President- Shivam Rana
2. Vice President- Rishika Ahuja
3. Secretary- Dhananjay Yadav
4. Joint Secretary- Vikalp Chaudhary
5. Central Councillor 1- Inbessat Husain
6. Central Councillor 2- Rishabh Jain

On 28th September 2017, just 15 days after the union was formed, Freshers' Party was organised, which not only saw participation from all the cultural societies of college but also a star performance by the famous Punjabi singer AmanKalra.

On 6th and 7th November, history was created in the Ram Lal Anand College as the first ever internship fair was organised by student union in collaboration with pathway-the placement society of Ram Lal Anand College. More than 800 students participated, in total 18 companies were invited and around 250 students secured internship. This was a new experience for every student as for the very first time they got a chance and learnt how to face interview, improve CV better, gainself confidence.

The annual cultural fest of Ram Lal Anand College 'Nexplora 2k18' was successfully organised on 16th and 17th February 2018. The fest of this year was important because for the very first time our college was selected by Ministry of Youth Affairs and Sports for a student exchange program. Students from Sikkim came to our college and not only they enjoyed the various events such as dance, music and theatre performances but also at the same time participated and the students were introduced to the vibrant culture of North East. IPS officer Renuka Bhardwaj was invited as the chief guest when delegation of Sikkim students arrived.

Apart from this spectacular achievement the fest was marked by events from every cultural society of the college. Theatre performances, solo singing, group dance, battle of bands, dumb charades, 3 D art were among the various events organised by around 10 cultural societies of the college. To motivate students for participation cash prizes were widely distributed. On the first day of fest i.e. 16th February, Sufi night was organised in which the famous Qutubi Brothers were invited. This Sufi night saw a gathering of students from almost every college of DU. The star night of the fest was marked by an energetic performance of 'The Landers'. It was an amazing end where not only everyone enjoyed but also at the same time people had beautiful experiences to share.

More than 400 Students Participated at Ram Lal Anand College's First Ever Int...

The event was made possible by each and every student of college. Students' Union Advisory Committee, Students' Union, various cultural societies all worked day and night to make this event a successful one. Indeed, it was because of the continuous effort of every student that 'Nexplora 2k18' became a memorable event for everyone.

Students' Union

STUDENT UNIO

NAND COLLEGE
IT UNION

Roland

Parda – The Film Society

Parda commenced its events for the session 2017-18 under President Shivam Verma, General Secretary Nitin Vashishtha and Financial Secretary Aditi along with the members Swati and Rishabh Jain. The year kick started with a rigorous selection process for the office bearers and members. It witnessed a cheering and propitious response from the students. Parda, today, stands dashing and confident with Tripurari Kashyap (Vice President),Vipin, Saurabh, Divya and Gautam.

Team Parda organised some great movie watching events through the year. We screened the feature film JAANE BHI DO YAARO (Directed by Kundan Shah) on August 18,2017. The students actively participated in the post-screening discussion over the dark-satire comedy.

The screening of KHUDA KAY LIYE (Directed by Shoaib Mansoor) was organized in the month of September, 2017. The Film Society screened the Pakistani movie to discuss how misinterpretation of religion may mislead youth towards terrorism. We witnessed viewers from different colleges and had an interesting discussion on the pertinent question 'Does Islam spread Terrorism?'.

A short film-making competition was organised for the college students in the month of October, 2017, in which we received some excellent expressions on different social issues. The winners were decided on creativity level and expression value, the best three presentations adjudged were 'TRUST' (by Rijjwal Pandey B.Sc. (Hons.) Microbiology), 'COLLEGE' (by Kaushik Prasad B.A. (Program) and Atrijit Das B.Sc.(Hons.) (Statistics) and 'SHAHEEDON' (by Shalu, Sachin and Avijit; BJMC).

Parda in collaboration with the North-East Society, RLAC organized screening of a National Award winning North-East regional film, YAWRNG (Directed by Joseph Pulinthanath) on 8th November, 2017. Students from different cultures got the opportunity to explore about the North-Eastern culture through this collaboration.

The Film Society screened a web-series MAN'S WORLD (Directed by Vikram Gupta) on January 29th, 2018 in the college amphitheatre. The series exhibited various social problems vis-a-vis gender like marital rape, sexual harassment at workplace, gender equality, etc. The students actively participated in the discussion that followed the screening and shared their ideas and experiences with each other. The winners of the Short Film-making Competition (announced in October, 2017) were awarded with the certificates and prizes on the same day.

The Film Society enjoyed the momentous year and organised these many events which was not possible without the valuable support of our teachers. Dr. Pragya Deshmukh, the Convenor of the society; Dr. Shachi Meena, the Co-convenor were

always ready with their most useful suggestions and immense help to the society. The other members include Dr. Kshama Sharma, Dr. Parul Lau Gaur, Mr. Arun Kumar, Dr. R. Bagri and Dr. Kuldeep Chauhan.

Shivam Verma
President (Parda) B.A.(Hons.) English

Report of Website Committee

The website of the college has been completely revamped by the website committee. It now has all the information about the college, its various societies, faculty members, feedback forms etc. the URL address for website is http://rlacollege.edu.in. It has a dedicated link for students with information on rules, regulation, attendance, syllabi etc. The students and parents can also write their concerns in Grievance Redressal form available on the website.

Dr Prerna Diwan
(Convener, Website Committee)

Sangosthi: A forum for Seminars Report 2017-18

This year Sangosthi society started a monthly lecture series by Eminent Personalities on the recommendation of the Governing Body and Principal for students and Faculty members of all disciplines. These talks were followed by interactive sessions in which students participated enthusiastically.

First talk under this monthly lecture series-entitled "GM crops and controversies around them" was given by Prof. Deepak Pental (Department of Genetics, University of Delhi & ex-Vice Chancellor of Delhi University) on 23 August, 2017. The talk was well attended with around 90 students of the Department of Microbiology and many students from other colleges.Prof. Pental described Green Revolution and need to increase the crop productivity to keep up with the burgeoning population. He clearly explained why improvement in yield cannot be achieved by traditional breeding programs with the constraints of natural resources and how GM crops can help to bridge the gap between demand and supply. He discussed about patents and IPR. He also described the difficulties, trials and tabulations, opposition and ridicule he faced in professional circles while pursuing research. In addition, he allayed many baseless fears associated with the consumption of GMOs.He emphasised the need for R&D for increasing crop productivity and encouraged students to take up this challenge.

The second talk of this series entitled "Intellectual property rights protecting plants for food security" by Prof. R. C. Aggarwal (Registrar General, Protection of Plant Variety and Farmer's Rights Authority, Ministry of Agriculture, Govt. of India) was organized on 18th September, 2017. Prof. R. C. Aggrawal talked about the importance of Intellectual property rights, the support provided by the Government to the small farmers from the tribal and rural areas. He emphasized the need for preserving the traditional and local varieties as the natural heritage which might offer the solutions crop improvement and food security. He also shared that his department recognizes the work of tribal farmers in preserving biodiversity by giving them awards and promoting community seed bank in the local regions. Further, highlighting the technical and financial support provided to the farmers for registration of their crop varieties.. He also highlighted the recent patent disputes on ginger and turmeric.

The third talk entitled "Constitutional Vision of Justice In India" in this series was by Prof Bhushan Tilak Kaul, Chairperson, Delhi Judicial Academywas held on 31st October 2018. Prof Kaul discussed about the constitutional framework in India, Rights of Citizens and Fundamental Duties. He also discussed different types of cases to enlighten students about the judgements given in the past. It was a very informative, meaningful and interesting talk for all the students and faculty members.

Dr. Sanjay Sharma
Convener: Sangosthi

मैं पक्षी गगन का
(एकाकी यात्रा) साथी कौन बने

यहाँ शून्य का साक्षी कौन बने,
मेरा सहपाठी कौन बने
कोई चल तो सके–दो पग ही साथ
ऐसा बैरागी कौन बने।
यहाँ मेरा साथी–कौन बने।
ये अन्वेषक इस मार्ग का
यहाँ मेरा गाइड कौन बने।
इस यात्रा में पग चिह्न कहाँ
मेरा हम साथी कौन बने।
ये अन्तरिक्ष की है उड़ान
इस गगन का पंछी कौन बने।
इस शून्य का साक्षी कौन बने
इसमें सहपाठी कौन बने
यहाँ तन और धन का कार्य नहीं
यहाँ बुद्धि मन का विषय नहीं
करना ऐसा कुछ कार्य नहीं
बल कोई यहाँ स्वीकार नहीं
घर का कुछ ध्यान नहीं
यहाँ विद्या का कोई मान नहीं
अविद्या को भी स्थान नहीं
यहाँ तान को कोई मान नहीं
अज्ञान को भी स्थान नहीं
है पथ शून्य राही भी शून्य
यहाँ शून्य का साक्षी कौन बने
ऐसा पागलपन कौन करे
ऐसा बैरागी कौन बने
मेरा सहपाठी कौन बने
मेरा सहपाठी कौन बने

के. एम. अम्बिका, माइक्रोबायोलाजी
प्रथम वर्ष

महिलाओं को कहाँ मिल रहा सम्मान?

महिलाओं को कहाँ मिल रहा सम्मान
कहाँ विकसित हो रहे इनके अरमान
क्यों समाज नहीं देता इनको सम्मान
लेखक लेखिका लिख–लिख कर
समाज को कर रहे जागरूक...
पर उनके प्रति समाज की सोच
कहाँ हो रही साकार...
तुम ही तो कहते हो महिला
देवी का रूप है माँ का रूप है
फिर क्यूँ करने में लगे हो
उनकी इज्जत का बलिदान
देश भी हुआ आजाद
मिली आजादी हम सबको
फिर महिला पुरुष में
क्यों हो रहा भेदभाव
फिर तुम हंसते हुए कह देते हो
देश हमारा पुरुष प्रधान..
आखिर क्यों हो रही महिलाओं
पर पुरुषों की कमान...
फिर तुम कहते हो देश
कहाँ हो रहा विकसित
पहले दो तो अवसर आगे बढ़ने का
फिर वह दिखाती हैं अपनी काबिलियत
उनको भी एक दरजा दो
तभी मिले उनको आजादी
ना हो भेदभाव ना हो कोई ऊँच नीच
दोनों होंगे सशक्त कर्मठ
तभी होगा देश का विकास
जी हाँ तभी मिलेगा महिलाओं को सम्मान
तभी होंगे पूरे उनके अरमान...।

अनुज यादव
बी.जे.एम.सी, द्वितीय वर्ष

किन्नर

बस में तो कभी रेलगाड़ी में या जब रेड लाईट पर रुकती हुई कारों के जमावड़े में तालियों का शोर आता है। भगवान के नाम पर दो, हाय–हाय सलमान खान जैसे जुमले हमें सुनाई देते हैं और तभी हमारे सामने प्रस्तुत होते हैं– किन्नर....

'किन्नर' शब्द सुनते ही हमारे दिमाग में एक ऐसे मानव का रेखाचित्र प्रस्तुत होता है जिसके दाढ़ी आई हो पर शरीर की बनावट न पूरा पुरुष न सम्पूर्ण औरत। बॉयोलॉजिकल अव्यवस्था के कारण बच्चा ऐसा बनता है, इसमें उसका कोई दोष हमें नज़र नहीं आता परन्तु उम्र बढ़ने के साथ–साथ उसका अपने आप से कट जाना यह हमारे समाज का दोष है। एक किन्नर की जिंदगी कैसी होती है यह बात समाज के अधिकांश वर्गों को नहीं पता उनकी नज़र में वे सिर्फ नाचने–गाने वाले उभयलिंगी प्राणी है। समाज में अपना आत्मसम्मान खोजते हैं किन्नर।

किन्नर शब्द तो फिर भी सम्मानित है परन्तु समाज तो इनको अलग ही नाम से जानता है–'हिजड़ा'। हमारा समाज 'हिजड़ा' कहकर उन्हें सम्बोधित करता है। हिजड़ा कोई अभिशाप नहीं बल्कि समाज का एक अभिन्न अंग है। किन्नरों की स्थिति पहले बहुत दयनीय थी परन्तु किन्नर समाज इकट्ठा हुए और अपने हक की लड़ाई लड़ी और अंत में वे सफल रहे। उन्हें एक अलग लिंग का दर्जा प्राप्त हुआ।

यह हमारे समाज की कुण्ठित सोच को दर्शाता है कि किन्नर जाति को अपना अधिकार इतने लम्बे संघर्ष के बाद प्राप्त हुआ। क्या उन्हें समाज में आगे बढ़ने का अधिकार नहीं? क्या वो सिर्फ रेड़लाइट या बसों–ट्रेनों में नाचने–गाने या तालियाँ–पीटने आए हैं? ये प्रश्न आज भी वैसे ही है जैसे पहले थे बस इनका स्वरूप बदल गया। आज भी किन्नर अपने अस्तित्व के लिए लड़ रहे हैं और हमारा समाज यानि महात्मा गाँधी जी के तीन बन्दर की तरह है जो समय के साथ अपना मूल संदर्भ खो चुके हैं वे ना सच सुनते हैं, ना देखते हैं और न ही बोलते हैं। परन्तु अब बहुत हुआ अपमान अब समाज को किन्नर को स्थान देना होगा। वह भी इस देश के नागरिक हैं उन्हें भी सब अधिकार देने चाहिए। ये नहीं कि उनका सम्मान छिनना चाहिए–

किन्नर हूँ साहब, किन्नर
ये बताने में कोई शर्म नहीं
है हक समाज में रहने का
यह कोई भ्रम नहीं।
सोच आपकी खराब, नाम हमारा बदनाम
यह कोई न्याय नहीं
हक है हमारा जीने और उड़ने का
यह अधिकार है भीख नहीं।
किन्नर हूँ साहब, किन्नर
ये बताने में कोई शर्म नहीं।

रविन्द्र कुमार
बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी, तृतीय वर्ष

चट्टान सा इतिहास....

बोल रे दिल्ली बोल तू क्या कहती....?
यमुना तेरी सूख गई किले तेरे सब ढ़ह रहे
तुझको घाव देकर तेरे दिल में रह रहे
रोज तेरा दम घुटता है, धुआँ है शाख तेरी
लुटती है तू सरे बाजार, बंद है क्यों आँख तेरी
अनवरत विरासत तेरी, नदी नालों में बहती
बोल दिल्ली तू क्या कहती.....?
माँ भारती का हृदय है तू, चट्टान से इतिहास तेरा
रावण तो मरता नहीं, कब खत्म होगा वनवास तेरा
लोग शहंशाह बन जाते हैं, गोदी में आकर
फिर दासी बन जाती है तू, जख्म कलेजे पर खाकर
आखिर कौन–सा मोह है तुझको, क्यों वेदना सहती
बोल रे दिल्ली बोल तू क्या कहती?

अभिषेक कुमार
बीजेएमसी, द्वितीय वर्ष

क्यों ये दीवारें

क्यों ये दीवारें रोकती हैं आगे बढ़ने से।
कभी परिवार के रूप में, कभी समाज के रूप में।
क्यों ये दीवारें सिर्फ बेटी के लिए हैं होती।
क्यों बेटों के लिए नहीं होतीं।

पाबंदियाँ सिर्फ बेटी को न पढ़ाने के
लिए क्यों है, बेटों के लिए क्यों नहीं।
दीवारें सिर्फ बेटी के लिए हैं
बेटों के लिए क्यों नहीं।

क्यों ये रोकती हैं दीवारें कुछ करने से।
क्यों ये दीवारें बनाई जाती हैं लड़कियों के लिए।
कुछ क्यों नहीं होती हैं पाबंदियाँ लड़कों के लिए।
दीवारें सिर्फ बेटी के लिए हैं
बेटों के लिए क्यों नहीं।

क्यों लड़कियों को पढ़ने नहीं देते,
क्यों उसे आगे बढ़ने नहीं देते,
क्यों ये दीवारें पाबंदियाँ बन जाती हैं,
लड़कियों के लिए क्यों नहीं लड़कों के लिए,
दीवारें सिर्फ बेटी के लिए हैं
बेटों के लिए क्यों नहीं।

क्यों ये पाबन्दियाँ रोकती हैं औरतों को,
अपने लक्ष्य को पाने को।
क्यों औरतों को सामना करना पड़ता है,
तीन तलाक जैसी कुप्रथा का।
तीन तलाक कहने का हक है आदमी को
औरतों को क्यों नहीं।
दीवारें सिर्फ औरत के लिए हैं
आदमी के लिए क्यों नहीं।

दीवारों को क्यों नहीं हो हटाते।
लड़कियों को आगे पहुँचाने के लिए।
ये दीवारें क्यों नहीं तोड़ते।
क्यों ये दीवारें लड़कियों के लिए हैं
लड़कों कि लिए क्यों नहीं।

क्यों नहीं औरतें इन दीवारों को हैं,
तोड़तीं आगे क्यों नहीं बढ़तीं,
क्यों रहती हैं सबसे दबके क्यों
नहीं कुछ हैं बोलतीं।
दीवारें सिर्फ औरतों के लिए हैं।
आदमियों के लिए क्यों नहीं।

क्यों मैं डर जाती हूँ आसपास की दीवारों से।
क्यों नहीं मैं सामना कर पाती हूँ इन
दीवारों का क्योंकि मैं लड़की हूँ।
क्यों ये दीवारें लड़की के लिए होती हैं
क्यों नहीं ये लड़कों के लिए हैं होतीं।

इन पाबंदियों का सामना करना पड़ेगा
इन दीवारों को तोड़ना पड़ेगा।
आगे तो बढ़ना पड़ेगा।
दीवारों को हटाना पड़ेगा लड़कियों के लिए
तभी तो वो खिल पाएंगी, आज वो
आगे बढ़ पाएंगी।
क्यों दीवारें सिर्फ लड़कियों के लिए
क्यों नहीं लड़कों के लिए

गुड़िया कुमारी
बी.ए. (ऑनर्स) राजनीति विज्ञान
द्वितीय वर्ष

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ एक सपना

हमारे देश में जब भी बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ की बात आती है तो हमारे अंदर उस तरह का जोश क्यों नहीं आता, जिस तरह का जोश देश भक्ति गीत सुनकर आता है। कहने को तो नारी शक्ति को बल देने की बात करते हैं परन्तु क्या हम सच में नारी को अपने समान होने का दर्जा देते हैं? वर्तमान की स्थिति पर यदि गौर किया जाए तो 21वीं सदी में जब किसी के घर बेटी जन्म लेती है तो हमारा मुँह उतर जाता है।

जब हम बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं पर बात करते हैं तो हमे सबसे पहले इसकी ज़मीनी हकीकत जान लेनी चाहिए भारत देश में आज भी लगभग 70 प्रतिशत लड़कियों को अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ जाती है इसका मुख्य कारण उनकी जल्दी शादी कर देना भी है। वे (लड़की) चाहकर भी इच्छानुसार पढ़ाई ग्रहण नहीं कर सकती।

हमारी सरकार समय–समय पर 'बेटी बचाओ बेटी बढ़ाओ' पर जागरूकता अभियान चलाती रहती है, जिससे लड़कियों की शिक्षा में सुधार भी हुए हैं परन्तु सुधार उस हिसाब से नहीं हुए जिस तरह होने चाहिए थे। इसकी वजह हम जागरूकता अभियान में ढ़िलाई कह सकते हैं।

प्राथमिक विद्यालयों के हालात देखें जाएँ, जहाँ से शिक्षा की नींव पड़ती है, प्राथमिक विद्यालयों के प्रति सरकार का शिक्षा के अलावा हर क्षेत्र में विकास करने पर अधिक ज़ोर रहता है। 2007 से शुरू हुई 'मिडडे मील' व्यवस्था काफी सराहनीय है लेकिन सिर्फ उसी पर ध्यान केन्द्रित करना विद्यार्थियों की शिक्षा के साथ सरासर खिलवाड़ करना है। उत्तर प्रदेश के प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य से बात करने पर वहाँ की स्थिति देखकर दंग रह गया। प्रधानाचार्य का कहना था कि सुबह उठते ही सबसे पहले उसे खाने–पीने (मिडडे मील) की चिंता सताती है कि कैसे व्यवस्थित ढंग से बच्चों को खाना खिला दिया जाए। अब सोचने वाली बात यह है कि जब अध्यापक का ध्यान ही इन सभी चीजों में बटा रहेगा तो वह विद्यार्थी पर कैसे ध्यान केन्द्रित कर पाएगा? विद्यार्थी को उचित शिक्षा देना अध्यापक का कर्त्तव्य होता है। अब जब अध्यापक ही कुछ नही कर पाएगा तो 'बेटी बचाओ बेटी बढ़ाओ' योजना कैसे सफल होगी।

इस संदर्भ में हमें दूसरे पहलू पर भी बात करनी चाहिए। बेटी की शिक्षा के बीच सबसे बड़ा रोड़ा बनता है हमारी रूढ़िवादी संस्कृति अर्थात् लकीर का फकीर। जैसे– लड़कियों को घर के बाहर नहीं जाना चाहिए, उन्हें घर का कामकाज करना चाहिए और यदि किस्मत से कोई लड़की पढ़ भी जाती है तो घर वाले उसे नौकरी नहीं करने देते। सरकार द्वारा बनाई गई योजना 'बेटी बचाओ बेटी बढ़ाओ' के लिए जितना प्रयत्न सरकार कर रही है उतना ही प्रयत्न करना हमारा भी कर्त्तव्य बनता है कि इस देशहित योजना को सफल रूप दें, जिससे हमारे देश में स्त्री–पुरुष का भेद भी समाप्त हो और दोनों को समानता मिले।

अर्शियान आरिफ खान
हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार
तृतीय वर्ष

चलो कुछ ऐसा करें कि....

आज जब लिख रही हूँ तो एक अजीब–सा डर कहो या अहसास हो रहा है। ऐसा अहसास जैसे सच को बयाँ करने में होता है। ये तो नहीं पता कि लिखते कैसे हैं पर ये पता है कि लिखना क्या है' तो चलो कुछ पुराना नहीं कुछ नया भी नहीं कहूँगी, कहती हूँ कि ताजा लिखें.... शुरुआत ही कुछ इस तरह से होगी जैसे एक अंधेरे कमरे में एक रोशनी का दीपक उस अंधेरे का प्रतिकार कर रहा होता है... ठीक उसी तरह मेरी भागती दौड़ती जिंदगी में भी एक ठहराव शाम की आहट से आ ही जाता है और रात के बाद सुबह जो मानो एक नई उम्मीद के साथ दस्तक दे रही है। ऐसी ही मेरी आज की भी सुबह हुई, मैं उठी अपनी ही उलझनों के साथ खुद को साझा करते हुए उसमें खुद को सुलझाते–कुछ उलझते अल्फाजों के साथ सोच–विचार मानो, घड़ी की सुईयों के साथ चल रही थी, इतने में माँ की आवाज आई और मैं अपने विचारों की दुनिया से साझा कर बाहर आ गई और जाने–अनजाने में जानती ही थी कि आवाज भी कॉलेज जाने के लिए ही आई होगी और जल्दी से तैयार होकर अपनी जिंदगी की दौड़ में आगे निकलने की तमाम ख्वाहिशों के साथ घर से चल पड़ी।

एक ठहराव जो मेरी खुद की जिंदगी में खुद के लिए आता है वह है, मेरे घर से लेकर बस स्टैंड के बीच का सफर जिसमें मानो अपनी खुशी का कुछ भी काम कर चाहे वो खेलते बच्चों को देख अपने बचपन की यादों से सराबोर हो जाना ही क्यों न हो कुछ भी जो जिंदगी के ठहराव का अहसास करा सके ऐसा अहसास जो कहता हो जिंदगी चाहती हो उतना ही मुझे जितना कि मैं उसे... ऐसे करता मेरा ये सुर बदलता है जब आज मैं बस स्टैंड पहुँची ही थी कि पाँच मिनट के बाद मेरी बस आई मन में एक अजीब सी खुशी थी इन सब उलझनों में भी कि चलो पहला पड़ाव तो हुआ...

बस मेरे नज़दीक, मैं पहले पड़ाव के नजदीक इनके साथ ही शुरू हुआ मेरा ये बस का सफर 'हाँ' मैं कभी भी ये सोचकर बस का सफर तय ही नहीं करती कि जाने किस हालात में पड़ेगा पर इतना जानती थी कि संघर्ष ही जिंदगी है जो माँ ने कहा था वैसे माँ कहती है रोना भी मजबूती की निशानी है।

बस में बैठी तो सोचा कि समय का सदुपयोग करुँ बस ये ख्याल आते ही एक ढक्कन खुला मेरे बांवरे से मन की क्यों ना कहानी सुनूँ या पढ़ूँ जो कि मेरे शौकिया कामों का सर्वप्रथम कार्य था। बस फिर क्यों मैं दूसरो की कहानियों मैं खोकर अपनी यादों का आनन्द लेती थी पर आज कुछ अजीब ही हुआ। क्या हुआ कि, मैं अपनी कहानी की दुनिया में जाती उससे पहले की कहानियों की लंबी सूची में मेरी नजर ऐसी एक कहानी पर गई जिसका नाम था ''पेपर बोट'' पता नहीं क्यूँ मेरा ध्यान बारिश और बचपन की यादों के चलते उस कहानी को पढ़ने का हुआ। ''वैसे एक बात और आज मुझे बस में सीट भी मिल गई थी तो शायद मेरी कहानी सुनने कि ये सोच को रीढ़ हड्डी दे रही थी।''

मेरी कहानी और मेरे बस का सफर शुरू हुआ तो इस मामले में भी सफर का पता नहीं चला। कहानी का शौक जो ऐसा था और आज की कहानी भी ऐसी जो आकर्षण थी मेरी नज़रों मेरे मन का.... तो कहानी थी पेपर बोट सुनना शुरू ही हुआ कि कहानी में एक ऐसा इंसान जो मानो सब में होता है जो जिदंगी की दौड़ में तो जीत जाता है पर अपनों के साथ कहीं पिछड जाता है बस कहानी में खो जाना मेरी ख्वाहिशों की चाह होती थी। मैं सुनते–सुनते अपने बचपन के दिनों में खो गई उन नादानियों में जो हम करते कभी डांट खाने का डर तक महसूस नहीं करते थे। उन तमाम दोस्तों की यारियाँ याद आ गईं जो किसी भी क्षेत्र में मदद करने या कुछ भी कह देने पर ये कहते कि तू ना, काउंसलर ही बनना अच्छी सलाह देती हैं। मार्गदर्शन और एक लक्ष्य देने का काम करती थी बस सब कहानी जैसे ही थी। मैं कहानी और जिंदगी को अपने आप में सराबोर करते–करते ये ही भूल गई कि मैं बस में भी जो कि कुछ लोगों को उनकी मंजिल तक और मुझे मेरे सफर तक पहुँचाती थी। आज मैं अपनी कहानी में यूँ डूबी की तैरते–तैरते अपनी बचपन की यादों में पहुँच गई और इस तरह खोई कि सफर सुहाना लगने लगा और पता नहीं कब मुझे अपने को डुबने से बचाने के लिए यानि मजबूत बनने के लिए उस कहानी के शीर्षक 'पेपर बोट' का सहारा लेना पड़ा। मेरी आँखों से आँसू ये तो खुशी को जाहिर करते, पर आँसू में कशमकश कुछ इस तरह थी कि मानो जिंदगी के दो पल का होने का अहसास सा हो गया हो। कुछ इस तरह मैं आज सफर के दौरान–मैं रो पड़ी।

साक्षी जायसवाल
बी.ए. (ऑनर्स) राजनीति विज्ञान,
द्वितीय वर्ष

पर्यावरण सामूहिक और व्यक्तिगत जिम्मेदारी

अभी हाल में रामचन्द्र गुहा द्वारा एक बहुत ही मनोवैज्ञानिक और विशिष्ट किताब 'उपभोग की लक्ष्मण रेखा' पर्यावरण के संदर्भ में प्रस्तुत हुई है जिसमें बड़े ही सहज, सरल और स्पष्ट शब्दों में यह बताने की कोशिश की गई है कि किस प्रकार पर्यावरण सामूहिक और व्यक्तिगत जिम्मेदारी है। हम अपनी कहानी को दो समूहों में बाँटने की कोशिश करते हैं एक तरफ विकसित देश और दूसरी तरफ विकासशील देश। मानव जब पर्यावरण पर हावी होने लगता है तो पर्यावरण का विनाश होना ही होता है। विकसित देशों में पर्यावरण आंदोलन उस समय चलाये गए जब इसका प्रभाव उन पर सामूहिक रूप से होने लगा अन्यथा इससे पहले उन्हें इसका होश ही नहीं था तब जाकर उन्होंने अपने स्वास्थ्य को बचाने के लिए जागरूकता और आंदोलन चलाये। अगर वो शुरुआत से ही व्यक्तिगत जिम्मेदारी पर ध्यान देते तो इस तरीके से सामूहिक जिम्मेदारी की नौबत नहीं आती। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि सामूहिक जिम्मेदारी की जरूरत ही नहीं है बल्कि सामूहिक जिम्मेदारी चाहिए लेकिन यदि प्रत्येक व्यक्ति व्यक्तिगत जिम्मेदारी निभाना शुरू कर दे तो सामूहिक जिम्मेदारी की जरूरत ही न आए। ये वहाँ के लोगों ने नहीं किया। अब हम अपनी बात विकासशील देशों की तरफ मोड़ते हैं–विकासशील देशों में एक चीज स्पष्ट नजर आती है कि यहाँ के लोग पले बढ़े ही हैं पर्यावरण के साथ, उनका पर्यावरण से ही जीवन निर्वहन होता है। अगर हम प्राचीन समय में देखें तो बुद्ध ने अपना सारा जीवन ही एक वृक्ष के नीचे निकाल दिया। अगर हम किसी भी पहाड़ी पर जाते हैं तो हमें एक मन्दिर साथ में एक वृक्ष जरूर मिलेगा और वह मन्दिर वहाँ के स्थानीय देवता होते हैं। हमारे यहाँ पहले लोग नदियों के आस–पास निवास किया करते थे। मतलब यह कि उनका पर्यावरण से कितना लगाव था और तो और वो अपनी जिम्मेदारी को व्यक्तिगत जिम्मेदारी के साथ सामूहिक जिम्मेदारी भी समझते थे। नदी, पर्वत, पहाड़ों को स्वच्छ रखा करते थे क्योंकि उनका जीवन ही उनमें पला बढ़ा हैं फिर कौन भला उसे उजाड़े। और तब जाकर 1973 में चिपको आंदोलन चला और पर्यावरण बचाने की शुरुआत हुई। यहाँ पर्यावरण आंदोलन किसी स्वास्थ्य से संबंधित नहीं या कि इससे उनके स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ रहा था बल्कि यहाँ तो उनके जीवन का सवाल था। जो पूरी तरह से उजड़ने की कगार पर था। पर आज की स्थिति बहुत ही गंभीर है। सामूहिक जिम्मेदारी की बात ही छोडिए लोगों को व्यक्तिगत जिम्मेदारी की भी फिक्र नहीं जबकि संविधान में स्पष्ट रूप से पर्यावरण को सुरक्षित रखने की बात कहीं गई है। और तो और लोग पर्वत, पहाड़ों पर घूमते समय कचरा फेंक दिया करते हैं, अमेरिका जैसे देश को खुद को बचाने के लिए पर्यावरण के व्यक्तिगत और सामूहिक जिम्मेदारी की फिक्र ही नहीं है।

बल्कि ये हमारा कर्त्तव्य बनता है कि हम अपनी आस–पास की चीजों को सुरक्षित रखें और हमें अपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए। माननीय प्रधानमंत्री द्वारा चलाया जा रहा ''स्वच्छता ही सेवा'' व्यक्तिगत जिम्मेदारी का उदाहरण है। ''स्वच्छ भारत मिशन'' यह हमारा सामूहिक मिशन होना चाहिए। हम जब अपने घर के आसपास स्वच्छता का पालन करते हैं तो हम बाहर जाकर इतने क्रूर कैसे हो जाते हैं कि कहीं भी पीक (गुटके की) फेंक देते हैं। सार्वजनिक चीजों को गंदा करना इत्यादि। इसलिए पर्यावरण को हमें व्यक्तिगत जिम्मेदारी से देखना पड़ेगा तभी जाकर हम और हमारा देश स्वच्छ रह सकेगा।

अंशुल पटेल

बी.ए. (ऑनर्स) राजनीति विज्ञान, द्वितीय वर्ष

सुन्दर वरदान

ईश्वर की बनाई ये अति सुन्दर दुनियाँ जिसमें अनगिनत प्राणी शामिल हैं। इन सभी में एक सबसे श्रेष्ठ रचना है वो है 'बेटी'। ईश्वर का दिया सबसे सुन्दर वरदान अर्थात ईश्वर की सबसे अच्छी रचना। हमारे समाज का सबसे महत्वपूर्ण अंग है 'बेटियाँ'। इस युग में बेटियों का बोलबाला है। बेटियाँ किसी भी मामले में बेटों से कम नहीं हैं। जरूरत है तो सिर्फ उन्हें सही और अच्छे अवसरों की ताकि वे अपनी क्षमताओं और आशाओं को अपनी इच्छा अनुसार पूर्ण कर सके। बेटियों को आवश्यकता है अपने परिवार, दोस्त और समाज के साथ की। इसके साथ–साथ सबसे अधिक महत्वपूर्ण वस्तु जिसकी जरूरत है बेटियों को विकास की ओर अग्रसर करने के लिए वो है ''शिक्षा''।

समाज में बहुत पहले से ही बेटियों को सही दर्जा नहीं दिया जा रहा है जिसकी वो हकदार हैं। समाज के अधिकतर लोग बेटियों को बोझ मानते हैं। जब बेटा पैदा होता है तो पड़ोसियों और रिश्तेदारों को मिठाईयाँ बाँटी जाती हैं। खुशियाँ मनाई जाती हैं। परंतु जब बेटी पैदा होती है तो अफसोस जताया जाता है। क्योंकि उस समय बेटी के माता–पिता की सोच ये होती है कि बेटी का मतलब है खर्च। बेटी जिसे पराया धन माना जाता है जो धन लाती नहीं धन खर्च करवाती है। बेटियाँ अगर जन्म लेती है तो वंश का विकास कैसे होगा क्योंकि वंश को आगे बढ़ाने वाले तो बेटों को माना जाता है। लोग केवल ये सोचते हैं कि बेटियाँ शान नहीं बन सकती वे तो केवल रसोईघर में रोटियाँ सेकने के लिए होती हैं। उन्हें पढ़ने–लिखने की क्या आवश्यकता है। इस प्रकार की रूढ़िवादी सोच के लोग एक समय इतने क्रूर बन जाते हैं कि वो बेटियों को जन्म लेने के साथ ही साथ मार देते हैं और कुछ इतने क्रूर होते हैं कि वो नन्हीं सी जान को इस दुनिया में जन्म ही नहीं लेने देते। ऐसा वो लोग करते हैं जो मानसिक रूप से पीड़ित होते हैं जिनका ये मानना होता है कि बेटियाँ तो कुल का नाम खत्म करेंगी, कुल का विकास बेटे ही करेंगे। एक शिक्षित लड़की बदलाव ला सकती है।

ऐसी विचारधाराओं के बीच एक ऐसा हथियार है जो ऐसी क्रूर विचारधाराओं को खत्म कर रही है वो है ''शिक्षा''। शिक्षा के कारण हमारा समाज रूढ़िवादी सोच से निकल कर आधुनिकता की ओर अग्रसर होता जा रहा है। शिक्षा के कारण लोगों में जागरूकता आई है। आज लोग अपनी बहन, बेटियों को स्कूल भेज रहे हैं और अपनी रूढ़िवादी सोच को बदल चुके हैं जोकि सबसे महत्वपूर्ण और अच्छा अवसर है बेटियों के लिए कि वो अपने आप को, अपनी क्षमता और योग्यता को निखार सकें। आज अधिकतर लोग अपनी बहनों, बेटियों को अलग–अलग श्रेणियों की ओर अग्रसर कर रहे हैं उन्हें प्रोत्साहित कर रहे हैं अपने जीवन को अधिक से अधिक बेहतर बनाने के लिए।

बात अगर बेटियों की है तो कुछ ऐसे नाम हैं जिन्हें हम कभी भूल नहीं सकते या कह सकते हैं कि भूल नहीं पाएँगे। जैसे–भारत की होनहार बेटियों में कल्पना चावला जो धरती पर जन्म तो लिया अपनी काबिलियत से चाँद, पृथ्वी से बाहर तक की उड़ान भरी। अपना या अपने परिवार का ही नहीं बल्कि पूरे भारत देश का नाम रोशन किया। और भी अनेक ऐसे नाम हैं जिन्होंने बेटियों को एक नयी पहचान दी हैं बेटियों को एक नयी उम्मीद दी है। देश की पहली महिला प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी, सुनिता विलियम, पूर्व राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल और यहाँ तक की अब हर क्षेत्र में महिलाएँ अपना झण्डा लहरा रहीं हैं–स्कूल, कॉलिज, अस्पताल (चिकित्सालयों में) पुलिस फोर्स, आर्मी इत्यादि। बहुत से लोग अब ऐसे हैं जो ईश्वर से ये दुआ माँगते हैं कि उन्हें 'बेटी' मिले। कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार प्रस्तुत करना चाहुँगी–

''बेटा अगर शान है तो बेटी आन है
बेटा अगर दीपक है तो बेटी ज्योति है।
बेटा अगर कुल है तो बेटी कुल की इज्जत
बेटा अगर वंश है तो बेटी अंग है
बेटा अगर खुशी है तो बेटी दुख में मिलने वाली एक नयी उमंग है।

बेटियाँ चेहरे की मुस्कान हैं जो दुख के पलों को सुख में परिवर्तित करने का हौंसला रखती है। नयी उम्मीद जगाती है। बेटियाँ धूप में मिलने वाली ठण्डी छांव है।

पायल मलिक
बी.ए. (ऑनर्स) राजनीति विज्ञान, प्रथम वर्ष

भारत में लिंग अनुपात

इस आधुनिक युग में भारत ने विश्व में एक अलग पहचान बनाकर अपने आप को वैश्विक धरातल पर प्रस्तुत किया है, चाहे वह अर्थव्यवस्था हो या फिर आतंकवाद जैसे गंभीर मुद्दों पर दुनियाँ का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना हो। ऐसे में इस आधुनिक युग में भारत का लिंगानुपात निरंतर कम होता जा रहा है। ऐसी परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए भारत के वर्तमान प्रधानंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' का आह्वान किया है। प्रधानमंत्री जी का यह संदेश भारतीय इतिहास में एक अच्छी पहल है कि बेटियों को बचाने की मुहिम पहली बार इतने व्यापक स्तर पर कार्य कर रही है। मोदी जी ने फरवरी 2015 में इस संदेश (बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ) को देते हुए कहा कि 'बेटियाँ' देश का गौरव हैं, हमारा अभिमान हैं। लेकिन मैं इस तथ्य से चिंतित हूँ कि आज हमारी यह स्थिति आ गई है, कि हमारे भारत का लिंगानुपात निरंतर कम होता जा रहा है।'' श्री नरेन्द्र मोदी जी के इस कार्यक्रम के बाद पूरे देश में एक मुहिम चल पड़ी है। कहीं नुक्कड़ नाटक तो कहीं दोहों के माध्यम से इस मुहिम ने जोर पकड़ा है। आज वर्ष 2017 में भी यह मुहिम उतनी सफल रही है। ऐसे में यह प्रश्न उठ खड़ा होता है कि आखिरकार यह स्थिति उत्पन्न क्यों हुई?

शायद ही इसका जवाब किसी के पास हो लेकिन इससे संबंधित विषयों पर लोगों ने अपना मत रखते हुए कहा कि–

1. यह स्थिति सम्भवतः ''एक बच्चे की चाह'' के कारण भी उत्पन्न हो सकती है और साथ ही एक बच्चे की चाह में विशेषकर ''लड़का''।
2. कई लोगों का यह भी मत था कि यह स्थिति महिलाओं के गर्भपात से हुई है। वहीं कुछ लोगों ने इसके पीछे रुढ़िवादी धारणाओं को बताया। जैसे कि''लड़की तो पराया धन है'' आदि कई तरह कि रुढ़ि धारणाएँ थीं।

सम्भवतः इसका उत्तर इन्हीं में से हो परन्तु इसको अंतिम तथ्य नहीं समझा जाना चाहिए। इस स्थिति को ध्यान में रखते हुए भारत के विद्वानों ने कई नुस्खे अपनाएँ जिनमें से कुछ का वर्णन निम्नलिखित हैः–

- राज्य सरकार द्वारा घर में बेटी का जन्म होने पर दिया जाने वाला अनुदान। यह प्रत्येक राज्य में अलग–अलग है। उदाहरण में दिल्ली 50,000 रु., मध्य प्रदेश में 10,0000 रु., हरियाणा में 50,000 रु. आदि।
- बेटियों को सुरक्षित रखने में कई संवाद (Dialogoue) आए। जैसे–'म्हारी छोरियाँ छोरों से कम हैं कै', बेटी नहीं बचाओगे तो बहू कहाँ से लाओगे'', आदि।

उपरोक्त लिखे बिन्दुओं ने बेटियों को बचाने में एक अहम भूमिका अदा की। अन्यथा यह आँकड़े इतने भयावह थे कि इनसे उबरते हुए काफी समय लग जाता। यह स्थिति हरियाणा, राजस्थान, पंजाब आदि राज्यों में काफी बुरी थी। परन्तु आज इस मुहिम ''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ'' ने इस आँकड़े को काफी सुधारा है और आज इसके परिणामस्वरूप वैश्विक धरातल पर भारत की इस मुहिम से उसकी एक नई पहचान बनी है।

अमित
बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी, प्रथम वर्ष

मेरी गलती क्या?

आज मुझे अपना परिचय देते हुए कोई शर्मिन्दगी महसूस नहीं होती लेकिन न जाने क्यों लोगों की नज़रें संदेह, घृणा और डर से भरी होती हैं। मैं न ही एक लड़का हूँ न ही एक लड़की, शायद मैं भगवान की एक अलग ही कृति हूँ। न जाने क्यों फिर भी मुझे समाज में वो स्थान, वो ओहदा क्यों नहीं मिला। समाज क्यों हमें एक अलग ही नज़रिए से देखता है? क्यों हमें समाज से काट कर अलग रखा जाता है? हमें लोग अलग ही नजरिए से देखते हैं। आखिर मेरी गलती क्या है कि मैं ''किन्नर हूँ और आदमी या स्त्री, और पुरुष से बढ़कर भी एक पहचान मौजूद है और वो है ''मनुष्यता'' की। आज क्यों हम सिर्फ स्त्री और पुरुष तक ही सीमित हैं? क्या हमारी कोई जिन्दगी नहीं है। क्या हमें जीने का हक नहीं है?

जब किसी घर में कोई नवशिशु आता है, तो उनसे ज्यादा हमें खुशी होती है। हम बधाईयाँ देते हैं, दुआएँ देते हैं, जश्न में शरीक होते हैं लेकिन वो सम्मान हमें नहीं दिया जाता जिसका एक मनुष्य हकदार है। समाज में किन्नरों की स्थिति बहुत दयनीय है। किन्नर अपनी आजीविका स्वयं ही अर्जित करते हैं। किन्नरों की स्थिति पर किसी का ध्यान ही नहीं जाता है।

जब किसी घर में बच्चा पैदा हो तो क्यों उसे मार दिया जाता है, मन्दिर में छोड़ दिया जाता है। क्या उसमें उस मासूम की कोई गलती है? वो बच्चा जिसमें सिर्फ और सिर्फ एक कमी है, क्या उस एक कमी की वजह से उसकी अन्य सभी कुशलताओं को नज़र अंदाज किया जाना चाहिए। कहा जाता है देश विकसित हो रहा है लेकिन देश का विकास करने से पहले अपनी–अपनी मानसिकता और दृष्टिकोण का विकास अत्यधिक महत्वपूर्ण है। मनुष्य ही मनुष्यता का हनन करते हैं और अन्य चीजों में ज्ञान का पाठ पढ़ाते हैं। कभी लोग अपने दृष्टिकोण को स्वस्थ करके देखें फिर देखिए बदलाव और विकास।

किन्नरों की जिंदगी भी कोई जिंदगी है? उनके जीवन में न माँ का प्यार है ना पिता का स्नेह और परिवार के बारे में तो शायद ही कभी सोचें। पर उनकी अपनी एकता को देखें तो ''परिवार'' का प्यार भी बौना साबित होगा। क्यों कोई परिवार एक किन्नर बच्चे को स्वीकार नहीं करता? कहीं न कहीं इसके पीछे उनकी मानसिकता और साथ ही साथ समाज का भय उनको यह करने पर विवश करती है। किन्नरों में भी हृदय है, स्नेह है और भावनाएँ हैं। उन्हें भी अन्य मनुष्यों की तरह ही जीने का पूरा अधिकार है। यदि वे भी सामान्य मनुष्य की तरह ही जीवन व्यतीत करें तो उन्हें कोई भी पहचान नहीं सकता कि वे एक ''किन्नर'' हैं। वे भी भविष्य के अब्दुल कलाम, किरण बेदी, अल्बर्ट आइंस्टाइन बन सकते हैं और एक सामान्य और गरिमामय जीवन व्यतीत कर सकते हैं–

''आखिर मैं भी हूँ उस फरिश्ते की कृति
फिर मुझे क्यों नहीं मिलती इस समाज में स्वीकृति।''

सरिता
बी.ए. (ऑनर्स) राजनीति विज्ञान, प्रथम वर्ष

मेरे आसपास

मानव एक सामाजिक प्राणी है, मानव है तो समाज है न कि समाज से मानव है। जैसे कि हमारे विषय ''मेरे आसपास ये दीवारें'' इस ओर संबोधन करती है कि लोगों की बंदीशे हजार और स्वतंत्रता नाममात्र की दी जा रही है। यहाँ व्यक्ति स्वतंत्र तो है परन्तु वह विचारों के बंधन से आप भी बंधा हैं। शारीरिक मुक्ति ही स्वतंत्रता नहीं हमारे विचार भी हमें बंधन में रखते हैं। कुछ रुढ़ियां जो मिथक या अप्रासंगिक हैं उन्हें भी हम पूर्वजों की आड़ में पीढ़ी–दर–पीढ़ी आगे बढ़ाये जा रहे हैं। जिनका वर्तमान में कोई मूल्य नहीं फिर भी उन्हें हम बिना सोचे–समझे भावी पीढ़ी पर थोप देते हैं। पीढ़ियों का अंतर बहुत है यहाँ वस्तु, समय, काल सभी में परिवर्तन होता रहता है परन्तु पुराने विचारों के लोग अपने विचारों को परिवर्तित नहीं करते। समय बीत जाता है पर वह उसी दौर में जी रहे होते हैं। उन विचारों के साथ आज की भावी पीढ़ी का तालमेल स्थापित करना पूर्ण रूप से संभव नहीं। यह दौर इस पीढ़ी को अपने अधिकारों का हनन उनके निजी जीवन में हस्तक्षेप अनुभव करने लगते हैं। उनके लिए यह अनुशासन किसी दीवारों या बंधन से कम नहीं होते। वह पारदर्शी तो होते हैं परन्तु अंदर की व्यथा तो अपारदर्शी होती है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी स्वतंत्रता को सदैव रखना चाहता है। वह उस पर कोई हस्तक्षेप नहीं रखना चाहता है। वह हर वह नियम व अनुशासन को रोक देना चाहता है जो उसे आगे बढ़ने से रोकती है या कुछ ऐसा करने के लिए रोकती है जो वह कर सकता है या करना चाहता है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपने बाहरी चीजों से भी प्रभावित होता है। वहीं प्रभाव उनको बंधन के रूप में लगने लगता है। मेरे आसपास ये दीवारें, इस संकेत को दिखाती है कि व्यक्ति स्वयं की उन रीतियों, रूढ़ियों, नियमों, अनुशासन आदि से बंधा हुआ है। जो उसे दीवारें लगने लगती हैं। वह स्वयं को कहीं न कहीं खो देते हैं।

आज भी कुछ रीतियाँ ऐसी हैं जिसका कोई आपने आप में वजूद नहीं है परन्तु लोग निभा रहे हैं क्यों? क्योंकि उन्हें यही सिखाया गया है कि तुम यह करों तो अच्छा होगा, घर में रहो तुम लड़की हो उन्हें बचपन से ही उन्हें उनकी सीमा व दायरे में बाँध दिया जाता है। उन्हें हर समय यह बताया जाता है कि तुम लड़की हो तुम कुछ नहीं कर सकतीं, तुम वही करोगी जो बोला जाएगा आखिर क्यों इन पर इतनी सीमा है। इन्हें सोचने, बोलने की आजादी नहीं क्यों? इनके आगे ये लड़की होने की दीवार बना दी जाती है। कहते हैं कि आज हर लड़का, लड़की समान है पर यदि हम अपनी अंर्तात्मा से पूछे तो पाएंगे कि इतनी सच्चाई है इसमें क्या हमें इन दीवारों को घरों से ही या बचपन से ही खत्म नहीं करनी चाहिए? मुझे लगता है परिवर्तन बड़ी चीजों से नहीं छोटी–छोटी चीजों से ही शुरूआत की जानी चाहिए। आज घरों में लड़की पढ़ रही हैं कल आगे बढ़ेंगी तो वह उन सभी दीवारों को तोड़ने में सक्षम होंगी जो उसे देखनी पड़ी हैं। यदि यह दीवारें केवल मात्र दीवारे नहीं। समाज में परिवर्तन करने से, व्यक्तियों को जीवन में परिवर्तन करने से व्यक्तियों को जीवन में परिवर्तन लाने के लिए और स्वतंत्र समाज बनाने के लिए विचार, चिंतन दोनों को सुधारने होंगे तभी हम इस बंधन रूपी दीवारों को तोड़ सकते हैं। हर व्यक्ति स्वतंत्र होकर जीवन को एक नया मुकाम देना चाहता है। यह स्वतंत्रता उसे स्वयं बनानी है इसके लिए कुछ तो पहल करनी होगी।

इन रुढ़ियों को समाज स्वयं अपनाता है अपनी–अपनी सहुलियत के अनुसार जिसमें चंद लोगों का ही फायदा होता है बाकी उनके बोझ तले दबे रह जाते हैं। बंधन वही सही है जो एक सीमा तक रखे जाए। अन्यथा बाँध में जब पानी अधिक हो जाता है तो वह भी उसे तोड़ बाहर आने का प्रयास करता है तो एक मनुष्य क्यों अपने आस–पास की इन दीवारों में दबे हैं उन्हें भी इससे निकलने का प्रयास करके जीवन मे आगे बढ़ना चाहिए। अति सदैव हानिकारक होती है।

सरोज मौर्या
बी.ए. हिन्दी (ऑनर्स), तृतीय वर्ष

प्रदूषण

पर्यावरण का सीधा अर्थ हमारे आस–पास के वातावरण से है। वातावरण जो आज के समय में दूषित हो चुका है। जिसमें हमारा ही सीधा हाथ होता है। हम अपने में बदलाव तो लाते नहीं और सामूहिक तौर पर प्रदर्शन करते हैं। स्वच्छता का नारा लगाते हैं। पर्यावरण जो आज के समय में इतना दूषित हो चुका है। चाहे वह जल, वायु यहाँ तक कि मिट्टी भी आज प्रदूषित हो चुकी है। जो हमारे साथ–साथ हमारी आने वाली पीढ़ी के लिए खतरनाक सिद्ध हो सकती है।

पर्यावरण को स्वच्छ रखने की जिम्मेदारी के विषय में यदि हम देखें तो यह पाते हैं कि आज के समय में यह केवल दिखावा मात्र रह गया है। हम अपने घरों में अपने घरों के आस–पास तक ही स्वच्छता का ध्यान रखते हैं। जबकि हमारे घरों से निकला कूड़ा–करकट जिसका निपटान यदि सही से न हो तो वह भी हमारे व हमारे वातावरण के लिए हानिकर है। पर्यावरण को स्वच्छ रखने के लिए सामूहिक तौर पर बाद में प्रयास करना चाहिए। सबसे पहले हमें स्वयं में ही बदलाव करना चाहिए क्योंकि जब तक हम स्वयं में बदलाव नहीं करेंगे तब तक हम दूसरों से उम्मीद भी नहीं कर सकते हैं।

2 अक्टूबर जो गाँधी जयंती के रूप में मनाया जाता है, अब उसे हम 'स्वच्छता दिवस' के रूप में मनाते हैं। गाँधी जी के माध्यम से उनकी विचारधाराओं को अपना कर स्वच्छता की बात तो कि जाती है पर वह केवल भाषण मात्र ही होता है। एक दिन स्वच्छता के विषय पर ध्यान देकर हम वातावरण में कोई बड़ा परिवर्तन नहीं ला सकते हैं। वातावरण की ओर ध्यान केन्द्रित करने के लिए पहले व्यक्तिगत स्तर पर बदलाव लाना पड़ेगा। हम इसकी शुरुआत खुद अपने घर से, फिर अपने मुहल्ले, फिर अधिक–से–अधिक लोग इस मुहिम में कार्यरत हों तभी यह सफल हो सकता है।

पर्यावरण के प्रदूषित होने के कारण हम मनुष्य तो परेशान हैं ही, साथ में जीव–जंतु भी जो अब धीरे–धीरे विलुप्त होते जा रहे हैं। जीव–जन्तुओं को पलायन करना पड़ जाता है। हम अपनी दैनिक जरूरतों को पूरा करने के लिए, या यूँ कहें हमारी आवश्यकताएँ इतनी बढ़ चुकी हैं, कि हम अपने आराम और सुख–सुविधा के लिए काफी बड़े स्तर पर जंगल को नष्ट कर देते हैं। सामूहिक तौर पर हम खाली जगहों पर पेड़ लगा सकते हैं। नदियों में जो कूड़ा–करकट डाला जाता है, उसके बारे में लोगों को जागरूक कर नदियों को गंदा होने से बचा सकते हैं। हम अपने छोटे–छोटे प्रयासों से पर्यावरण में काफी बदलाव ला सकते हैं। जरूरत बस यह है कि जब हम अपने अंदर बदलाव करें तभी यह सफल हो पाएगा।

रीमा

बी.ए. हिन्दी (ऑनर्स), तृतीय वर्ष

पुस्तक

ज्ञान का भण्डार हैं पुस्तकें
विचित्र एक संसार हैं पुस्तकें।

लघु दीर्घ अनुभवों का भण्डार हैं पुस्तकें
सिद्धान्त और व्यवहार का सागर हैं पुस्तकें।

जीवन को सफल बनाती हैं पुस्तकें
बुद्धि के घोड़े दौड़ाती हैं पुस्तकें।

मनोरंजन हमारा करती हैं पुस्तकें
धनोपार्जन के लिए समर्थ बनाती हैं पुस्तकें।

परीक्षा के समय छात्रों का ब्रह्मास्त्र होती हैं पुस्तकें
निश्चित सुन्दर भविष्य बनाती हैं पुस्तकें।

एक विचित्र संसार हैं पुस्तकें
सम्पूर्ण संसार के रहस्यों का सार हैं पुस्तकें।

लक्ष्मी तोमर

बी.ए. (हिन्दी ऑनर्स), तृतीय वर्ष

ये दीवारें

मेरे आस–पास ये दीवारें अर्थात् वे अवरोध जो कि मानसिक, आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक इत्यादि रूपों में व्यक्ति अपने आस–पास पाता है। व्यक्ति की उड़ान अर्थात् उसके लिए या किसी समाज के उत्थान एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करना एवं इसके साथ–साथ इसे सच करने के लिए व्यक्तिगत तौर पर भरपूर प्रयास करना। भारत एक ऐसी विभिन्नता भरा देश है जहाँ अनेक धर्म, जाति एवं संप्रदाय के नागरिक मौजूद हैं। मुस्लिम एवं हिन्दू के मध्य वाद–विवाद किसी देश के प्रति ही घातक नहीं है अपितु व्यक्तिगत तौर पर भी गलत है? ये बंदीशें ही हैं कि कोई हिन्दु मुसलमान से मित्रता करने पर कटाक्ष और तर्कों का सामना करता है। लड़कियों को क्यों अपना मनपसंद वर चुनने का अधिकार नहीं दिया जाता है, क्यों जातिगत भेदभाव किया जाता है? आज भी ये सभी चीजें जड़ से उखड़ नहीं पाई हैं। लड़कियों को लड़के न होने वाले असमान व्यवहार से अभी भी पूरी तरह दूर नहीं किया गया है। ये सभी सवाल दर्शाते हैं कि अभी भी व्यक्तियों के आस–पास ये दीवारें प्रत्यक्ष रूप से न सही अप्रत्यक्ष रूप से मौजूद हैं।

लड़कियों के साथ होने वाले भेदभावों को मैं अपनी आत्मा में महसूस करता हूँ कि सामाजिक अवरोध के कारण लड़कियों को पढ़ाई करने के लिए क्यों संघर्ष करना पड़ता है? लड़कियों को कोई भी चीज़ आसानी से प्राप्त नहीं होती। पढ़ाई के लिए पूरे परिवार वालों को समझाना आदि समस्याओं की वजह से कितनी मेरी बहनें, जिन्हें कॉलेज आने का अवसर प्राप्त हुआ, परिवार वालों के दवाब ग्रस्त होने कारण वे कॉलेज की शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकेगी। ये है आज की सच्ची तस्वीर जो कि लड़कियों की शिक्षा के प्रति स्वयं को दर्शाती है।

मानसिक तनाव : माँ की मृत्यु हो जाने के बाद पिता के हाथों ने ऐसा संभाला कि माँ की बजाए पिता सभी जगह ले सकता है। उनके जैसे दिमाग में आए प्रश्न दूर हो गए। दादी, बुआ, आदि ने ये तर्क दिया की लड़कियों को 12वीं कक्षा के उपरांत विवाह करके उनके प्रति जिम्मेदारी को खत्म कर दिया जाए किंतु इसके प्रति मेरे पापा एवं मैंने दोनों ने आवाज़ उठायी ऐसी कई अवरोधक घटनाएँ लड़कियों के जीवन में आती हैं किन्तु लड़कियों को ऐसी समस्याओं का सामना करना सीखना होगा और इससे संघर्ष करना भी।

लड़कियों को हमेशा गृहणी के रूप में ही सोचा जाता है। ऐसी सामाजिक बंदिशों से निकलना हर स्त्री के लिए संघर्षकारी है किंतु महिला को पुकारा ही शक्ति के स्वरूप में जाता है। इसलिए हर लड़की सक्षम है कि वह अपने लिए संघर्ष कर सके।

मानसिक भय भी सबसे खतरनाक होता हैं जो कि लड़कियों के दिमाग में बचपन से डाला जाता है कि वह लड़कों जितनी ताकतवर नहीं होतीं। लड़कियों के खेल अलग होते हैं उनकी क्षमताएँ अलग होती हैं। किन्तु मेरी नज़र में एक स्त्री जो कि अपने शरीर में से किसी और जान को जीवित कर सकती है तो वह किसी पुरुष के बराबर नहीं किंतु उससे अधिक ही सहनक्षमता, एकाग्रता, शक्ति आदि का स्वरूप होती हैं।

अपनी जाति में विवाह करना आदि सामाजिक दवाब भी हर लड़की को सहन करना पड़ता है। शादी के लिए लड़का घरवाले पसंद करेंगे आदि चीजों का चयन जो सब लड़कियों का अधिकार होना चाहिए वह घर के बड़ों पर होता है। लड़का अलग भाग कर शादी कर ले तो उसे उसके घर वाले अपना लेते हैं कोई ना इकलौता लड़का है किंतु दूसरी ओर लड़की के रिश्ते अपने परिवार वालों से टूट जाते हैं। क्यों ऐसे असमान व्यवहार के प्रति लड़कियों को हर बार अपना संघर्ष करना पड़ता है। एक लड़की जिसे जिंदगी भर किसी के साथ रहना है तो उसका चुनाव करने का अधिकार भी उसे होना चाहिए।

क्या पहनना है क्या व्यवसाय करना है ऐसे चुनावों का चयन करने का अधिकार केवल उन्हें होना चाहिए

जिन्हें संवैधानिक रूप से मिला है किंतु आज भी उन्हें अपने ही अधिकारों के प्रति जुझना पड़ता है।

ऐसी अनेक बंदिशें हमेशा से ही लड़कियों के साथ रही हैं। लेकिन गहरा सच यह भी है महिलाओं ने इसका डटकर सामना किया हैः–

मेरे आस–पास, हैं ये दीवारें
तोड़ना है मुझी को चाहे,
करना पड़े संघर्ष, होना पड़े क्षतिग्रस्त
रूप हैं इन दीवारों के अनेक
चाहे हों सामाजिक चाहे हो आर्थिक परिवेश,
हमेशा ही इन दीवारों को टूटना पड़ा है
लड़कियों को उड़ान भरने से भला कोई रोक सका है।

कविता
बी.ए. (ऑनर्स) राजनीति विज्ञान, प्रथम वर्ष

खुशी की तलाश

हर पल अब खामोश है
गुम हुआ वो बचपन का जोश है।
जिंदगी के नीले गगन पर छाया अंधकार है
ना जाने किस खुशी की इस दिल को तलाश है।
चेहरों पर सब एक मुखौटा लगाए हुए हैं
झूठी हंसी में सबको बहकाए हुए हैं
दिल–ओ–दिमाग का ये क्या रिश्ता है
तकलीफ़ में यह दिल ही क्यों पिसता है?
ये अश्क ही धड़कते दिल के सच्चे साथी हैं
दिल के बुरे वक्त में दौड़े चले आते हैं।
सबको यहाँ कुछ पाने की ख्वाहिश है।
अपनों को भूलने का सिलसिला चला है।
किसी के पास आकर चले जाने का
दस्तूर ये आजकल की कला है।

साहिल सैनी
बी.एस.सी. सांख्यिकी, द्वितीय वर्ष

या रब्बा मेरे दोस्तों तक संदेश पहुँचा दे

या रब्बा मेरे दोस्तों तक संदेश पहुँचा दे,
उसके दिल में ख्याल मेरा भी जगा दे,
मस्त हो गया है वो मुझसे दूर जा के,
उसको मेरी भी जरा–सी याद दिला दे।
मुझे इतनी फुर्सत कहाँ कि मैं तकदीर का लिखा देखूँ,
बस अपनी माँ की ''मुस्कुराहट'' देख कर समझ जाता हूँ
कि ''मेरी तकदीर'' बुलन्द है।
इतना दिया सरकार ने,
जितनी मेरी औकात नहीं,
यह तो करम है मेरे दाता का,
कि मुझसे कोई ऐसी बात नहीं...।
अजीब–सा रिश्ता है मेरे और भगवान के बीच,
ज्यादा मैं मांगता नहीं और कम वो मुझे देता नहीं...
कौन कहता है कि बचपन वापस नहीं आता,
कुछ वक्त माँ के पास बैठ कर तो देखो,
बच्चा ना महसूस करो फिर कहना...।

केशव गोयल
माइक्रोबायोलॉजी (ऑनर्स), प्रथम वर्ष

अस्तित्व : एक पहचान

अस्तित्व उसका गुमनाम है,
धुँधली उसकी पहचान है,
लोगों की नज़रों में फिर,
क्यों कहलाता वो शैतान है?
घर में कोई खुशी आए तो उसको बुलाया जाता है,
परन्तु उसी समाज में उसे नीचा दिखा उसको रूलाया जाता है।
छिन्न–भिन्न सा उसका अस्तित्व यूँ कुछ रूठा हुआ है,
सारे समाज से वो इस तरह टूटा हुआ है,
उसका आशीर्वाद जहाँ परमात्मा से ऊपर माना जाता है।
यह वही है जो किन्नर के नाम से जाना जाता है।
जन्म होते ही जिसकों माँ–पिता से दूर कर दिया जाता है,
उसी समय लोगों के मन में उसके प्रति घृणा और तिरस्कार भर दिया जाता है।
क्यूँ हम समाज के इस नज़रिए को नही बदल पा रहे हैं?
शिक्षित होते हुए भी अशिक्षितों की भूमिका निभा रहे हैं।
हम ही लोगों को समाज में ये बदलाव लाना होगा,?
भगवान की इस देन के प्रति प्यार और सम्मान जगाना होगा,
किन्नर एक नाम नहीं, धब्बा है माना जाता
उसकी भावनाओं और अहमियत को क्यों संसार में नहीं माना जाता।
किन्नर वो एक दीपक है जो खुद जलकर संसार में रोशनी फैलाता है।
वो एक फूल है जो खुद टूटकर सारे संसार को महकाता है।
वो एक नदी है जो इस समाज की कीचड़ साफ करता है।
फिर भी ये समाज क्यों उसको तड़पाता है?
उसके जीवन को नरक से बदतर बनाता है।
अब हमें इस समाज में कुछ करके दिखाना होगा,
किन्नर के अस्तित्व के लिए लड़कर दिखाना होगा,
उसको भी इस समाज में अब सम्मान से रहना होगा,
तिरस्कार और नफरत ना अब उसको सहना होगा।
भगवान ने उसको किन्नर बनाया इसमें उसकी क्या गलती है?
फिर क्यों ये दुनिया उसको इस तरह से छलती है।
संसार की अब छोटी सोच को बदलना चाहिए,
किन्नर भी एक इंसान है इस बात को समझना चाहिए।
उसके अस्तित्व की धुँधली तस्वीर को साफ करना होगा,
समाज में उसे प्यार, सम्मान और पहचान दिलाना होगा।

विन्नी गिल
बी.ए. (ऑनर्स) राजनीति विज्ञान, द्वितीय वर्ष

अभिव्यक्ति

(1)

परछाई के पीछे–पीछे भाग रहा है मन,
चाँद को मुठ्ठी में भरने को, रोज करता है जतन।
प्यासे इस पंछी को, कोई नदी मिलने दो ना,
जिंदगी के ख़्वाबों को अब हकीकत बनने दो ना।
फिर जब भी दर्द का बादल छाएगा, जब गम का साया लहराएगा,
जब आँसू पलकों तक आएंगे, जब भी दिल घबराएगा,
तब इस दिल को यह समझाना, दिल तू आखिर क्यों रोता है?
हवा के झोंकों के जैसा आजाद होना सीखो
तुम इस दरिया के जैसे लहरों में बहना सीखो
हर एक लम्हें से मिलो तुम खोलो अपनी बाहें
हर एक पल एक नया समा बाँधो
ख्वाबों की राह आसाँ नहीं होती पगले
है जुनून तो कट जाती हैं यह हँसते–हँसते।

(2)

फिर कोई काँटा तुम्हारे, पाँव में शायद चुभा है
टीस–सी गहरी उठी है, दिल मेरा रो दिया है।
आज आँखों में तुम्हारे, बादलों के साएँ देखे
अश्कों की बरसात से मन मेरा भीगा हुआ है।
लबों पर देखा तुम्हारे, एक तबस्सुम फूल जैसा
यह मेरे जज़्बात का गुलशन, तभी महका हुआ है।
प्यार बन कर चाँद नज़रों में तुम्हारे झिलमिलाए
आज सीने में मेरा तूफान–सा उमड़ आया।
कल तुम्हारे हाथ ने सहला दिया एक ज़ख़्म मेरा,
हर रोज एक घाव बनकर आज फिर रिसा हुआ है।
दर्द का इज़हार करना अब ज़रूरी हो गया
चाहतों के ज़ोर से दिल हर तरफ बेचैन–सा है।

शोभिक आनन्द
बी.एस.सी (ऑनर्स) माइक्रोबॉयोलोजी, प्रथम वर्ष

माई भात ला दे रे

कुटिल रात्रि के कुचक्रो ने
दिग घेर लिया तम वक्रो ने
अब क्षुधाग्नि भभक उठी
धर विकराल रूप अब धधक उठी
दिन बीत गए, तीन जोहते
अन्न शेष बचा न जठरों में
विष घोल कटोरी भरकर
मुझे अपने हाथ पिला दे रे।
भईया निरशन विषण्ण बिलबिलाता है
माई भात कहीं से ला दे रे।
बीते जाने कैसे–कैसे दस बरस
यही कथा रही, हम अभागों की
लोरी गाकर जो बताती थी
मिली कब रोटी, वह अपने भागों की
रहा आसरा जाने किन हाथों का
चन्दा मामा के दूध भातों का
अब लवण बन गए अश्रु सूख–कर
अब प्राण आ गया है मुख–पर
मेरी रहने की आशा छोड़
बस भइया को जिला दे रे
देख कैसे सन्न पड़ा मुख ताक रहा
माई भात कहीं से ला दे रे।

किशन सरोज
बी.ए. (ऑनर्स), द्वितीय वर्ष

और मैं रो पड़ी...

किस से कहूँ, कैसे कहूँ कि, मैं रो पड़ी।
मेरी आवाज को दबा दिया गया।
किस से कहूँ, कैसे कहूँ कि, मैं रो पड़ी।

आसमान में उड़ने की चाह को लेकर, मुझे नीचे उतार दिया गया।
चाह कर न कुछ कर पाई मैं।
किस से कहूँ, कैसे कहूँ कि, मैं रो पड़ी।

माँ की ममता, पापा का प्यार लेकर, मैं चुप हो गई
भाई का दुलार, बहन का स्नेह, लेकर मैं खुश हो गई
अपने सपनों को तोड़कर, मैं चुप हो गई
किस से कहूँ, कैसे कहूँ कि, मैं रो पड़ी।,

देखकर अपनों का स्नेह, खुश मैं हो गई
तोड़कर अपने अरमानों को, घर अलग बसा लिया।
खुद से अलग न कर पाई, अपने सपनों को
दर्द इतना ये दे गया
दिल में दबा कर अपने आँसू को, मैं खुश हो गई।
चाहकर भी न बना पाई अपने सपनों का घर
किस से कहूँ, कैसे कहूँ कि, मैं रो पड़ी।

इस चिड़िया को न उड़ने दिया, पर जीना इसने सीख लिया
खुश न रहकर भी खुश है, दिखावा करना सीख लिया
किस से कहूँ, कैसे कहूँ कि, जीना मैंने सीख लिया
किस से कहूँ, कैसे कहूँ कि, रोना मैंने छोड़ दिया।

नीतू कुमारी
बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी, द्वितीय वर्ष

भेदभाव क्यूँ?

मैं एक स्त्री हूँ, जब माँ के गर्भ में आई थी तब से निरन्तर प्रतिदिन एक नए संघर्ष और बंदिशों का सामना करती हूँ। मैं आज भी महसूस करती हूँ तो मेरी रूह काँप जाती है। जब एक दिन दादी ने माँ से कहा था कि तुम्हें गर्भपात कराना है। माँ ने बहुत विरोध किया परन्तु उनकी किसको थी। अंततः मेरे पिताजी ने दादी को समझा दिया और दिलासा दिलाई कि यह पहली बच्ची है, आगे बेटा हो जाएगा और दादी मान गयीं। मैं पैदा हुई घर में सबसे अधिक माँ ही खुश थीं। जब मैं दस वर्ष की हुई तो माँ पुनः गर्भवती हुई। दादी ने उनसे कहा कि चलो डॉक्टर के पास चैक–अप को लेकिन माँ तैयार न थी। फिर भी घर के दबाव से उन्हें जाना पड़ा। जब माँ घर पर आई तो मैंने देखा माँ दुःखी थी और दादी गुस्से से लाल नज़र आ रही थी। मैं समझ न सकी मैंने माँ से पूछा–''माँ क्या हो गया आप रो क्यों रहीं हैं? माँ कुछ नहीं बोली चुप रहीं। उनकी चुप्पी को मैं अक्सर समझने की कोशिश करती थी पर बचपन में समझ न सकी, कि ये मामला क्या था? परन्तु आज मैं समझ सकती हूँ ये मातम था एक बेटी के आने का।

मुझे याद है जब एक रात दादी पापा से चुपचाप अंधेरे में काली अमावस की रात में माँ के गर्भपात कराने की बात कर रहीं थी। पहले तो पिताजी इसके पक्ष में नहीं थे लेकिन जल्द ही वे दादी का समर्थन करने लगे। अगली सुबह जब मैं खेल रही थी तो पापा ने माँ से कहा ''मैं इस बेटी को नहीं पाल सकता, तुम्हें इस बार गर्भपात कराना ही पड़ेगा।'' माँ मानने को तैयार नहीं थी लेकिन जबरदस्त विरोध के कारण वह झुक गई और एक बेटी को समाज पर फिर बलि चढ़ा दिया गया। माँ कई दिन तक रोई पर धीरे–धीरे मुझे देखकर वह तसल्ली कर लेती।

मुझे याद है कि इस घटना के हफ्ते भर बाद तक माँ ने कुछ भी ठीक से खाया पिया नहीं था, जबकि हत्यारे खुश थे अपनी सफलता पर। जब मैं 12 वर्ष की थी तब पहली बार मुझे घर पर शाम 6 बजे तक आने की नसीहत दी गयी थी कि ''समय पर आया करो घर'', मैं चुप रही क्योंकि शायद मैं डर गयी थी। फिर जब मैं कॉलेज जाने लगी तो रास्ते में अक्सर कुछ भेड़िये हम पर घूरते। हमने घर पर बताया तो फिर नसीहत मिली ''रास्ता बदल लो और ठीक से कपड़े पहन कर जाया करो''। मैं चुप रही क्योंकि शायद मैं इसे स्वीकार कर चुकी थी और इन दीवारों को ही अपनी सीमा रेखा मान चुकी थी जिसके आगे मुझे नहीं जाना था।

इसी तरह घर पर माँ भी दीवारों से घिरी हुई थी पर इसका उन्हें ज़रा भी इल्म नहीं था। परन्तु मुझे था क्योंकि मैंने समझ लिया था कि यह मेरी अंतिम सीमा नहीं है और मुझे इसके कहीं आगे जाना है, क्योंकि मैंने शायद कुछ भी गलत नहीं किया जो इसके पहले मेरे घर वाले कहते थे कि 'बाहर घूमना, देर से घर आना, खुलकर हँसना, लड़को से बात करना यह सब गलत है। मैंने महसूस किया कि यह तो स्वार्थी मर्दों द्वारा बनाई गयी दीवार है जिसका उद्देश्य एक महिला को कैद करना था।

एक बार मुझे देर आने की नसीहत घर पर फिर से दी गयी पर इस बार मैं चुप नहीं रही, न ही ड़री बल्कि मैंने सवाल किया, अपने पिताजी से कि ''ये नियम किसने बनाया कि स्त्री घर के बाहर शाम ढ़लने के बाद नहीं रह सकती और पुरुष जब तक चाहे बाहर रहें और यदि इच्छा हो तो मदिरा जैसे गुणकारी और लाभकारी पेय का सेवन कर लें।'' पिताजी झुंझला पड़े पहले तो उन्होंने मुझे थप्पड़ रसीद किया फिर अपना तर्क प्रस्तुत करते हुए कहा कि ''महिलाएँ आत्मरक्षा नहीं कर सकतीं यदि कोई घटना हो जाए तो पुरुष तो बच जाएगा या सामना कर लेगा क्योंकि वह शारीरिक रूप से सक्षम हैं पर महिलाएँ कैसे आत्मरक्षा करेंगी?'' इस पर मैंने भी सवाल कर दिया कि ''ऐसे पौरुष युक्त पुरुष उस समय अपनी कारों को रोकने का साहस नहीं कर पा रहे थे, जब एक महिला दिल्ली की मुख्य सड़क पर नग्न बदन सहायता माँग रही थी, चीख रही थी, तड़प रही थी, तब उन शारीरिक सबल लोगों (पुरुषों) का झुण्ड कहाँ गया था? जब भेड़िये भेडों को नुकसान पहुँचा रहे थे तो जरूरत है भेड़ियों को काबू रखने की, न कि मेरे आसपास या मुझ जैसी महिलाओं के आसपास दीवार बनाने की।'' पिताजी के तर्क शायद इसके आगे मेरा सामना करने का साहस नहीं जुटा सके क्योंकि मैंने अपने आस–पास की दीवार को तोड़ दिया था।

अनुगृह त्रिवेदी

बी.ए. (ऑनर्स) राजनीति विज्ञान, प्रथम वर्ष

बेटियों का अधिकार

आज मैं आपको 'बेटी बचाओ और बेटी पढ़ाओं' अभियान के बारे में कुछ बताना चाहूँगी। हमारे समाज में बेटियों को किस प्रकार शिक्षा दी जाती है या उनका किस प्रकार सम्मान किया जाता है? हमारे समाज में बेटियों को बेटों के मुकाबले कम शिक्षा व कम सम्मान दिया जाता है। बेटियों को पढ़ाई से वंचित रखा जाता है। लेकिन हमें अपने समाज की इस सोच को बदलना होगा और उन्हें बेटियों के प्रति जागरूक करना होगा। समाज केवल बेटों के द्वारा ही नहीं बनाया या चलाया जाता है बल्कि उसमें बेटियां भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। बेटियों को हर अधिकार से वंचित रखा जाता है। बेटियों के घूमने–फिरने, पहनने आदि सभी पर रोक–टोक की जाती है। बेटियों को शिक्षा नहीं दी जाती है। उन्हें स्कूलों में नहीं भेजा जाता है। उन्हें घर की चारदीवारी में ही रखा जाता है। हमारे समाज में जहाँ पर बेटियों को बहुत अपमानित किया जाता है और उन्हें समाज के किसी भी कार्य में भाग नहीं लेने दिया जाता है। वही दूसरी ओर पुरुषों के साथ ऐसा व्यवहार नहीं किया जाता है। बेटियों को समाज में बहुत प्रताड़ित किया जाता है। पहले पर्दाप्रथा चली आ रही थी जिसमें महिलाओं को अपने चेहरे पर पर्दा रखना पड़ता था और उसे उतारने पर गुनाह माना जाता था। जिस प्रकार एक लड़के को सभी अधिकार दिए जाते हैं और उन्हें पूर्ण रूप से स्वतंत्रता दी जाती है तो फिर लड़कियों को क्यों नहीं? क्या एक लड़का ही समाज में बदलाव या विकास कर सकता है, लड़कियाँ नहीं? लड़कियों को भी सभी अधिकार प्राप्त होने चाहिए। बाल विवाह, दहेज प्रथा ये हमारे समाज में बहुत पहले से चली आ रही हैं। शादी के समय लड़की वालों से दहेज की माँग की जाती है। यदि दहेज ना दिया जाए तो फिर उनके साथ मारपीट की जाती है। महिलाएँ शोषण का शिकार बनती हैं। महिलाओं या लड़कियों को शिक्षा दी जानी चाहिए, उन्हें शिक्षा से वंचित नहीं रखा जाना चाहिए। क्योंकि लड़कियाँ शिक्षा प्राप्त करके लड़कों से भी आगे जा सकती हैं। लड़कियों को हमारे समाज व देश में हो रहे कार्यक्रमों में भाग नहीं लेने दिया जाता है। पहले हमारे समाज में खेलों में केवल लड़के ही भाग ले सकते थे। लड़कियाँ भाग लेना तो दूर उन्हें तो देखने की भी इजाजत नहीं थी। आज भी कुछ हद तक लड़कियों की स्थिति नहीं सुधरी है। लड़कियों के घर से बाहर निकलते ही उनसे तरह–तरह के सवाल किए जाते हैं। किसी भी लड़के से बात करते समय उन पर बहुत से आरोप लगाए जाते हैं। लड़कियाँ स्वतंत्र महसूस नहीं कर सकती। कहने को तो हमारा देश स्वतंत्र है। लेकिन लड़कियों के मामले में वो अभी भी स्वतंत्र नहीं हैं। लड़के जब चाहें कहीं भी आ जा सकते हैं, उनसे सवाल जवाब नहीं किए जाते। अगर उनकी जगह लड़की कहीं चली जाए तो कहाँ गई थी, किसके साथ थी, ये अजीब से सवाल किए जाते हैं। हमें अपनी व अपने समाज की इस सोच को बदलकर लड़कियों के हितों के बारे में अवगत करना होगा। तभी हम इस देश को एक स्वतंत्र देश कह पाएंगे।

लड़कों की तरह ही लड़कियों को समझना होगा। उनके जन्म के समय मातम मनाने की बजाए खुशी मनानी होगी और उन्हें किसी भी अधिकार से वंचित नहीं रखा जाए। लड़कियों को समान शिक्षा व स्वतंत्रता दी जाए। लड़कियाँ भी देश के लिए कुछ करना चाहती हैं उनसे वो अधिकार नहीं छिनना चाहिए। ये तभी संभव हो सकता है जब हम एकजुट होकर ये प्रण लें कि बेटी का अधिकार हमारा अधिकार है। महिलाओं और बेटियों की इज्जत करो और उन्हें सम्मान दो। इसलिए हमें इस नारे को आगे बढ़ाना चाहिए कि ''बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ'' और ये किसी एक व्यक्ति या समाज द्वारा ही नहीं किया जा सकता बल्कि यह पूरे देश द्वारा किया जाना चाहिए। अंत में मैं यही कहना चाहूँगी बेटियों का सम्मान करो और उन्हें उनके अधिकारों से वंचित न करो। इसलिए ''बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ''

विन्नी गिल
बी.ए. (ऑनर्स) राजनीति विज्ञान, द्वितीय वर्ष

मेरा गाँव शहर नहीं होना चाहिए

मेरा गाँव शहर नहीं होना चाहिए
ये हवा जहर नहीं होना चाहिए
बेवक्त हमें नहीं सोना चाहिए
कोयल की कूँक, मिट्टी की खुशबू
हरियाली को संजोना चाहिए
गाँव, शहर नहीं होना चाहिए।

मेरा गाँव शहर नहीं होना चाहिए
पैदल चलकर लम्बे रास्ते
पहिए का न खिलौना चाहिए,
खुली जगह ये खेत प्रिय हैं
मुझे छोटा–सा नहीं कोना चाहिए
गाँव, शहर नहीं होना चाहिए।

मेरा गाँव शहर नहीं होना चाहिए
किसी आया की गोद नहीं,
बच्चे को माँ की गोद में रोना चाहिए
गाँव को नजराने वाले तुझे
बुढ़िया का जादू–टोना चाहिए
मुझे याद है मेरे बचपन के दिन
मुझे वही याद सलोना चाहिए
गाँव, शहर नहीं होना चाहिए।

सूरज कुमार
बी.ए. (प्रोग्राम) प्रथम वर्ष

मन की बात

मन की भावनाओं को जता रहा हूँ
लो आज मैं तुमको बता रहा हूँ
मुझे कभी ये दिल्ली पसन्द ही नहीं आई
मजबूरन इसे अपना रहा हूँ

बड़ी दूर है गाँव मेरा–बड़ी दूर है गाँव मेरा,
उसे याद करके जिए जा रहा हूँ।
उम्मीद है एक दिन मजबूरी मिटेगी
तेरे–मेरे बीच की ये दूरी मिटेगी

इस शहर में हवा नहीं ज़हर लेता हूँ
साफ पानी को भी डर–डर के पीता हूँ
कोई नशे का ऐब नहीं, ये झूठ कैसे कहूँ
कलम हाथ में लिए 'दिले–ए–हाल लिख रहा हूँ।

कहने को तो मेरे दोस्त बेहिसाब हैं
पर तन्हाई में साथ मेरे, कलम और किताब हैं
वो गाँव की बात सुनना पसंद करते हैं
जो बने फिरते शहर के नवाब हैं
अगर मैं तुम्हारे शहर को ज़हर कहूँ तो गलत ही क्या है
क्या इस शहर में सच कहना भी कोई गुनाह है।

मैं अपने गाँव की तरफ मुड़ जाऊँगा
काट दोगे पंख मेरे ये तन त्याग के उड़ जाऊँगा
ये दिल्ली मुझे पसन्द ही नहीं
बार–बार मैं ये बार–बार दोहराऊँगा
मैं अपने गाँव की तरफ मुड़ जाऊँगा।

सूरज कुमार
बी.ए. (प्रोग्राम) प्रथम वर्ष

अपमान

मुझसे अब अपमान सहा नहीं जाता
क्या करूँ कुछ समझ नहीं आता,
पश्चाताप बहुत है पर लोगों को, क्यों समझ नहीं आता
मुझसे अब अपमान सहा नहीं जाता।
गलतियों का अम्बार है मेरे पास, क्यों फिर सीख नहीं पाता?
अपनों से भय लगता, फिर दूसरों के पास जाता
उनको अपनी कहानियाँ सुनाता और कहता
ए दोस्त मुझसे अब अपमान सहा नहीं जाता।
सब कहते तू बड़ा सहनशील है रे, इसलिए
सबकुछ सह जाता,
पर उन्हें क्या पता रोज रात को घुट–घुट कर
जीता और फिर मर जाता।
अगले दिन फिर उठता सोचता, कि आज कुछ
अच्छा हो जाता,
कही से मेरे अपनों का संदेश आ जाता, और कहते
कि आशु तेरे से ज्यादा दिन रूठा नहीं जाता।
पर मुझसे अब अपमान सहा नहीं जाता।

आशुतोष मिश्रा
बी.जे.एम.सी., प्रथम वर्ष

दिल्ली

चला जा रहा हूँ ऐ दिल्ली, तेरा दामन छोड़कर
क्योंकि तेरी आबो–हवा बहुत जहरीली हो चुकी है।
चला जा रहा हूँ ऐ दिल्ली, तेरा दिल तोड़कर
क्योंकि तेरी आबो–हवा बहुत जहरीली हो चुकी है।
हर वो शख्स मुझसे नाराज है, जो मेरा ख्याल
रखता था दिल्ली में,
इसलिए चला जा रहा हूँ ऐ दिल्ली तेरा दामन छोड़ कर।
जहाँ सूरज को जद्दोजेहद करनी पड़ती है निकलने के लिए
क्योंकि तेरे अपने ही, तेरी आबो–हवा बर्बाद कर रहे हैं,
इसलिए चला जा रहा हूँ ऐ दिल्ली तेरा दामन छोड़कर।

आशुतोष मिश्रा
बी.जे.एम.सी., प्रथम वर्ष

कभी दो मिनट का समय मिले तो

कभी दो मिनट का समय मिले तो–
उस माँ के साथ गुजार देना।
जिसका लाल सरहद पर इतिहास लिखकर चला गया।
जिसके सीने का दूध गर्व से उछल पड़ता है।
कभी वक्त मिले तो–
उन लोगों को सहारा देना,
जो मानवता के फुटपाथ पर बर्फीले तूफानों,
में बैठे ठिठुर रहे
जिनके शरीर में अंतिम रक्त कण भी सोख लिया गया है।
और हड्डियों का ढ़ांचा जीवन व्यवहार के लिए छोड़ दिया गया है।
कभी वक्त मिले तो–
उन बच्चों की आँखों में झाँकना
जिनका बचपन पैदा होने से पहले ही मर गया
उनको कोई चुटकुला सुनाकर हँसा देना।
शायद अँधी होती आँखों को कुछ रोशनी मिल सके
जब कभी दो मिनट का वक्त मिले तो–
उस चिलचिलाती धूप में पिछलती मानवता पर
दो आँसू बहा देना
शायद वो आँसुओं की नदी 'रजत'
तडपती उनकी आत्मा को कुछ शान्त कर सके।
कभी दो मिनट का वक्त मिले तो
उस माँ के साथ गुजार देना.....

रजत सैनी,
बी.ए. (ऑनर्स) राजनीति विज्ञान, द्वितीय वर्ष

ग्रामीण महिलाओं को कितनी स्वतंत्रता

आजादी के सातवें दशक में हम प्रवेश कर चुके हैं। लेकिन हमारे सामने हर बार यही सवाल खड़ा हो जाता है कि स्वतन्त्र देश में हमारी आधी आबादी यानि महिलाएँ खासकर ग्रामीण महिलाएँ कितनी स्वतन्त्र हैं? यह सवाल इसलिए भी लाज़मी है क्योंकि कहीं न कहीं ग्रामीण महिलाओं की आवाज हम तक पहुँच ही नहीं पाती है और वह शायद शहरी क्षेत्रों की महिलाओं के मुकाबले बद्तर जीवन जीने के लिए मजबूर हैं।

हमारे समाज में महिला जन्म से लेकर मृत्यु तक एक अहम और संघर्षशील किरदार निभाती हैं। अपनी सभी भूमिकाओं में निपुणता दर्शाने के बावजूद आज के आधुनिक युग में महिलाओं को पुरुषों के बराबर उठने–बैठने लायक नहीं समझा जाता है। शहरी क्षेत्रों में तो फिर भी हालात इतने खराब नहीं पर ग्रामीण इलाकों में महिलाओं की स्थिति चिन्ता करने योग्य है।

आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च–शिक्षा के प्रचार–प्रसार का अभाव है जिससे महिलाओं को लेकर तरह–तरह की कुरीतियों का बोलबाला है। लड़कियों को स्कूली शिक्षा से दूर कर दिया जाता है यह कहकर कि तुझे पढ़–लिखकर क्या करना है?

जिस देश में लगभग तीन–चौथाई आबादी गाँव में बसी हो और कृषि ही अर्थव्यवस्था का आधार हो उस देश में ग्रामीण विकास के बिना हम कैसे यह कल्पना कर सकते हैं कि वहाँ की औरतें पुरुषों के बराबर खड़ी हो सकती हैं? क्योंकि जब पुरुष ही दो वक्त की रोटी के लिए संघर्ष करता है तो औरतें किस प्रकार उस समाज से संघर्ष कर पाएँगी। बाल–विवाह, दहेज उत्पीड़न, बलात्कार में जकड़ी ग्रामीण महिलाएँ किस प्रकार अपनी आवाज बुलन्द कर पायेगी? ऐसी सैंकड़ों–हजारों लड़कियों के साथ हुए बलात्कार को यह कहकर दबा दिया जाता है कि इससे हमारी समाज में बदनामी होगी। गाँव की लड़कियों को तो ये जानने तक का अधिकार नहीं होता कि उसकी किस घर से शादी हो रही है, उसका पति क्या करता है? उसके शादी होने तक उसे कुछ नहीं पता होता है।

परिवार नियोजन, दहेज प्रथा इन दोनों को मैं भ्रूण हत्या का सबसे बड़ा कारण मानता हूँ। कैसे? परिवार नियोजन योजनाओं का परिणाम यह हुआ कि बेटियों की संख्या लगातार घटती गई क्योंकि हर परिवार को अनिवार्य रूप से सिर्फ पुत्राधिकारियों की ही जरूरत थी। बेटों को प्राथमिकता मिली और बेटियों का गर्भ में गला घोट दिया गया। वरना शिक्षा, जागरूकता, साधन और स्वास्थ्य सेवाओं में तो अभूतपूर्व वृद्धि हुई थी ना। फिर लड़कियों की संख्या लगातार कम क्यों होती चली गई? दरअसल गर्भ निरोध गोलियाँ और गर्भपात के कानूनी अधिकार देने का मुख्य उद्देश्य औरत की कोख पर नियंत्रण करके राष्ट्र की जनसंख्या पर नियंत्रण करना भी था और स्त्री को पुरुष के 'आनन्द की वस्तु' बनाना भी। क्योंकि नसबन्दी तो दोनों के लिए समान रूप से थी फिर नसबन्दी के लिए सिर्फ महिलाओं को क्यों खड़ा कर दिया जाता है? दहेज प्रथा ने सबसे ज्यादा गाँवों को प्रभावित किया है। अक्सर भ्रूण हत्या के लिए वहाँ के नागरिक दहेज प्रथा को जिम्मेदार मानते हैं।

गाँवों में कौमार्य बचाए रखने के लिए स्त्री घर में कैद होकर रहे या घर से बाहर शिक्षा ग्रहण करने की कामना हो तो निरन्तर बलात्कार, हत्या का भय झेलती रहे। यही कारण है जो माता–पिता अपनी बेटियों को उच्च शिक्षा के लिए घर से बाहर भेजना चाहते हैं तो यही भय रूपी जल्लाद उन्हें अनुमति नहीं देने देता। एक लड़की का शारीरिक बलात्कार सिर्फ एक बार होता है किन्तु वह समाज उस लड़की का मानसिक शोषण न जाने कितनी बार करता है। क्योंकि हमारी मानसिकता इतनी नीचे गिर चुकी है कि हम उसी लड़की को दोषी ठहराते हैं। उसके पहनावे से लेकर उसके आचरण पर हम टिप्पणी करने से नहीं चूकते हैं। कुछ समझ नहीं आता कि कहाँ, कैसे, क्या और क्यों हो रहा है? कौन है इस नाटक का सूत्रधार? दिखता, सुनता कुछ है और अर्थ कुछ और होता है। बराबरों में बराबरी। बराबरी के मौलिक अधिकार का मतलब बताया जा रहा। उत्तराधिकारी के लिए सिर्फ बेटा चाहिए बेटी नहीं। 'बाल विवाह दण्डनीय अपराध लेकिन विवाह हर हाल में मान्य होगा'। महिला आरक्षण विधेयक पर जागरूकता नहीं।

समाज की दो रंगी नीति को बदलना होगा। अपनी मानसिकता बदलनी होगी। मानवता को जन्म देने वाली का शारीरिक और मानसिक शोषण हो रहा है। अतः आज समाज को अपनी मानसिकता बदलनी होगी क्योंकि उजाले की हकदार बेटियाँ भी हैं। इस तरह का भेद–भाव कर हम अपनी ही नज़रों में गिर रहे हैं। अतः हम सभी भारतवासियों से आग्रह करते हैं कि इस तरह के विचारों को अपने समाज में न पनपने दें। क्योंकि विज्ञान भी मानता है कि प्रकृति से छेड़छाड़ अच्छी नहीं है। प्रकृति में संतुलन जरूरी है, जब प्रकृति ही इस भेदभाव के खिलाफ है तो हम क्यों नहीं?

कुछ बुद्धिजीवियों का मानना है कि नारियों के पास निर्णय लेने की क्षमता नहीं होती, तो हम उनसे कहना चाहते हैं कि अगर भारत जैसे किसी बड़े लोकतान्त्रिक देश को एक महिला अर्थात् श्रीमति इंदिरा गाँधी नेतृत्व प्रदान कर सकती हैं यहाँ तक कि विदेश मंत्री, राष्ट्रपति, रक्षामंत्री, और भारत के सबसे बड़े बैंक की मुखिया एक महिला हो सकती है जिन्होंने इन पदों पर आसीन होकर देश में कीर्तिमान स्थापित किया है तो भारत की बेटियाँ किसी से कमजोर नहीं हैं। लेकिन जरुरत है उन्हें समुचित अवसर प्रदान करने की। लैंगिक समानता को समाज में स्थायित्व देने की जिससे कि वे पूरे विश्व में भारतवर्ष का मान बढ़ा सके।

महिला सशक्तिकरण की दिशा में कुछ प्रगति हुई है। लेकिन बहुत से ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ और प्रयासों की जरूरत है। देश में हर साल 4–5 हजार महिलाओं की प्रसव के दौरान मौत हो जाती है। इसकी वजह औरतों में जागरूकता का अभाव है इसलिए आवश्यकता है जागरूकता फैलाने की।

आशुतोष मिश्रा

पत्रकारिता एवं जनसंचार, प्रथम वर्ष

नारी शोषण

हमारा समाज दिन प्रतिदिन विकास कर रहा है पर समाज में आज भी नारी की तरफ कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जा रहा है। नारी की उन्नत स्थिति में आज भी हमारा समाज पिछड़ा हुआ ही है। एक तरफ तो बड़े–बड़े नारे लगाए जाते हैं ''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ'' 'बेटियों को शिक्षित बनाओ' पर समाज में नारी को वो इज्जत आज भी नहीं दी जा रही आज भी पुरुष नारी को अपने पैर की जूती समझता है, आज भी उनकी इज्जत के साथ खेला जा रहा है। एक तरफ तो महिला दिवस मनाया जाता है तो दूसरी तरफ उसी दिन कोई नारी किसी तथाकथित मर्यादित पुरुष के हाथों बलात्कार का शिकार होती है। ये कैसा महिला दिवस है उस दिन भी न जाने कितनी महिलाएँ ऐसे जाहिल पुरुषों की चपेट में आती हैं। आज तो हालात इतने बदतर हो गए हैं कि एक मासूम बच्ची पाँच–छः वर्ष की अवस्था में ही इस हवस का शिकार बन जाती है। जिस बच्ची ने अभी ठीक से आँख तक नहीं खोली। लड़कियों का तो एक कारोबार बन गया है। व्यापार के माध्यम से लड़कियों को खरीदा और बेचा जाता है। आखिर लड़कियाँ ही इन सब का शिकार क्यों होती हैं? आज भी दिन दहाड़े पुरुष इस हवस में निकलता कि कोई शिकार उसके हाथों लग जाए। ऐसा एक भी दिन नहीं जाता जहाँ कोई लड़की किसी पुरुष का शिकार न हुई हो। ये कैसी उन्नति है। लड़की जब घर से बाहर निकलती है तो उसे कितना समझा कर बाहर निकलने की अनुमति देते हैं। कहा जाता है कि माँ–बाप की इज्जत का ख्याल रखना, कभी बेटों को क्यूँ नहीं कहा जाता कि किसी की बहन बेटी की इज्जत पर बुरी नज़र मत डालना। ये कैसा समाज है जो एक तरफ बेटियों के नाम पर इतने बड़े–बड़े नारे लगाता है, विकास करने के सपने देखता है, महिलाओं को पढ़ाने के नारे लगाते हैं, पर अभी तक बेटियों की इज्जत करना भी नहीं सीखा है। ऐसे कैसे विकास करेगा हमारा देश? सबसे पहले हमारे समाज के लोगों को बेटियों की इज्जत करनी चाहिए फिर उन्हें उस मुकाम तक पहुँचाना चाहिए ताकि वे कल को अपने हक़ के लिए लड़ सके।

शमा परवीन

एम.ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष

बाल मजदूरी और नशाः एक अभिशाप

आज बाल मजदूरी और नशा बच्चों के कोमल भविष्य के लिए अभिशाप बन गया है। सीमापुरी जैसे इलाके में बच्चा–बच्चा नशे का आदी है। दारू गुटखा तो छोड़ दीजिए सीधा–सीधा ड्रग्स भी लेते हैं। शिक्षा की कलम उनसे कोसों दूर है। रुमाल में फ्लूइड़ डालकर सूँधना, इंजेक्शन से ड्रग्स लेना उनके जीवन को अंधेरे में डूबाता जा रहा है। जिसके बाद वो अपने–आपको ही भूल जाते हैं।

ये सब हमारी शासन व्यवस्था की करनी है। विकास के नाम पर केवल हरी झंडी दिखा दी जाती है। एनडीटीवी की सुशील महापात्रा की रिपोर्ट के मुताबिक दिल्ली के सीमापुरी इलाके में अनेक बच्चे नशे के आदी हो चुके हैं। शायद ये उदाहरण आपको डरा सकता है कि कैसे छोटे–छोटे बच्चों से लेकर बूढ़े, वयस्क, महिलाएँ, जवान खुद उस आदत को छोड़ना चाहते हैं जो पहले अपने हाथों से इसके आदी हुए थे। वे खुद इससे निजात पाना चाहते हैं। उनके मुँह से ये दर्द भरी आवाज कहती है कि हम जानबूझकर नहीं खाते, बिकता है तो खाते हैं।

विकासशील देशों में भुखमरी, बाल मजदूरी और नशा सच में एक लाचारी ही है। कहीं बच्चों को मानव ढाल के रूप में इस्तेमाल किया गया, तो कहीं आत्मघाती हमलावर के रूप में इस्तेमाल किया गया। भारत जैसे देश में बाल विकास योजना, महिला सुरक्षा योजना, किसानों हेतु कृषि योजना, बीमा योजना, पैंशन योजना आदि योजनाएँ विकास की डुगडुगी बजा रही हैं। अपनी चरम हँसी की बाहरी सुन्दरता तो कोई भी देश दिखा सकता है। हमारे नेता अपने कुछ भाषणों से तालियाँ तो बटोर सकते हैं। 'मन की बात' जैसे कार्यक्रमों से भला हो सकता है क्या? फ़तवों में उलझना भर रह गया है। लेकिन कब तक? दिनो–दिन लोग अच्छे दिन सुनते जा रहे हैं लेकिन रेडियों पर।

आज भी भारत, पाकिस्तान, चीन, तुर्की जैसे देशों में 14–15 साल से कम उम्र के बच्चे स्कूल का मुँह तक नहीं देख पाते हैं तो क्यों? क्योंकि कोई नहीं उन्हें समझाने वाला, विकास का मतलब समझाने वाला, शिक्षा का महत्व बताने वाला, उनके भविष्य की ओर देखने वाला, कोई उनसे नहीं पूछता कि तुमने निवाला खाया या नहीं। उन्हें तो ये तक पता नहीं होता आखिर उनके देश में उनके लिए कब और कौन सी योजनाएँ बनाई गयी भी हैं या नहीं। वह योजना उन तक कैसे पहुँच सकती है? न जाने कितनी योजनाएँ, संस्थाओं के द्वारा बच्चों के लिए सरकार खर्च करती है। लेकिन उन पैसों को तो बीच के दलाल ही जेब में ठूँस लेते हैं। उनके मौलिक कर्त्तव्य क्या हैं तो फिर किसके लिए ये योजनाएँ हैं? ये सरकार किसके लिए काम करना चाहती है अब। उनकी चीख सुनने के लिए कोई नहीं है। उनकी भूख मिटाने के लिए कोई नहीं है।

स्कूल तो उनके लिए आँख मिचौली का सपना भर है। जहाँ बच्चे महिलाओं की अण्डरवियर सिलकर, ब्रा सिलकर और कबाड़ा चूनकर पेट भरते हैं। वहाँ खेल–कूद तो कोसों दूर हो जाता है। माँ–बाप की आसरे की छत उनसे छिन जाती हो, किसी शराबी का साया पड़ जाता हो फिर उनके भविष्य की कल्पना की जा सकती है। आज झुग्गी–झोपड़ी में बच्चों की दुर्गति किसी अनहोनी से कम नहीं है। जो देश विकास का परचम लहराता हो वो देश इन नन्हें फरिश्तों तक तो पहुँचता ही नहीं। सरकार को जातिगत हिंसा बढ़ाने, फतवों में लोगों को उलझाने के सिवाए और काम नहीं रहता है। चाहे बात विकसित देशों की हो या विकासशील देशों की।

पोर्नोग्राफी के धंधे ने मासूमों की उम्र से खेल खेला है। जिसका एक बड़ा कारोबार चलता हो, जहाँ देश में अर्धनग्न तस्वीर महिलाओं की उतारी जाती हैं, जहाँ गोद लेने की बात की जाती हो। उनके नाम पर तो देह व्यापार किया जाता हो, तो बच्चों का क्या भविष्य होगा? डरती हुई मासूमियत कहाँ जाए? युनिसेफ अपनी रिपोर्ट में बच्चों को लेकर काफी सजग है। अपनी

एक रिपोर्ट में स्पष्ट किया है कि किस तरह संकट ग्रस्त इलाकों में भारी संख्या में बच्चों की जान चली जाती है और कई जगह पर तो उन्हें जंग के रूप में नियुक्त भी किया गया है।

पाकिस्तान जैसे देश का उदाहरण है जहाँ कम उम्र में ही बच्चों को हथियार पकड़ा दिये जाते हैं। कैसे 13–14 साल का बच्चा 45 साल के आदमी की गर्दन धड़ से अलग कर देता है।

उदाहरण के तौर पर संयुक्त राष्ट्र बाल कोष (युनिसेफ) के एक आँकड़े के मुताबिक, दुनिया भर में नए साल के दिन करीब 3,86,000 बच्चे पैदा हुए और 69,070 बच्चों के साथ भारत (69,070), चीन (44,760), नाइजीरिया (20,210), पाकिस्तान (14,910), इंडोनेशिया (13,370), अमेरिका (11,280), कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य (9,400), इथियोपिया (9,020) और बंग्लादेश (8,370) हाँलाकि रिपोर्ट के अनुसार कुछ बच्चे पहले दिन ही नहीं जी पाए। अगर इन आँकड़ों की बढ़ती संख्या पर गौर किया जाए तो न रोजगार मिल पाएगा और न शिक्षा पद्वति ही सुधरेगी। भुखमरी का शिकार होना लाज़मी है।

फिल्मों को U/A, AU जैसे सर्टिफिकेट दे दिये जाते हैं। असल में इनकी जिंदगी में झाँक कर कोई नहीं देखता। जो इनके लिए कुछ करना भी चाहते हो तो वो इतनी बड़ी मात्रा को एक दम साफ–सुथरा या शिक्षित नहीं कर सकते। 'स्लमडॉग मिलियेनर' फिल्म 2008 में बनने वाली एक अंग्रेजी फिल्म है। जिसकी पृष्ठभूमि में मुख्य रूप से मुम्बई के झोपड़ी में रहने वाले लोग हैं। जिसकी लागत थी एक करोड़ पचास लाख डॉलर तो वहीं इसकी आमदनी थी आठ करोड़ इकहत्तर लाख डॉलर। पर क्या फिल्मों, पटकथाओं, चलचित्रों, धारावाहिकों से ये भला स्लम एरिया और गरीबी दूर हो सकती है। इसके लिए केन्द्र सरकार और राज्य सरकार के बीच तालमेल बिठाना होगा।

भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने 2022 तक सबको घर देने की बात की है। लेकिन हर साल लोगों की झुग्गियों को उजाड़ दिया जाता है और लोगों को पुनर्वास कालोनियों में भेज दिया जाता है। पर असल में तो जहाँ इन्हें बसाया जाता है वहाँ उनके लिए मूलभुत सुविधाएँ ही नहीं मिल पातीं।

दिल्ली में ही लगभग 90 प्रतिशत झुग्गियाँ अनियमित कॉलोनी के रूप में सरकारी जमीन पर बनी हैं। जिसमें 46 प्रतिशत एमसीडी और पीडब्ल्यूडी पर, 28 प्रतिशत रेलवे और 16 प्रतिशत दिल्ली सरकार की जमीन पर है। अगर सरकार सच में विकास करना चाहती है तो बच्चों के कोमल भविष्य के बारे में कदम उठाना बहुत ही आवश्यक है।

प्रीति
हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार, द्वितीय वर्ष

वाह रे सत्ता....

जो चुप है वो ज्ञानी है
जो बोल पड़े अभिमानी है
पल–पल, क्षण–क्षण
आपस के समझौते
निरंकुश, निरन्तर फेरे
पात से टूटे, डाल से छूटे
डग–डग बढ़ रहे
उस ओर जिस ओर अकेले
बढ़ते अंधेरे दूर होते सवेरे
बैठी हुई सिसकियों के डेरे
मिलते बिछड़ते तारों के मेले
जड़ से चेतन तक असीमित इच्छाएँ
बिखरे हुए फूलों पर भंवरों के फेरे
दूर होते गुलों से मौसम की व्यथाएँ
बीते वक्त की हैं ये सदाएँ
सदाओं में उलझी तकती दृष्टि
मन ही मन से उलझनों में धीरे
पल–पल, क्षण–क्षण आपस के समझौते...

सौरभ मिश्रा
हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार, द्वितीय वर्ष

आँगन की चिड़िया

आँगन की इन चिड़ियों को
सड़क किनारे उड़ने दो
नील गगन को देख कर
एक सड़क से दूसरी सड़क पर
उड़ कर जाने दो,
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ।

सर्दी की ठण्डी रातें हों
गर्मी का गर्म मौसम हो
इन्हें सड़क किनारे ही बसने दो
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ।

पर कभी स्कूल मत भेजो
कभी किताब कलम मत दिलाओ
न कभी कुछ अच्छा ज्ञान दिलाओ
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ।

सपनों का मोल न बताओ
भविष्य का तोल न कराओ
सड़कों पर किसी दीमक की तरह चलने दो
इनके भविष्य से चंद पैसों के लिए खिलवाड़ करने दो
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ।

जब तुम्हारे पास आए ये बेटियां
गुलाब, गुलदस्ता, खिलौने लेकर
तुम इनका मजाक उड़ा कर
कुछ अपशब्द बोल कर सुना दो
ज्यादा पीछे पड़ जाए तो, दो तीन कान पर लगा दो
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ।

चलते–चलते कार के सामने आ जाए
शीशा पोंछ कर कुछ खाने को माँगने लगे
फिर तुम कार के शीशे ऊपर चढ़ा दो
ग्रीन लाइट होते ही कार आगे भगा दो
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ।

रात में, सुनसान सड़क
एक मासूम, एक नगर
इतनी ठण्डी में ऐसे ही तड़पने दो
इनको इनके हाल में मरने दो
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ।

20 का खाना तुम, 200 में खाते रहो
500 का कपड़ा तुम, 1000 में खरीदते रहो
इनको भूखे, नंगे मरने दो, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ।

नीरज कुमार सिंह
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार, द्वितीय वर्ष

अब हम दूर होने लगे हैं

न जाने किधर खोने लगे हैं?

न सुबह का ख्याल है।
न शाम की पहल है?

न अपनो का साथ है।
न गैरों का प्यार है?

न बातों की रातें हैं।
न प्यासे नैना हैं?

न कुछ बात रही अब दिल में।
न कुछ सपने आते इस मन में?

न तुम रही।
न यादें अब तुम्हारी?

अब हम दूर होने लगे हैं।
न जाने किधर खोने लगे हैं।
न जाने किधर.....?

नीरज कुमार सिंह
हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार, द्वितीय वर्ष

योग और युवा

आज कल के वर्तमान युग में योग युवाओं के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। योग का शाब्दिक अर्थ है–समस्त चित्तवृत्तियों से निरोध''। योग एक ऐसी क्रिया है जिसमें मानव की समस्त चित्त वृतियाँ, मन, तन मिलकर एक क्रिया करते हैं। युवाओं के लिए योग महत्वपूर्ण है क्योंकि आज की इस भौतिकवादी परिवेश में अच्छे स्वास्थ्य की माँग की जाती है। जिसके लिए युवा को योग की क्रियाओं में अपनी रूचि दिखानी चाहिए। हालांकि जिस प्रकार हम जानते हैं कि योग को भी अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता मिल चुकी है। जिसको हम 21 जून को मनाते हैं। सर्वप्रथम विश्व में योग दिवस 21 जून 2015 को मनाया गया था। तभी से इसे प्रत्येक वर्ष मनाया जा रहा है। आज के प्राथमिक विद्यालयों में 21 जून को सूर्यनमस्कार कराया जाता है।

योग युवाओं के लिए क्यों आवश्यक है?

योग की महत्ता अगर हम युवाओं के परिपेक्ष्य में देखें तो हम पाते हैं कि आज के इस युग में योग 'स्वस्थ जीवन की आधारशीला है अर्थात् योग से युवा अपने स्वास्थ को अच्छा बना सकते हैं। प्रतिदिन योग करने से युवाओं में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। अर्थात् जब युवा योग जैसी क्रियाओं को करता है तो वह अपने मस्तिष्क की सभी चितवृतियों को खोला जिससे उसके अंदर नए विचारों का कोष बन जाता है तथा समय–समय पर वह अपनी कुशलता के माध्यम से नई ऊँचाइयों को प्राप्त करता है। योग के कारण ही युवाओं की कुशलता में वृद्धि होती है। अर्थात् ऐसी क्रिया करने से युवा अपनी क्रिया को ठीक प्रकार से करता है।

आज के इस तनावपूर्ण परिवेश में योग इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि कई युवा प्रतिस्पर्धा के माहौल में जी रहे हैं तथा वह अपने इस व्यस्तता के माहौल में तनावपूर्ण स्थिति में चले जाते हैं। इसलिए आज के युवाओं को योग इसलिए भी करना चाहिए ताकि वह अपने मानसिक तनाव को कम कर सकें। योग की क्रियाओं में कुछ ऐसी भी क्रियाएँ हैं जो कि युवा विद्यार्थी के लिए अधिक आवश्यक हैं जैसे–कपालभाती, भ्रामरी, अनुलोम, विलोम जैसी क्रियाओं से युवा की एकाग्रता क्षमता तथा अध्ययन क्षमता बढ़ती हैं हम यह भी कह सकते हैं कि युवाओं में योग की साथर्कता इस प्रकार से भी है क्योंकि आज का युग भौतिकवादी हैं। यह युग अच्छे स्वास्थ्य की माँग करता है। युवाओं को अपनी रूचि योग के प्रति बढ़ानी चाहिए। योग के कारण ही युवाओं में व्याप्त डायबिटिज, जैसी बीमारियों पर कुछ नियंत्रण पाया जा सकता है। साथ ही अस्थमा, हाई ब्लड प्रेशर जैसी बीमारियों पर भी काफी हद तक नियंत्रण पाया जा सकता है। देश के जी डी पी (सकल घरेलू उत्पाद) की स्थिति को सुधारने में सहायक है।

समस्याएँ

आज के इस युग में योग को लेकर कुछ समस्याएँ भी देखने को मिल सकती हैं। जैसे कि कुछ लोगों का कहना है कि यह योग कुछ विशेष समुदाय से संबंधित है। साथ ही आज यह भी कहा जा सकता है आज योग एक राजनीति का मुद्दा समझा जाता है। अर्थात् योग के बीच में अब राजनेताओं का हस्तक्षेप होने लगा है। कुछ महत्वपूर्ण समस्याएँ यह भी हैं कि योग के लिए युवाओं में जागरूकता का अभाव है।

युवाओं का गलत रूझान

आजकल के युवाओं का रूझान बहुत ही गलत है जैसाकि हम जानते हैं कि आज प्रत्येक युवा 'सोशल मीडिया' का

शिकार है अगर युवा सुबह जल्दी उठ भी जाता है तो वह सबसे पहले अपने दूरभाष यंत्र के माध्यम से सोशल मीडिया का प्रयोग करता है तथा योग जैसी महत्वपूर्ण क्रिया को करना भूल जाता है।

युवाओं में गलत पेय पदार्थ (हानिकार पेय पदार्थ) का सेवन

हानिकारक खाद्य पदार्थों का सेवन करने से युवओं का स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन घटता जा रहा है।

निष्कर्ष : उपरोक्त बिन्दुओं से यह स्पष्ट हो जाता है कि आज कल का युवा तनावपूर्ण, व्यस्ता के माहौल में जी रहा है जिसके कारण उसकी मानसिक चेतना कमजोर तो हो ही रही है साथ ही उसका स्वास्थ्य भी बिगड़ता जा रहा है। इसका देश पर काफी गहरा प्रभाव पड़ेगा। कयोंकि इसके कारण भारत का जी.डी.पी. (सकल घरेलू उत्पाद) घटने लगा है क्योंकि यह युवा ही देश को किसी के समक्ष प्रस्तुत करता है। अगर वह ही कमजोर होगा तो देश की हालत बिगड़ सकती है।

पवन कुमार, हिन्दी ऑनर्स
प्रथम पुरस्कार निबन्ध प्रतियोगिता, योग एवं ध्यान समिति

एक भारत श्रेष्ठ भारत

भारत सरकार द्वारा 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' एक नयी और प्रभावशाली योजना है जिसके क्रियान्वयन की जिम्मेदारी नेहरू युवा केन्द्र संगठन दिल्ली युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार को मिली है। इसका उद्देश्य मौजूदा सांस्कृतिक संबंधों के माध्यम से देश के विभिन्न भागों में एकता बढ़ाना हैं इस योजना के माध्यम से राज्यों की संस्कृति को जोड़ना है।

एक भारत श्रेष्ठ भारत योजना के तहत दिल्ली के 50 युवा 13 दिसम्बर 2017 को सिक्किम गए तथा वहां 1 जनवरी 2018 तक रहे। इस कार्यक्रम के माध्यम से दिल्ली के युवा सिक्किम की संस्कृति को जान गए और वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य को देख पाये।

इसी क्रम में सिक्किम से 50 युवा साथी दूसरे चरण में दिल्ली आये। 11 फरवरी 2018 को नेहरू युवा केन्द्र, दिल्ली द्वारा उनका स्वागत किया गया। खेल एवं युवा कार्यक्रम मंत्रालय द्वारा सिक्किम से आये प्रतिभागियों के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करवाने की जिम्मेदारी रामलाल आनंद महाविद्यालय को दी गई। 16 फरवरी 2018 को महाविद्यालय द्वारा प्रतिभागियों के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

ए.के. गुरूम कार्यक्रम संयोजक, श्री वीरेन्द्र सिंह बाकेन सह–निदेशक, के.एस पारचा जिला युवा समन्वयक के साथ सिक्किम युवा विद्यार्थियों की टीम रामलाल आनंद महाविद्यालय में आई जिनका स्वागत महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता और डॉ. सुभाष डबास ने गर्म जोशी से किया। इस अवसर पर डॉ. नीना मित्तल कला और संस्कृति समिति की संयोजिका और डॉ. संजय शर्मा भी उपस्थित थे।

महेन्द्र कुमार
बीजेएमसी, प्रथम वर्ष

Who runs the world?

I remember overhearing my neighbour's conversation one day, while coming back from college. My neighbours, like any other middle class family were a couple with two children. They followed the same routine like many others, mother waking up their kids to get them ready for school and the father getting ready to go to the office. So back to my conversation I heard the adults talking about their daughters, now though they are still in school and will soon get over with it and their plans thereafter up until now, this seemed like a very normal conversation. But the next thing which I heard was something I did not expect, it froze me. Due to certain financial crisis, the father had proposed an idea of marrying off the elder daughter without waiting for her to finish school. I was appalled! This conversation kept ringing in my ears for a long time, till I finally decided to talk to my parents, hoping they could talk to them. The very next day, after both my parents went to talk to them I was eagerly waiting for a positive response but only heard a sad news. What's more shocking is the fact that before we could convince them further, within a week, they had shifted from the place and moved to Nagpur, probably to marry off the girl.

My reason of sharing this story is quite simple. The people whom we considered as well educated neighbours are they really? This turn of events made me realize how the mindset of people still is, even in urban metropolitan cities. Daughters all round the globe have always had to endure stuff- even if it means to get their basic rights. Why can't girls get the right to education?

Recently, Malala Yousafzai, a young girl who was shot because she was protesting for right to education attended her first lectures at Oxford University. This is just an example of one girl. There are thousands and crores of other girls who fought against all odds to not just provide girls their basic right, but also moved on to achieve wonders in their lives.

I feel fortunate to have received education and I also plan to study further. But would girls all around the world be fortunate to do so too? Beti Bachao, Beti Padhao- Girls should be well educated as to not be dependent on anybody. I am not even for a second denying the fact that the government hasn't started implementing in remote areas where girls are married off at an early age, to cook food and take care of their families.

Doctors, Engineers, Astronauts, Scientists, Teachers, Actors, Officers-you name it, girls and women have left a mark and have been successful at every step in their careers. Why deny the right to basic education?

In a nutshell, all I would like to say is that girls are capable of doing just as much (if not more than) as boys. It is high time to sit and watch and do nothing while girls endure the fight of deserving their rights. Lastly, I would like to quote a very renowned female artist- "Who runs the World? – Girls"

Zitni Handoo
B.Sc. (Hons.) Computer Science, IIIrd Year

Environment Today: Policies and Popular Culture

First of all we need to ask ourselves this question "Is environment a collective or individual responsibility?" I think it's an individual responsibility and if every person starts thinking this way, then the result would be a collective effort towards the environment protection.

"Swach Bharat Abhiyan" launched by Prime Minister Narendra Modi in 2015 was initially a great hit. Many, people including celebrities started cleaning campaigns, recording videos and uploading them on the social media so that others also become part of this movement. But after two years, are we seriously on a positive and productive way of achieving our target?

Yeah, we can't deny that completely as some cities and even villages are declared as open defacation free. But these efforts and programmes will not be successful till each individual takes responsibility for the cleanliness of the environment in which they live.

It has been reported that many people who live in slums use the property for commercial and personal purposes which have been actually allotted to them for building toilets.

To spread awareness even films such as "Toilet-Ek-Prem Katha" play a crucial role as it could reach larger masses.

Festivals such as Dussehra and Diwali bring in joy and happiness, But one more thing they bring in is "Pollution". These festivals have religious sentiments attached with them, so government feels itself restricted in these issues. The order of banning sale of fireworks in Delhi/NCR is the major step taken by the government. Government also discourages the practice of burning of waste which is a major cause of pollution in Delhi after vehicle emissions. According to me these are only temporary solutions. Just banning the sale resulted in economic losses for all the traders and sellers of crackers.

The farmers quoted that they have no choice except burning the stubble as eco-friendly solutions are not "economic friendly" Simply they couldn't afford them!, There is short gap between winter and summer crop seasons. Eradicating stubble is necessary. They could use it as manure but requires more electricity and water supply.

There should be a proper waste management system, this is the area where Indian government lacks. To make stubble as resource, as its burning causes immense air pollution, farmers should tie-up with various thermal and power industries, so that it could be used in power generation. Proper warehouses should be established so that stubble could be stored by farmers for cattle feed and for later purposes.

The farmers who are willing to take up individual responsibility for the environment are failing due to organizational mismanagement.

So, this is true that environment protection and safety is an individual responsibility, while government support and necessary resources are must.

Simran Mehta

B.Sc. (Hons.) Computer Science, IIIrd year

Real and Imaginary

Everyone has a bubble inside which they live. Outside this bubble, they do have social interaction, but people may choose to reveal only a few things about themselves which they might want the world to know. Or to put it in better words, they choose to hide their insecurities, their vulnerabilities, their deepest fears, their deepest desires which they might not feel comfortable telling to the outside world. But inside the bubble, things are different, only few people are allowed, people who can be trusted such as mothers, fathers, brothers, etc. The extreme heights and depths of emotions are felt inside this bubble.

But for some people, this bubble is a concrete stone like the imaginary wall. The walls become thicker and thicker as the mistrust of the outside world increases. And one day you realize this wall becomes so thick, you realize you cannot accept any new person into your personal life anymore. But how does this happen? Here's how it happened with me.

As a child, I was a very social person. I talked to every other kid easily, made friends easily, there was no wall, only a thin bubble. See as children we think of our selves as invincible. We never think of life in terms of mortality, life and death. Crying comes easily to us. I was one such child. Then I grew up. The walls grew thicker and thicker. I was talking to people in real life, hardly paying any attention to what they were saying. I was afraid of the future, afraid of getting old. Death did not scare me. Pain of death scared me, helplessness scared me. And when realization dawned on me, I was drowned in sadness, with no one to help me. No one understood what I felt, no one sincerely cared what I was going through. Life felt like a waste, because we live on an average for 85 years, 20 years of my life were already gone, and I still wasn't doing anything that I would want to do. I would go to college, attend classes half hearted and come back, straight to home I barely talked with anyone, and the wall between the outside world and my personal life grew thicker. At home I would just sleep for 10 to 12 hours while morning would bring sadness. Why am I living? Why would I want to grow older when my childhood is gone. I see kids younger than me accomplish things that I never could accomplish in other 20 years. My parents would not understand. They would ask what is wrong, and I would say " I fear getting old, I fear I may be never rich, I fear I may turn ugly 40 year old and do a job that I don't want. I want to escape this." And my father's reaction would be, "People don't live to enjoy their hobbies, and stop wasting your time thinking about these things." As if just by saying " don't think" will the problem cease to exist. If we don't live to enjoy life, then what do we live for? 60 years of your life wasted in slogging and complaining, is not a life which was supposed to be a gift; its over in a blink. People say work hard and future will be better, but I want to ask these people, for how long do we continue doing things, just hoping that things will be better. What if they never get better? I would be furious with anger, because I was promised better things. But anger only ruins energy and happiness.

All these emotions, I keep bottled up to myself. I tell my friends and they say " Enough! You only whine & complain" so I shut up and resolve to never tell them anything. I prefer to build my wall thick & thicker. But I am tired of living like this. I am tired of living in constant fear. I choose to escape into day dreaming, dreaming of a happier life. I become so involved in my dream world that I miss my real life priorities and deadlines. So people call me, telling me that I have exams and arrangements. All these conversation are formal in nature of course, none caring really to ask how I feel. And now I fear when my phone rings, fear that I might have to live in the real world. I don't want to live in the real world. I don't want to live in the real world. The walls around me have grown thicker. And now I am tired of everything. But I fear the walls have grown thick and strong, that they may never break.

And I still work up thinking what are we living for? And when I go to bed I fear that I have grown another day old. So the walls around me are built even thicker and stronger.

Ankita Prunima Sahu
BSc. (Hons.) Computer Science, IIIrd year

Another Brick in the Wall

Sitting inside my room, and staring at the walls every day and night, even while crying, they may see me sometimes, but never speak a word. But I, overjoyed with humanness, sometimes yell at them, even scream and if okay, even share an incident or two.

And when I think of these walls, I recall my school friends, my family, my relatives and everyone else who behaved like those walls in my life. I wonder if there's any difference between those walls and these people, because they both make me feel the same, lonely and afraid, lonely as none of them talks, and if does, never about the things that matter, and afraid because they never protect me, they themselves are so fragile to do anything.

In my school days I was bullied being the weaker one, the one they could spank or beat any time or throw words of disgrace as they pleased, because I was not the one who could fit in, as I was a boy, with feminine traits, and I could never understand what they meant when they called me a gay. And it was not only them, even my mom and dad did the same, they taught me now to fit in, even though I never wanted to do that, but who cared.

It were these brick like people, the cold hearted ones who became a wall around me. Stopping me from being free. I suppose we all are born like fluids, tender enough to flow in our own ways, but it is these walls that shape us into a solid brick-like figure and we continue to do the same for others.

But my question is why? Why have we become a concrete brick, why can't we express what we feel, why people are not ready to listen, why we keep things inside our selves for so long that we suffocate till death, why are we becoming another brick in the wall, why have we become so comfortably numb?

May be it's because the civilization demands it, it wants all of us to be the same robotic product, alienated from our existence, from our feelings. We all are different so how can we go through the same machinery and if we do, what would be the consequence? A flawed product, which we all are.

The water in the river is beautiful, we embrace it, and it gives us peace and a little escape to be the water for a while, but when the same water comes to our house, through the tap, it remains no-more beautiful, no more peaceful and I wonder if the same is happening to us.

We all are becoming the brick, forgetting our existence as free flow water to make this wall stronger, to cage some more water to suffocate some more to be the end of the humanness on this inhuman planet.

Aniket Chauhan
B.A. (Hons.) English, IInd year

My Angel

Special Person
My Angel
The whispers of first shower
The inshouting aroma of soil cover
The sleek sound of someone coming hear
That break my nap as it becomes clear
The murmurs of someone's singing
That fills my soul with new lightening
The view of snow-covered mountains
My dirty clothes full of oils
The dishes served in the mess,
The left out milk lying in my glass
Every scolding, every appreciation
Every happening that caused depression
Every fest, every celebration
My life's every new incarnation
Reminds me of a special person
Who sacrificed her life for me,
With full dedication
She is my Goddess my ideal
My means of life and survival
She can only be my Mom, my Angel
Yes, She is my Mom, my Angel

Mansi Yadav
B.Sc. (Hons.) Microbiology, IInd Year

Freedom within Boundaries

We have crossed sixty five years of independence. And with this independence, I think every citizen of India realises its importance as we have struggled a lot to attain this independence. The day 15th August marks the anniversary of freedom and is celebrated almost in every corner of the Country.

We were not just freed from the British Raj on this day, we got certain priviledges that Indian government promised for every citizen. And in these years, they also succeeded in providing the individuals with their freedom and right. As an individual, we have freedom of everything, but does this freedom really exist??... Are we really free to choose our path…?? Sometimes when I see the children of slums roaming, and picking garbage…, did they chose that life or something pushed them to that wall of life?

An individual from birth is not free, they are always kept within boundaries. The wall that is difficult to cross in ones, whole life. We are free to choose anything that lies inside that wall. My wall of religion, that exist from birth which doesn't allow me to worship other form of "My God". I am a human, I want to do things anytime and anywhere, I want to enjoy my freedom.. but these walls of societies created by us only, doesn't even allow me to breath the air.. the fresh air.

I thought freedom means, that I am free to move wherever I want, I am free to move whenever I want, I am free to sing if I don't want to study, I am free to fly beyond boundaries, I am free to eat whatever I want, I can go roaming at night to the beautiful places that looks great at night…. But this wall, around me is soo high that it cannot be crossed, and still I am free. I also celebrate my freedom every year. May be someday I will also learn to enjoy my freedom within this wall

Vaidehi
B.A. (Hons.) Political Science, IInd year

She sang to me

She sang to me
A paint lullaby
Or painted lullaby
Etched in a corner
Of my numb mind
Her calloused and wrinkled hands
Caressed my hair in pauses,
Running her thick fingers
Through my tangled hair
I heard this lullaby
Some fourteen years ago
And yet it feels as fresh
And melodious as ever.
I want to close my eyes
Yet I cannot,
For I could never hear
The story of the king
As I recall the lyrics
Sung in her monotonous voice
It gives the accusation
Of an unraveling mystery
Suddenly her voice breaks
She pauses and I know why
And she continues to sing
In the voice I am used to hear.
Her fat lap and stout fingers
Give more comfort
Than the dull hospital ward
And the foreign pillow.
My mother is beautiful
In her grace and strength
Without her inner devastation
And bid me a sweet goodbye
I am not afraid to die,
For I spend my last moments
In a place I call home
My mother's eternal lullaby.

Sukanya Dev
B.A. (Hons.) English

A Girl Educated is A Family Educated

Though the world is mordernising day by day, still there are some aspects which prevail by our surroundings. One of these is the education of a girl child. There's a popular saying, " When you educate a boy, you educate a person, but when you educate a girl, you educate the whole family."

The girl child is always looked as a woman who'll serve another family when she grows up, doing household chores and then eventually as a mother. So this, concludes that education will play no role in her life. But when' if' we think about it in depth, we realize that education not only plays a role in getting good grades or securing a job, but also affects our logical thinking and analytical perspective: at how we look at things and deal with critical situations in our day to day life. In this fast moving world one cannot lag behind just because of the orthodox mentality of few people. Although it is very prevalent in a country like ours where a baby girl is murdered as soon as she is born.We'll be the ones who will grow up to become the future of our country. Education days is a coerce of respect. The more you are qualified, the more you educated, the more respect you get. Education is a legal right and it should not be snatched away from anyone.

As we have seen, many women have created history in the past. Kalpana Chawla, Indira Gandhi, IPS officer Kiran Bedi are just a few names but there are hundreds of such women who have brought a revolution. They have proved themselves at every level and in every aspect. Education never goes waste. Why are they then reluctant to educate their girl child while the boys are sent to school with pride? If we check the records of schools there's a horrifying discovery that the number of girls enrolling is much less than the boys. Not only this, the dropout ratio of girls to boys is also very high. Since I am from a technical background, I want to throw light on this topic that very few girls are admitted in technical courses, since the subjects are considered tough and complex. Ironically, the first computer programmers were women. Now, who doesn't knows about Ada Love Lace, who is renowned for her computing and programming skills. The government is also taking steps to promote the education of girls at a high level and someday, I believe they truly will succeed. Also, its not that the government but all bearers of society must come together and make concrete effort towards education. Educate a woman, you'll see the difference she makes through ages and centuries.

Vani Gupta
B.Sc. (Hons.) Computer Science, IInd Year

Millenials and Management

Born between 1900 to 1999 are the
Group of millenials
Cool headed, open minded, confident
Homo sapiens
Have dreams in their eyes and fire
In their belly
Sticking to their unrealistic hopes
Just like a jelly

If millenials were a hand, management
Would be a glove
Because survival is impossible without
Managing work, family and love
This cool generation is busy sorting their lives
While living on the verge of deadlines
Awaiting them like knives

The extraordinary combination of
Millennial and management
Is like an agrarian alien meeting
A bubble of excitement
The bubble shall burst and spread
Glitters of happiness
Because all things sorted can
Vanish aways a millevials weariness

The sparkling eyes of a millennial need not
Stick 9 to 5 to a computer screen
By effectively managing anise they can
Spare some in exploring places they've never been
Their monotuous life can turn into
An enthralling ride
Only and only if millenials choose to
Awaken their managerial side

Waking up early, listing out Goals
Getting a work life balance without
Burning their pocket with holes
Going eco friendly, eating healthy
And staying fit
Millenials managing their lives
Would be totally lit

So gear up millenials, pull up your socks
The World awaits your greatness held
Behind your insecure locks
Manage your time, work, emotion & finance,
Stick to your goals like a glue
And watch how beautifully life upfolds
And all your dreams come true!

Ojasvita Arora
B. Management Studies, Ist Year

I am the one that you kill, every day

Oh! Yes you see me. You see me when you go to the beaches; you hear me breathe when you stand on the beach you watch me speak when you shout at the mountains. You watch me on a map when you visit a desert. You watch me smile when you see endless grasslands. But, the issue I have with you is that, why can't you see that I am dying? Yes, we do interact with eachother, but that interaction is very one sided. So, today I'll tell you, why am I angry with you.

Do you remember, when you tried to make sense out of me, in your infancy. You used to touch me, you used to take my help in order to feed your stomach. Yes you did give me some scratches but that was all okay! Then, slowly-slowly you understood my language and started to produce food and shelter while conversing with me. But somehow you grew arrogant thinking that you knew me better. The increase in your food production resulted in the growth of your breeding process, and you started to grow in numbers.

And I don't exactly remember the time, but I know that it was long ago from now, since you neglected me and drew your focus on enslaving the people you call your brothers and sisters. When did it all change, and you just became involved in the business of master-slave, lords-serfs and now owners-worker I understood that all this while that you did not know the science of life and me, but I was wrong. Who knew that the noble discovery of atom and nucleus in order to understand the very nature of life, would be used to create bombs and blow up the island called Japan. Never knew that the invention of aeroplane will be used to drop bombs on me. Never knew that in the name of "infra structural development" you would cut me into pieces and burn my skin to ashes. Never knew that you would become so hypocrital that you wouldn't even provide " Official" for the schemes that you launch for my protection. Who in this cosmos would know that your definition of growth, progress and development would mean utter destruction, pollution and chaos in the environment . In order to build up new houses, what you actually do is take away the houses of some people and give it to other people, and these are the people who you call brother and sisters.

Right now, I don't even expect any sense from you. What I say through floods, earthquakes, hurricanes, landslides, and other national calamities are falling on leaf ears. You have turned yourself into a monster, who is just there to destroy. When will you be listening to me? I believe that while looking at the current picture, in which the poor are dying due to lack of food and rich are provided with a variety of food products, when in the name of progress you create new gadgets but not new ways of protecting the unprotected, the time is not far when you will colour the last drop of my water black, when you will crush the last mineral I can offer.

I guess that will be the time when you will be able to and willing to listen to me, but the truth of the matter is that, I would not be alive at that moment. You say to your people "Our environment"! I ask you, How?

Parikshit Sharma
B.A. (Hons.) English, IIIrd year

Battle of Known and Unknown

"Don't ask anyone to do wrong because they can do the wrongest of all wrongs that have ever been wronged." Well a satire for this so called highly educated society.

No matter what you do, no matter where you go, no matter how you do and no matter how much freedom you seek, there are always concrete walls around you which stop you from doing something and these concrete walls are also known as mind-sets of the people. The mindset of this society has got so much concretised that they forget about the well being of the society.

As a writer of this essay, I don't mean the walls are just around me, the walls are around everywhere. I have seen these walls reducing the sense of freedom of our individuals, I have seen these walls creating hierarchy in society, between humans in terms of girls and boys, male and female, masculinity and feminity. Further hierarchy on the basis of deep critical evaluation of humans in the terms of lesbian, gay, transgender, homosexual, and God knows what else. I mean the walls around us have successfully divided human but it seems very direful when the feeling & emotions are also categerised, according to the further concretization of humans. It is something like categorization of an infant first into girl or boy. Then further deep categorization of things like what he/she will wear whether skirts, frocks or jeans and clothes of colours other than pink, what toys will he/she play with like dolls or guns, etc.

The matter of fact is that we can easily break the walls which are visible but we can't even shake the walls that are invisible and prevail every where and travel and change destinations according to human beings.

Several times, questions have been raised to help break these walls and several attempts have been made, amending our Constitution, inserting new laws, provisions of protection, several new authorities but the paragon of not accepting these norms remains in the society.

Laws for name have been passed on paper and are ready to be practised in the judiciary but it hardly percolates in to the depths of society. As far as education is concerned there have been several reforms since Independence. The reforms which were expected to change the thinking and pattern of society, have not yet achieved anything of lasting value Where they have, it has not been radical. It is because of the predominance of the old people and the thinking which fills the minds of our parents which can yet be seen, for example in case inter caste marriages. Once you attempt to bring up this subject, you will see that society is divided into so many different fragments.

The fault does not lie in education, but in time; these walls will start eroding with time as we have seen erosion of sati-pratha, zamindari, untouchability etc. It took its own time. In the same way, it will also take its own time when the reason would lead to predominance of new behaviour opinionist thinking of the orthodox adults. Just as the old leaves fall and new ones sprout, the plant looks fresh and green, in a similar way when the new generation will start bringing change the things will change and by the way the roots of the tree we know will remain same, that is humanity.

I would rest my words by saying
Wake up India it's the time to change,
While sleeping you will gain nothing,
This is the time when you can do
and it will be very kind of you.

Krishna Kant
B.A. (Hons.) Political Science

Our Freedom and Education

Schooling begins at a very early age. It is a popular belief that educational institutions help us attain that which, is a ticket to a stable livelihood. The sad fact, however, is that information as "Knowledge" passed on from the teacher to student is restricted to the four walls of the classroom. These institutions function on the principles of obedience and punctuality so that the space for free expression and reason can be shattered to pieces by authority. These principles are instilled at such an early age that the student without giving a thought succumbs to the supremacy of the prevalent authority for he has been taught to simply adhere to the set rules and regulations of these institutions. The idea is to provide a rehearsal and test them in society on the basis of what is retained in the memory. This concept nurtures inferiority and convinces the student that he/she is not fit for the ideal dreams that the schools set for the students. Failure is received with punishment and creates division among the students which affects their conscience severely.

Let us for instance take the concept of the distribution of the streams of subjects. (Each stream has set score, and the failure of achieving which shall not provide a chance to attend its classes, thereby curtailing the vastly flourishing freedom that lies in education). In today's scenario, there is special emphasis laid on the free will of the teacher rather than that of the students and in this procedure the path of education is brutally injured. Education always has excited the mind of humans. It has been used and manipulated with respect to environmental needs.

In my not so humble opinion, freedom of speech and expression seems to be a myth in a society blinded by dogma, malice and whenever I pass by the zoo and watch wild animals roaring in cages, it reminds me of freedom. For is freedom too like the wild animals kept in enclosure of religion and power?

It is perhaps the beautiful thought of expressing the truth that has time and again been obscured to fulfill selfish motives and goals. It is immediately at first glance received as threat for challenging authority which can threaten the status-quo, leading the prevalent structure vulnerable to destruction. They who have obstinately revealed the real fangs of the ruling powers and challenged authority at point blank, have been sent to their respected graves. It is however important to understand that ideas will for ever be bullet proof and they will constantly multiply like the cosmos. Gauri Lankesh, Dabholkar, Kalburge and Pansare are examples of such break free from the shackles of the social evils and give you longer the complete freedom to reason with what your kids receive.

Kaushik Prasad
B.A. (Program), IInd Year

Promises are Just words...

From to be good….To…..Be great.
From lemons….To….chocolate.
From Whats App's screen….To…. Google's screen
The distance Between
These two
Depends on you

Use your Nerve
To better Observe
And work until you think
Today you Deserve
Better
Than yesterday

You can contact me
Whenever you need me
But still she has no one to open
Her heart to
In the end….
Promises are just words

Anonymous

Dubious Resolution

After celebrating a blissful Christmas and giving fervent farewell to 2017, we give a warm welcome to 2018. Like every year there comes a list of never-ending resolutions.

Loose weight- >exercise daily->getting up early->end up with snoozing alarm clocks 6:00, 6:10, 8:00

Two types of people exist for this matter (I think you all may have guessed them already), the ones who actually keep them and others who try to keep them for the whole year!

And with true modesty I fall in the second category as some of the resolutions are transgressed in a week itself. According to a study made, only 8% of the people achieve their New Year goals.

Why is it so that we are not able to stick to our resolutions?

Why after sometime we found them daunting and leave them?

Suppose if you were asked to walk on a plank on the floor, you would do so without question. Now the same plank is placed twenty feet up in the air between two walls, would you walk on it? Your desire to walk would be counted by your fear of falling.

Thinking over the solution, I am not going to psyche myself to achieve goals that I inevitably give up following a crushing sense of failure. Instead there will be a to do list that I hope to achieve and work towards it, reckoning the progress I made.

Two of them are:

- Devour up on the books that I wanted to read but never got around to starting. If I am able to read only one, I try to learn as much I can.
- I would try to make my previous year fitness goals more achievable and amicable and appreciate myself for those 3 days a week I struggled to get up early to walk.

To achieve something, live in the state of being and you will see the fears of failures vanishing!

So, what are your New Year plans? Is this your year to sparkle?

Simran Mehta
B.Sc. (Hons.) Computer Science, IIIrd Year

A Description

It's the caressing fingers of your beckoning legs that push all my thoughts into an idle corner of my brain…….
It's the flawlessly designed shape of your lenient waist that compels my licit mind to commit a sin……..
The flocculent muscles of your spineless belly repeatedly instruct me to take a long nap on it and to etiolate myself in your world of tenderness for which my frivolous soul was starving……
I can still see your altruistic hands calling this petty soul for locking into its bounteous lap……..
Still I can imagine your enticing neck which is waiting for a flimsy touch of my lips…….
I am erroneously missing those admirable eyes that never fail to fascinate me…….
That one stare at me is enough to show how much solicitude is prevailing in your heart for me……
That luscious nose whose one touch with my lips takes away all my pain…….
But dear……
I am such an exhausted soul that has always tasted the bitterness of failure in his life….
I'm such a rotten personality who doesn't know the meaning of genuineness
So annihilating the things….ignoring the things…..staying alone …are the only options that are left with me…..

S Abinash
B.Sc. (Hons.) Geology

Why Should I be Sophisticated Always?

I am a Girl…. So What? Is it always necessary that I have to do everything according to what people expect from me? The moment we step out of our houses, we face creepy stares of perverts and judgemental stares of the Aunties who never leave any opportunity to judge us from what we are wearing? Where are we going? At what time are we coming back? These kind of people only know how to make trivial thing related to girls a big topic for their gossips.

Being a girl, we get comments on how we look? How we walk? How frizzy our hair is? Why do we wear such and such kind of a tight dress? Why can't we cook? These are the things every girl comes across while growing up from the relatives and the people living around.

I want to ask these people in our society that is it important that girls have to be perfect in every field of life? Obviously, I am a human first and then a girl. Why are we supposed to listen to what society wants, sacrifice our dreams and work accordingly? Is it a duty that women have to be perfect everywhere in all the phases of life? She is not a robot, man…. When is this perception going to change? When is this society going to understand that she too can lead it on her own terms…

Gurpreet Kaur Randhawa
B.A. (Program), IIIrd Year

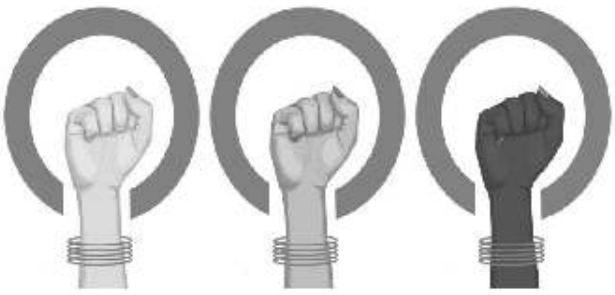

She is the Princess of his Heart

She is silent, but still brave
She is a warrior, still a slave
She is broken, but still cares
She's unexplainable

She is the princess
I will remain the one
Because now she knows
She doesn't need any other king to own her kingdom

She is the princess of his heart
She is the warrior of his life
She is the care taker of his health
She is the sole listener to his stories
She is the toy of his fatherhood
She is everything of his world
All he has is She

On my way from work to home
I thought about the one who love me the most
What can I do to bring smile on her face
Ice cream will do this job the best.

So I reached home…. With a gift
That single ice cream made a twist
Changed her day into a better one
And I feel in love with that smile like no one

You deserve better
When you do better
Work better, grind better, present better
And, make yourself better

When the two best friends roam round the garden it blossomed like spring
But autumn takes over when he left her friendship to tie love string.

Muskan Mittal
B.Sc. (Hons.) Microbiology, Ist Year

A Letter of Desperation

Dear Hermione,

Into and through, you take me on a ride, some sight seeing at the hallmarks I have created through my failures and yet another failure. Cause you see, you and I, we have a lot in common. Anti-social? Check; Book worm? Check; Bushy Hair? Not exactly; Friends with the comb? Check.

But intellectual ? Never mind.

I have seen you, admired you grow up from the most inappropriate, out of place, eleven year old muggle, to a lady who seems to be at the right place, at the right time. The even-tempered peace maker, the secret keeper saving every day there is.

But engaged in all these fascinations, I failed to grow up with you.

Cause Hermione, I am still a sea of sweaty hands nodding along teacher's pet- madly in love with my best friend and miserably trying to fall out of it- running away from confrontation, unwelcome intrusion.

There should be an explanation

I must have missed a sequel where you learned to build up the courage to punch the douche-bags right in the face. Where you proved that all the sleepless nights invested into studying , all the marked sticky notes, all the notes that you lended but never received back, all the novels that you purchased lying underneath the file of your syllabus books, ignored, forgotten will not just limit you be picked on, being called a geek but are another step on the ladder to reach the Ministry of Magic. So me? I am just a hopeless enthusiast who has rotten your back day in, day out. Because looking at you grow up, even if absurdly so, I see hope for myself. Even though, just like the unspoken rule of yours, I go to the library whenever in doubt, what I secretly hope for is that, at the end of this all, it will be me who will be asked out by the student cum celebrity and emerge into the most beautiful girl from the hideous tomboy that I am. With an exasperated, queerly adult head-shake, fingers crossed always.

Annie Arif
B.A. (Hons) History, IInd Year

My Thoughts

Respect the old when you are young
Help the weak when you are strong,
Confess the wrong when you are wrong, because, one day in life you will be old weak and wrong.
Life gives us new lesson each do not for learning but to improve our understanding
We can wear smile even when hurting and feel happy even while unhappy. It is called strength.
Live in present make present the most precious time because present will never come again.
There is no elevator to success you have to take the stairs

Kavita
B.A. (Hons.) Hindi, IIIrd Year

New Expectations...

प्रशिक्षु पत्रकारों द्वारा विदाना का दौरा

किसान की आय दुगुनी लुवास और आयुर्वेट के प्रयास

A drive to the past through the curriculum

Nijhawan Group enters into a joint venture with Ram Lal Anand College, University of Delhi and launches a "Certificate Course in Heritage and Tourism Management"

By Ankita Jain

A Gold Medalist Student Address

Graduation, the stage of life which provides a lot of opportunity for academic and personal development as well and I feel extremely happy when I say that I have utilized every second of that precious time in learning new things at every instant. In geological terms, I got the significant amount of cementing material (academic resources) for developing a strong lithified foundation for upcoming career and I express my sincere thanks to the whole workforce of this foundation who guided me at every stage of construction and provided me the best solution for every problem.

Apart from theory course works, field trips and small projects helped a lot in developing the team work skills. They were essential because now we all are at a position where there is no place for intra-class competition as the dreams now are much bigger than that. Group discussions, tea time debates etc. among the colleagues on current researches and innovations worked as knowledge sharing channel and it broadened my knowledge in various fields.

Let me sum up whatever I want to share with current and upcoming students, with this statement....

"Without focusing on the empty part of a glass, if we focus on the utilization of filled part then the final resultant will be self-satisfaction and happiness that is what each one of us wants to achieve in our life." All the very best for your dreams.

Nitin Kumar Khandelwal
B.Sc(H) Geology Passed in 2017 from RLA College
(Gold Medalist)

गाँधी स्टडी सर्किल

गाँधी स्टडी सर्किल, राम लाल आनंद महाविद्यालय की एक महत्वपूर्ण समिति है जो विगत दो वर्षों से शिक्षक एवं छात्रों के निरंतर सहयोग से महाविद्यालय में महात्मा गाँधी के विचारों को परस्पर आगे बढ़ाने का कार्य कर रही है। गाँधी स्टडी सर्किल के संयोजक डॉ. देवेंद्र कुमार के अथक प्रयासों से समिति विभिन्न तरह के आयोजनों का सफल परिचालन कर छात्रों के बीच महात्मा गाँधी के विचारों को समृद्ध करने का कार्य करती रही है।

गाँधी जी के जीवन एवं विचारों की महत्वपूर्ण भूमिका को परस्पर बढ़ाते हुए गत 16 अक्टूबर 2017 को इस समिति ने डॉ. देवेंद्र कुमार के मार्ग दर्शन से एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता एवं पेपर प्रेजेंटेशन का सफल आयोजन किया जिसमें महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। विजयी प्रतियोगियों को प्रमाण पत्र और धन राशि द्वारा पुरस्कृत किया गया। विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं आयुषीनेगी, अंजलि सिंह एवं धरुव। इन दोनों ही प्रतियोगिताओं में 80 से भी ज्यादा छात्रों ने अपनी भागीदारी दिखाई। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता को सफल बनाने में डॉ. कृष्ण गोपाल त्यागी का अहम योगदान रहा जिन्होंने कई चरणों में गाँधी जी के विषय में कई अच्छे और घुमावदार सवाल पूछकर प्रश्नोत्तरी को रोचक बनाया।

कई अन्य कार्यक्रमों को समिति के अन्य सदस्यों डॉ. सुभाष चंद्र डबास, डॉ. अर्चना गौड़, डॉ. राजेंद्र सिंह, डॉ.राजेश गौतम एवं सुनयना शर्मा ने समय समय पर सक्रिय भूमिका निभाकर सफल बनाया। पेपर प्रेजेंटेशन में डॉ. अर्चना गौड़ हिंदी विभाग और डॉ प्रेरणा दीवान माइक्रोबायोलॉजी विभाग ने निर्णायक मंडल की भूमिका निभाई। वहीं, 27 एवं 28 फरवरी 2018 को क्रमानुसार एक निबंध प्रतियोगिता और एक संगोष्ठी का आयोजन किया। इन कार्यक्रमों में भी छात्रों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया एवं अपनी रूचि दिखाई एवं गाँधीजी के विचारों तथा उनके मार्ग दर्शन पर जीवन में आगे बढ़ने का संकल्प लिया। 27 फरवरी को विभिन्न विभागों के 25 विद्यार्थियों ने निबंध प्रतियोगिया में हिस्सा लिया जिनमें कर्णिका चांदना, शिवपाल चावला एवं विपुल मंगला ने प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार प्राप्त किये। डॉ रमेश भरद्वाज, संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालयने 'इंटरप्रेटिंग गाँधी इन द कंटेम्प्ररी इंडियन सोसाइटी' विषय पर अपने विचार विद्यार्थियों के समक्ष व्यक्त किये तथा उनके प्रश्नों का समाधान किया। गाँधी स्टडी सर्किल जो कि विगत कुछ वर्षों से अपनी सहभागिता एवं सक्रियता नही दिखा पा रही थी वहीं गत अंतिम दो वर्षों से इस संगठन ने डॉ देवेंद्र कुमार के मार्ग दर्शन द्वारा महाविद्यालय में एकबार फिर अपनी सक्रियता कायम की।

इस संगठन के पुनः उद्भव में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ राकेश गुप्ता का अहम योगदान रहा है। जिनके संरक्षण एवं दूरदर्शिता से विद्यार्थियों को गाँधी क वैचारिक सौंदर्य का मार्गदर्शन मिला। इस संगठन का एकमात्र उद्देश्य गांधी जी के मूल्यों, भावों, विचारों एवं उनके सपनो का भारत बनाने में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका को प्रगति के पथ पर अग्रसर करना है जिस के लिए गाँधी स्टडी सर्किल निरंतर प्रयासरत है।

सचिन कुमार
बी.ए. ऑनर्स, इतिहास द्वित्तीय वर्ष

''हिंदी साहित्य परिषद्''

हिंदी विभाग के अंतर्गत ''हिंदी साहित्य परिषद्'' का उद्देश्य विद्यार्थियों की प्रतिभा को उजागर करना है। इस वर्ष ''हिन्दी साहित्य परिषद्'' ने नवागंतुक विद्यार्थियों का स्वागत रंगारंग कार्यक्रम से किया। लेखन और अभिनय कला के प्रोत्साहन हेतु विद्यार्थियों के लिए अभिनय और मौलिक लेखन प्रतियोगिता का आयोजन कराया गया। जिसमें किशन, रवि द्वितीय वर्ष ने अभिनय कला और मोनिका और आदित्य, तृतीय वर्ष ने लेखन कला में क्रमशः प्रथम और द्वितीय स्थान प्राप्त किया। बालाजी टेलीफिल्म्स के सौजन्य से ''रोजगार के अवसर'' पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया। जहाँ विद्यार्थियों ने प्रश्नोत्तरी द्वारा अपनी जिज्ञासा को शांत किया। हिंदी साहित्य परिषद् द्वारा दिनांक 8 और 9 फरवरी को द्विदिवसीय राष्ट्रीय नाट्य संगोष्ठी और कार्यशाला का आयोजन कराया। प्रथम सत्र में नाटककार के रचना संसार द्वितीय सत्र में नाटक के पठन–पाठन विषय पर व्यक्तव्य हुआ। दूसरे दिन नाट्य कार्यशाला का आयोजन हुआ। पहले दिन प्रथम सत्र में प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता ने अतिथि वक्ताओं का स्वागत किया और डॉ. सुभाष डबास के साथ अपनी उपस्थिति से मंच को सुशोभित किया। नाटककार प्रो. नरेंद्र मोहन और नाटककार डॉ. मीराकांत ने 'नाटककार के रचना संसार की प्रक्रिया' और द्वितीय सत्र में नाट्य मर्मज्ञ प्रो. रमेश गौतम और नाट्य समलोचिका प्रो. कुसुमलता ने 'नाटक के पठन पाठन की प्रकिया' से विद्यार्थियों को अवगत कराया। दूसरे दिन शून्य संस्था के रंगकर्मियों द्वारा निर्देशन और अभिनय सम्बन्धी जिज्ञासाओं को कुशल मार्गदर्शन मिला। 'नाट्य कार्यशाला का आयोजन' नाट्य निर्देशिका डॉ. रमा यादव के सान्निध्य में हुआ। जिसके अंतर्गत विद्यर्थियों को ''स्पीच थेरेपी'' मिर्रर एक्सरसाइज ''काल्पनिक संसार'' के अभिनय से कार्यशाला से परिचित कराया। इस कार्यशाला में 150 विद्यार्थियों और 20 प्रवक्ताओं ने अपनी प्रतिभागिता दर्ज कराई जिसमें अन्य महाविद्यालयों के विद्यार्थी और प्रवक्ताओं ने भाग लिया। कार्यशाला में विद्यार्थियों का उत्साह देखने योग्य था। राष्ट्रीय सेमिनार की संयोजिका डॉ. अर्चना गौड़ ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया और शीघ्र ही हिंदी साहित्य परिषद् द्वारा ''आषाढ़ का एक दिन'' का मंचन कराया जाएगा।

डॉ. अर्चना गौड़

हिंदी एवं हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभागः एक रिपोर्ट

हिंदी एवं हिंदी पत्रकारिता विभाग ने सत्र 2017–18 में अनेक गतिविधियों का आयोजन किया। हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की ओर से 'नया मीडिया अवसर और चुनौतियां' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 25 अगस्त 2017 को किया गया। इस संगोष्ठी में मुख्य वक्ता थे वरिष्ठ पत्रकार सतीश कुमार सिंह। प्राचार्य डॉक्टर राकेश कुमार गुप्ता ने मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए पत्रकारिता के क्षेत्र में श्री सतीश कुमार सिंह जी के योगदान को रेखांकित किया। विभाग के प्रभारी डॉ. राकेश कुमार ने वर्तमान समय में मीडिया को सर्वाधिक शक्तिशाली माध्यम कहा। 21वीं सदी के नए मीडिया के विषय में उनका कहना था कि आज का नया मीडिया परंपरागत मीडिया से कहीं आगे जा चुका है। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता सतीश कुमार सिंह जी ने मीडिया के क्षेत्र में अवसरों तथा उसकी चुनौतियों पर विस्तार से चर्चा की उन्होंने कहा कि आज नये मीडिया की बदौलत कोई भी व्यक्ति अपने स्मार्टफोन के जरिये पत्रकार हो सकता है। नये मीडिया ने पुराने मीडिया को रिप्लेस तो नहीं किया है परंतु बड़ी चुनौती अवश्य पेश की है। कार्यक्रम के अंत में हिंदी विभाग के वरिष्ठ प्रवक्ता डॉक्टर सुभाष चंद डबास ने मीडिया के क्षेत्र में आ रहे परिवर्तनों पर विस्तार से चर्चा की तथा मुख्य अतिथि का धन्यवाद किया। कार्यक्रम का संचालन सुश्री शालू शुक्ला ने किया।

29 सितम्बर 2017 को हिंदी दिवस के अवसर पर नेहरू युवा केंद्र और हिंदी विभाग राम लाल आनंद कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, विषय था ' हमारा समय और हिंदी '। हिंदी पत्रकारिता के प्रथम वर्ष के छात्र आशुतोष मिश्रा ने प्रथम स्थान, द्वितीय वर्ष की छात्रा श्रेया उत्तम ने दूसरा तथा बी ए प्रोग्राम के हितेश कुमार ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। दिनांक 26 अक्टूबर 2017 को हिंदी विभाग की ओर से विद्यार्थियों के लिए दलितों के सामाजिक उत्पीडन और शोषण पर आधारित एक डॉक्यूमेंट्री 'द अनटचेबल इंडिया' का प्रदर्शन भी किया गया। इस फिल्म में भारतीय समाज की विसंगतियों और जातिगत हिंसा को बखूबी प्रदर्शित किया गया था। हिंदी पत्रकारिता के विद्यार्थियों के लिए विभाग ने डॉ. अटल तिवारी के मार्गदर्शन में समाचार पत्र के लेआउट तथा हिंदी टाइपिंग पर विशेष कार्यशालाओं का भी आयोजन किया।

25 नवंबर 2017 को विभाग ने हिंदी में विज्ञान पत्रकारिता विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया जिसमें महत्वपूर्ण वैज्ञानिक कुलदीप शर्मा और देवेंद्र मेवाड़ी ने भाग लिया। सर्वप्रथम प्रधानाचार्य डॉक्टर राकेश गुप्ता ने विषय की चर्चा करते हुए कहा कि देश में यदि विज्ञान को प्रचारित और प्रसारित करना है तो इसके लिए मातृभाषाओं से अधिक सक्षम कोई और माध्यम नहीं हो सकता। विभाग के प्रभारी राकेश कुमार ने कुलदीप शर्मा और देवेंद्र मेवाड़ी जी का विस्तृत परिचय दिया ।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉक्टर कुलदीप शर्मा ने विज्ञान के अपने अनुभवों को छात्रों के साथ साझा करते हुए विज्ञान के क्षेत्र में आ रहे बदलावों के बारे में छात्रों को अवगत कराया। उन्होंने कृषि विज्ञान में नई विकसित हाइड्रोपोनिक्स तकनीक के विषय में विद्यार्थियों को जानकारी दी। संगोष्ठी के दूसरे वक्ता डॉ देवेंद्र मेवाड़ी हिंदी में विज्ञान के अनुभवों को साझा किया। उन्होंने बताया विज्ञान का प्रसार हिंदी में अधिक सरल तरीके से किया जा सकता है। उन्होंने हिंदी पत्रकारिता के विद्यार्थियों को विज्ञान पत्रकारिता के क्षेत्र में आने के लिए भी प्रेरित किया।

प्रस्तुति
डॉ. राकेश कुमार
प्रभारी हिंदी एवं हिंदी पत्रकारिता विभाग

B.A. Programme

''आरोह'' हिंदी वाद–विवाद समिति : रिपोर्ट

वाद–विवाद संवादात्मक और प्रतिनिधित्ववादी तर्क की एक औपचारिक विधि है। जो तार्किके तर्क की तुलना में तर्क का व्यापक रूप है, जो केवल स्वयंसिद्ध और तथ्यात्मक तर्क से स्थिरता की परख करता है। इसी संदर्भ में रामलाल आनंद महाविद्यालय की हिंदी वाद–विवाद समिति 'आरोह' एक ऐसा मंच है जो छात्रों को तर्क और परख की कसौटी पर कस कर कुशल वक्ता के रूप में तैयार करता है। सत्र 2017–2018 के लिए 'आरोह' द्वारा कई कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिनमें से कुछ प्रमुख कार्यक्रम निम्न प्रकार से हैं।

महाविद्यालय में 7 फरवरी 2018 को अंतः महाविद्यालय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें प्रथम स्थान रवि कुमार व किशन सरोज को, द्वित्तीय स्थान पवन कुमार व ऋतुज दत्त को तथा तृतीय स्थान दीपक त्रिवेदी व काव्यायनी तिवारी को प्राप्त हुआ। बेस्ट स्पीकर का पुरस्कार अफरीदी व हितेश को प्राप्त हुआ।

'आरोह' समिति की उपलब्धियों में श्रेया उत्तम व अपूर्वा सिंह को भगवान परशुराम इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एवं जानकी देवी कॉलेज में द्वित्तीय पुरस्कार, आत्माराम सनातन धर्म कॉलेज में अपूर्वा सिंह को बेस्ट स्पीकर तथा अरबिंदो कॉलेज की प्रतियोगिता में श्रेया उत्तम को बेस्ट इंटरजेक्टर का पुरस्कार मिला। इसके साथ ही जनक कपूर मेमोरियल नेशनल डिबेट कॉम्पीटिशन, सत्यवती कॉलेज में श्रेया उत्तम को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। इन छात्र एवं छात्राओं को महाविद्यालय के नाम रोशन करने के लिए अनंत शुभ कामनाएँ।

श्रेया उत्तम
सचिव
'आरोह' हिंदी वाद–विवाद समिति

'समदृष्टि'... एक झलक

'समदृष्टि' पत्रिका को इस रूप तक लाने में विद्यार्थियों और प्रवक्ताओं के संपादकीय मंडल की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। विद्यार्थियों के रचनात्मक कौशल को उभारने के लिए, उनके मनोबल को बढ़ाने के लिये 'समदृष्टि' का सम्पादकीय मण्डल मौलिक लेखन को निरंतर प्रोत्साहित करता है। महाविद्यालय के सभी विद्यार्थियों की भागीदारी के लिये सृजन भित्ति पत्रिका को इसके अंतर्गत चलाया जाता है, जिसमें सभी छात्र अपनी प्रतिभा का मुक्त प्रदर्शन करते है जिससे उनके आत्मविश्वास को नई उड़ान मिलती है। सभी विभाग के विद्यार्थियों की मौलिक रचनाएँ 'समदृष्टि' के अंतर्गत शामिल हो सकें, इसके लिये सम्पादकीय मण्डल अथक प्रयास करता रहता है। इस प्रयास को लक्ष्य बनाकर समदृष्टि के तत्वावधान में अपने महाविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए रचनात्मक मौलिक लेखन की प्रतियोगिता हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषओं में आयोजित की गई जिसमें 100 से भी अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में विचारात्मक और काल्पनिक सभी रंगों से भरपूर कविता, लेख, कहानी, निबंध मौलिक रचनात्मक लेख प्राप्त हुए। इसमें विजयी विद्यार्थियों के नाम इस प्रकार हैं। प्रथम पुरस्कार सुकन्या देव, द्वितीय पुरस्कार गुडिया कुमारी, तृतीय पुरस्कार अंकिता पूर्णिमा साहू ने प्राप्त किये। निर्णायक मण्डल द्वारा इनमें से उत्तम रचनाओँ को अलग कर इस पत्रिका में स्थान दिया गया जिसके कारण 'समदृष्टि' का अस्तित्व संभव हुआ है। पत्रिका के मुख्य और अंतिम पृष्ठ–सौन्दर्य के लिये भी 'समदृष्टि' सम्पादकीय मण्डल ने 'पोस्टर मेकिंग' प्रतियोगिता का आयोजन कराया। जिसमें पुरस्कृत विद्यार्थी इस प्रकार हैं– प्रथम पुरस्कार गीता मलिक, द्वितीय पुरस्कार दिव्या कुशवाहा एवं तृतीय पुरस्कार तान्या ने प्राप्त किये। जिसमें 50 से ज्यादा विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता दर्ज कराई। प्रथम और द्वितीय स्थान पर रहने वाले विजयी विद्यार्थियों के कलात्मक स्वरूप को पत्रिका के आवरण पृष्ठों पर देखा जा सकता है। सभी विभागों की रिपोर्ट और गतिविधियों के लिये भी 'समदृष्टि' पत्रिका अपना पूरा योगदान देती रही है।

डॉ. अर्चना गौड़ः प्रस्तुतकर्ता

Quiz Competition

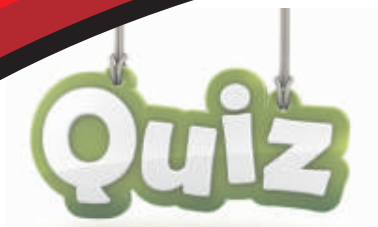

Ubiquitous, the English Literary Society of Ram Lal Anand College comprises of a team that has the passion for all things related to literature. Our society members range from bookworms to novices, magicians with words to interested writers. We hosted an intra-college Quiz Competition on 27th November 2017, with a motive to bring together literature enthusiasts and give them a chance to showcase their knowledge of books. Dr. Urvashi Kuhad, Convenor of the English Literary Society, graced the occasion with her presence. We also thank the Principal, Dr. Rakesh Kr. Gupta for his constant guidance and encouragement.

Our team created questions from a variety of genres, ranging from popular fiction, classics, ancient Indian and Greek Literature, fantasy and contemporary literature. A large number of students from different departments including Geology, History, BJMC, Political Science, Statistics, Mathematics turned up to participate.

The competition began with the Multiple Choice Round, which shortlisted participants for the next level. The second round was the Interpretation Round, in which the participants were paired in groups to interpret a movie scene or a book cover in the most creative manner possible. There were responses of all kinds, from comic to gothic, which made the round all the more enjoyable. The Interpretation Round was appreciated for its uniqueness and originality. Students and teachers voted for each team's interpretation which led the six most voted to the final round, which was the Rapid Fire Round. Four questions were asked from each participant. Our team had to add a tie breaker question in the end since the scores were at par. In the end, the three final contestants were asked true/false questions which declared the winners.

Ankit Malik, English (Hons.), Second Year bagged the first prize and a cash prize of a thousand rupees, following with Nivneel, English (Hons.), First Year winning the second prize and a cash prize of five hundred rupees, and Shivam Verma,English (Hons.), Third Year arriving at the third position. Consolation prizes were given out to Saras Kaushik, History (Hons.), Third Year and Ankit Prakash, Geology (Hons.), First Year for performing excellently and getting highest overall scores. The audience were interactive and enthusiastic throughout the event and many won prizes for answering questions after each round. The event turned out to be successful with the help of our co-operative Convenor, hard working society members and volunteers.

Dr. Urvashi Kuhad
Convener English Literary Society

Yoga and Meditation Committee

Yoga and Meditation Committee, Ram Lal Anand College organized a 3-Day Workshop on yoga from 19th - 21st June, 2017 and celebrated 3rd International Yoga Day. Students teachers and staff participated in large numbers on all the three days. Around 60 participants attended the Workshop. It included screening of CYP, 2017 CD issued by Ministry of AYUSH; an interactive lecture session on Yoga; live demonstration by expert yoga instructor Mr. Deepak Saini and his colleagues.

Students also participated in various yoga competitions. They attended a state level yoga competition on 2nd September. Three teams participated in three different events in rhythmic pair, artistic pair and free-flow yoga dance. Eight of our students participated in the competition. And to motivate our students an instructor Mr. Ravi has been appointed.

Yoga and meditation committee of Ram Lal Anand College organized an other a 1-Day Workshop on"Mind Management" on 22nd September, 2017. The speakers were Mrs. Pinki Malhotra and Mr. Shammi Malhotra who are advanced level instructors in The Art of Living. They disseminated useful benefits about meditation to the students. They also helped to sort out our everyday life concerns like mental stress and, negativity, which is the key to success in our life. All the participants performed Bhastrika Pranayam and meditated, and were satisfied which the feedback form reflected.

Another three-week workshop was organised from 23rd October to 10th November, 2017. On an average 15 students attended the workshop daily. Students gradually learnt a number of asanas like Suryanamskar, Taadasan, Virikshasan, Padhatanasan, Vajrasan, Bhadrasan, Ushtrasan, Shashankasan, Halasan to

name a few and Pranayam like Anulom-Vilom, Shitali, Brahmari pranayama. They also learnt meditation. These yoga classes were thoroughly enjoyed by the students. They showed their keenness to attend such classes in future as well.

Another encouraging *yogasana* competition was held on 12th February 2018, in which eight asanas were taught to the students each were divided into three categories A, B and C and students had to perform two from category A and one each from category B and C. Eleven students participated in the competition. Ms. Shashiprabha Kumari of B.Sc. (Hons.) Microbiology IInd year won the first prize and Mr. Krishnendu of B.Sc. (Hons.) Microbiology Ist year won second prize. An essay writing competition was also organized on the same day. They were given four topics, namely (i) "*Suryanamaskar* for sanctification of body and soul, (ii) Yoga for integration of mind, body and soul, (iii) Yoga and Youth and (iv) Relevance of Yoga in today's world. Seventeen students participated in the essay writing competition. First prize was awarded to Mr. Pawan from B.A.(Hons) Hindi, Ist year and second prize was won by Ms. Tanika Bisht B.Sc. (Hons) Statistics, Ist year.

Dr. Seema Gupta
Convener

Spic Macay 2017-18

RLAC society of SPIC MACAY is majorly run by students with the support of faculty coordinators. In order to form an efficient and enthusiastic team and to elect a student coordinator, an orientation programme was conducted in the beginning of the academic session (2017-18) to educate the students about the functioning of this society.

On 14th March 2018, the society organized a musical concert of one of the most renowned Santoor virtuosi of India – Sh. AbhayRustumSopori, son of legendary Santoor maestro Padam Shree awardee Pt. BhajanSopori,who was accompanied by immensely talented Sh. ZakirAkhtarHussain on Tabla and Sh Rishi on Pakhawaj. The programme started at 11 am with a lamp lighting ceremony. The amphitheatre was full to the capacity to experience a spell binding instrumental music session.

Soporiji in his musical rendition played RaagBheem in teen taal and sixteen maatras explaining its variation in bandish and taraana. This could be interpreted as rhythmic questioning or musical jugalbandi.He also informed the audience about the SufianaSaptakSantoor which has been his family legacy and a gift to the world of classical music. The performance was quite interactive as the artist involved audience to participate along with him and kept on explaining the rhythmic pattern and inherent meaning of various raagas.

Women's Welfare Advisory Committee & Gender Champion

A five-day self-defense course, from 18th September, 2017 to 22nd September, 2017, was conducted by Women's Welfare Advisory Committee, Ram Lal Anand College, University of Delhi in association with Delhi Police and Women Power Association, an NGO based in Delhi. Along with the practical training sessions every day, the course also focused on various related aspects of women safety like the presentation on the first day by the Cyber Cell on Cyber crime and women's safety. The presentation made by Mr. Ajit Singh, Delhi Police and Mr. Umed Meel, cyber expert focused on how our daily engagement with the virtual world often creates problems related to safety and security of all and women in particular. The course successfully sensitized the girls regarding issues related to their safety and well-being. The practical training sessions helped the girls in not only preparing themselves for cases of emergency but also improving their over all body language instilling in them confidence and strength. The sessions were conducted by Mr. Vikas Jhanjot, president WPA and his team of trainers, which include Vani Gupta (Treasurer), Md. Saad Alam, Vikas Rawat, Bharat Kumar, Mukesh Kumar and Neeta Kumar. SI Rekha and SI Salim from Delhi Police also contributed to the successful completion of the course. The gender champions involved in the programme are Anugrah, Krishna Kant, Niharika, Simran, and Mahima. WWAC Committee members Dr. Vandana Gupta (Convenor), Ms. Shachi Meena (Co-convenor), Ms. Pragya Deshmukh, Dr. Vandana Chaudhary, Dr. Sarbari Naag, Dr. Shruti Anand, Dr. Narender Kumar, Dr. Urvashi Kuhad and Sunila Hooda from Microbiology Department, actively took part and worked hard for the smooth conduct of the course. The course concluded on 22nd September, 2017 with a ceremony presided over by Dr Rakesh Kumar Gupta (Principal), Mr. Anant Kumar Gunjan (Delhi Police), faculty members and students of the college. The participants received certificates from Delhi Police as a token of encouragement.

Shachi Meena
Co-convenor

Eco Club

The Eco Club of Ram Lal Anand College has lived up to it's idea for reforming activities within the college locale to instil the practice of protecting the environment from pollution and destruction among the students and to encourage students to play a more active role in doing so. The Committee members are Dr. Shachi Meena (Convenor), Dr. Parul Lau Gaur (Co-convenor), Dr. N K Pandey, Dr. Narendra Kumar, Dr. Dinkar Singh, Dr. Nupur Saboo, Dr. Nidhi Chandra, Mr. Anil Bhatt, Mr. Ravinder, Ms. Nidhi Kiran. The President, Secretary and Treasurer of the committee are Shrabani (Microbiology), Aditya (Hindi Hons.) and Geetanshu (B.A Program) respectively and there are more than 30 volunteers from different disciplines.

For the segregation of waste produced in the college Eco club in collaboration with Cleanliness Committee installed and arranged garbage and recycling bins at different locations on the college grounds. Proper measures were taken to ensure that the mounds of segregated waste would be sent for recycling & to make compost.

After successful placement of these waste disposal bins, members of the Eco Club organized a "Waste Management Awareness Drive" on the 20th of September'17 where the general body of the college was informed about the correct method of segregating waste into the bins, the purpose of this segregation and the ultimate fate of the segregated waste. Members of the Eco Club used placards to provide a visual representation of the information to spread awareness.

On 27th of September, 2017, the Eco Club organized a seminar on the topic "Nurturing Ecology: Human Practices and Conservation", which included speeches from Shri Bharat Dogra Ji, a journalist and activist, Dr. Mayank Kumar, esteemed professor of Delhi University and Ms. Tamanna Sharma, director at Earthling First. Eco Club enthusiastically organized another seminar on "Globalization, emerging trends and Environmental Issues," on 22nd February, 2018 speaker in which were Prof. Ayyanadar Arunachalam, Principal scientist and Director, ICAR and Prof. Radha Shyam Sharma Department of Environment Science, University of Delhi. The speakers enlightened us on the topics such as climate change and sustainable development of agriculture. The guests were received with great enthusiasm from the audience and gifted a potted plant as a token of appreciation. Each guest speaker gave their views and opinions about the obstacles faced by the youth to implement sustainable living and protecting the environment. Intriguing questions were raised by the students present in the audience that addressed their hurdles in preserving nature and reducing the carbon footprint. At the end of the seminar, Principal Dr. Rakesh Kumar Gupta thanked the guests for their time and inspired the students to promote and inculcate habits healthy for our Earth. The guests were then invited to plant saplings of trees in the college garden as a gesture of restoring the environment. The seminar ended with students gaining a changed perspective and fruitful insight on how human practices affect the ecology.

With these events, Eco Club helped, enlightened and apprised the students of their responsibility towards saving and taking care of nature.

Shrabani Snigdha
President, Eco Club
B.Sc. (Hons.) Microbiology, IInd year

Department of Mathematics

The Department of Mathematics is introduced in Ram Lal Anand College from the session 2017-18. The Department is started with 39 students, who performed really well in their first semester university examination. About 60% student scored more than 8 CGPA. The Department has organized an interaction session with the Principal Dr. R K Gupta one 27th October, 2017. The one hour session was very interactive and the Principal answered all the query of the students. The discussion was about how to improve the quality of education and what we can do for the welfare of the department and the institution. The Mathematical society of RLAC "INFINITY" is also going to organize its first annual mathematical fest IMPLOSION '18 on 28th February, 2018. The inaugural session will commence with a lecture by Prof. C. S Lalitha, Professor, Department of Mathematics (South Campus) on Application of Mathematics (Mathematics in SUDOKU). This session will be followed by various competitive events like Paper Presentation, Sudomania, Math-O-Mania, Mathematical Quiz etc.

Back Bone of the College

Geology Department Activity Report 2017-18

On 21st July, 2017 two of the passing out students Nitin Jhalani (DU topper, 2017) and Ajay both of whom were on their way to EISER Kolkata to pursue integrated M.Sc.-PhD, interacted with the newly joined students of B.Sc (H) Geology I Yr and shared their experiences.

The Department of Geology, organized lectures on 24th August, 2017, in the Amphitheater of the college, by scientists from Atomic Mineral Directorate of Exploration and Research. Dr. Neeru Rawal (Scientist G) and Mr. Pradeep Pandey were speakers. Topics of their lectures were "Peaceful Uses of Atomic Energy and Distribution of Nuclear Deposits in India" and Various techniques for exploration, technologies (including indigenous) used to extract the mineral respectively.

Both the speakers have experience of working in various parts of the country as scientists in AMD. They have wide experience in the field of atomic mineral explorations.

The lectures were aimed to allay fears regarding use of atomic energy with which fear factor is associated due to radioactive nature of the minerals. Various forms of atomic mineral deposits that occur in our country were discussed. Some of the scientific methods employed to extract them like taking help of remote-sensing, aerial survey, field survey and laboratory studies were also discussed .

Feedback from the students revealed the following:

All the students considered the program to be very good and achieved the objectives and they gained knowledge and information at the event.

The organization of the event was in general evaluated to be very good to excellent.

Almost all of them thought that the interaction with them should have been much more. A very small number thought that the program should have been in the morning hours.

Department of Geology, Ram Lal Anand College in collaboration with the Association of Polar Early Career Scientists (APECS) is organizing talks by Prof. N. C. Pant (Dept. of Geology, Delhi University) and Mr. Raghu Ram (Sr. Geologist, Polar Science Division, Geological Survey of India) on "Polar Studies in the Services of Mankind" on 22nd September 2017 at 2.00 PM in the College Amphitheatre.

Prof. Pant is a faculty in the DU and had been to Antarctica in two separate expeditions as scientist working with the GSI. He is also a patron of APECS. Mr. Raghuram had visited the north Pole in an Indo Norwegian Expedition working as a scientist with the GSI. Both of them are apt persons to have lectured the students about scientific studies of the polar regions.

These talks were aimed to discuss about the changing climate in our planet in which Ice covered Polar Regions have a great importance.

It also enthused to enthuse young aspirant geologists to take up polar science as a possible career prospect as it is a specialised subject and needs special kind of training and job requirements including physical and mental fitness.

Feedback from the students revealed the following:

The lectures were felt to be excellent informative, interesting and useful. They achieved the objectives and lot of knowledge and information was gained from the event.

There were various suggestions from students including more participation of the students in the form of discussions, quiz etc.; change of timing, increasing duration of the program apart from considering it to be good.

Former student Ankit Kumar Verma, pursuing PhD on "An Investigation of the Effect of Impact Processes on Rock Breakdown on Earth and Mars" at Trinity College, Dublin, Ireland came to the college on 8th November, 2017 and interacted with the B.Sc (H) Geology II and III Yr students. The students got to know about upcoming field of Extra-Terrestrial Geology and also ways to earn scholarships to study abroad.

Students of B.Sc (H) Geology attended an international conference "Asian Conference on Remote Sensing"

organized by Asian Association of Remote Sensing at Hotel Ashok, Chanakyapuri, New Delhi on 24th October, 2017.

The students got an opportunity to interact with various national and international delegates and learned about the latest technologies in the field of Remote Sensing.

The Department of Geology conducted field tours for the students of B.Sc.(H) Geology as mentioned below.

For the I Yr the tour was conducted in Musoorie area between 16th to 22nd December, 2017.

Dr. Sarbari Nag and Mr. K.N.Kandwal from the Department of Geology conducted it.

The tour aimed at introducing aspirant geologists to acquint with the basics of geological field work, to be able to orient and locate themselves using toposheets, identify points marked on the map on actual ground, different lithologies, geological structures, geomorphological features, to collect samples, maintain field diaries, take scale photographs, measure attitudes of beds etc. This also taught them to be able to work in teams and maintain discipline.

For the second year field tour was conducted in and around Nainital between 16th to 22nd December, 2017.

Dr. Prabhas Pande and Dr. Vimal Singh conducted the field tour.

For second year the tour aimed at reinforcing the methods of geological field work, orient themselves with respect to ground and toposheet, understand and identify different geomorphological features in the terain, study different geological structures and collect their structural data, identify gradual change in degree of metamorphism and its effect on different rock types from one point to another, movement of ground water through an aquifer, maintain geological field diary, take scale photographs.

For the IIIrd Year the tour was conducted in ONGC Ahmedabad between 26th to 30th December, 2017.

Dr. Prabhas K Pande and Mr. S.D. Dogra (retired scientist from ONGC) conducted it.

The tour was aimed to aquaint them with working of an industry involved in application of geology to extract petroleum. The students were introduced to various concepts: such as petroleum system, sediment petrology, petroleum extraction methods and evolution of petroleum basin in Gujarat focusing on Kutch-Cambay basin. They also learned how Cambay Basin in Gujarat has suddenly emerged as an epicenter of oil & gas discoveries by the scientists in ONGC, Ahmedabad. They visited major labs of Indian Institute of Reservoir Studies, Ahmedabad namely Thermodynamics and tracers lab, Chemical tracers lab, Core analysis section, Water flood lab, Gas injection lab, Insitu Combustion lab and Microbial Enhanced Oil Recovery Lab. These work on specialized fields of petroleum reservoir properties and its exploration and extraction.

Dr. Sarbari Nag

Department of History

Tawarikh, the history society of our department is active throughout the year to engage and educate students beyond classroom teaching. The society organizes talks by various eminent scholars so that students benefit from their lectures and also expose them to the on going new trends and researches undertaken in the field of history. Continuing with this tradition, the society invited Dr. Raziuddin Aquil from Department of History, University of Delhi to deliver a talk on "Understanding Pelagius Traditions : Sufism as the language of love in times of hate and violence and an international talk was delivered by Eungenia Vanina from Russia on Medieval India: construction of an image." It was a very informative lecture and many of the curious questions raised by the students were addressed by the wise scholar during the interactive session.

The society also regularly conducts heritage walks to provide students with first hand information of historical monuments, sites which they have to study about in classrooms. A trip to the historic Red Fort was organized on 1st November, 2017 which had a contingent of about 40 students and seven staff members. Students were made aware of the architectural techniques of various monuments inside the Red Fort.

The Department initiated an add-on certificate course on "Heritage and Tourism Management". The course will provide employment opportunities to the students in various fields of tourism and heritage sector. The Department also organized an educational tour of Jaipur from 23rd to 26th February, 2018. Fifty two students from the Department including four teachers visited several places and monuments there like Jantar-Mantar, Hawa Mahal, City Palace, Elbert Hall Museum and Amer Fort.

Karnika Chandana
B.A. (Hons.) History Ist year

Department of Political Science

In the academic session 2017-18 the department continued with its indomitable deliberative spirit. Picking up some of the most contemporary debatable issues the department led by its faculty and students organized series of events. It began with the special screening of the documentary SAMVIDHAN produced by the Rajya Sabha TV and directed by the eminent filmmaker Shyam Benegal. The 10 episode documentary on the workings of the Constituent Assembly of India (1946-1949) was screened for students for two days along with discussions around various themes. Next the department organized an open debate on the issue of DEMONETIZATION. Not only students but also the faculty members collectively tried to evaluate this exhaustive nation-wide exercise. As expected voices of all kinds be it in favour of or against the government initiative turned the discussion sharp and argumentative. As part of the worldwide discussion on the issue of RIGHT TO PRIVACY the department also tried to do its bit. An open house discussion was held on this theme where faculty and students interacted on wide ranging points of dispute including the subjudice matter of AADHAR. One of the core study areas of Political Science discipline is the concept of democracy. The department organized a half-day interactive session on the topic DEMOCRACY: ISSUES & CHALLENGES. A high spirited event, it deliberated on sub-themes like toleration, representation, censorship, reservation, corruption, violence etc. As part of a new initiative along with Alumni Committee of RLAC the department is currently organizing interactive sessions between former and current students so that the learning process between old and new students continues. Our former students who are now part of higher learning institutions like JNU, DU, JAMIA, IIMC are being invited for interactions with current students.

Dr. Kshama Sharma
Dr. Triranjan Raj

Department of Commerce

This academic session started with a crucial phase for the Commerce Society as it marked the first time elections by secret ballot for the core team, Ka-Ching. Following the entire democratic process, a worthy team of President, Vice President, Secretary, Joint Secretary and Treasurer was elected. The entire process witnessed heavy participation and an incredible display of discipline and decorum by the students. The team worked efficiently overtime to develop strategic alliances with various established commerce societies from esteemed Delhi University colleges. Currently, we have official alliances with societies of Motilal College, College of Vocational Studies, Bharati College, Ramanujan College, Aryabhatta College, Delhi College of Arts and Commerce, Deshbandu College and Shaheed Bhagat Singh College. Our students have been participating in various events and competitions organized by these societies. Furthermore, taking another step towards the objective of nurturing the brilliant minds of our undergraduates, an industrial visit was undertaken to Yakult's plant in Sonepat, Haryana on the 31st of October 2017. The visit to this global probiotic leader included a walkthrough by the students in the state of the art manufacturing plant, a thorough understanding of the entire process, a presentation and Questions and Answers session by the industry experts and also an insight into the placement opportunities in the said industry. On the whole, it has been a fruitful year for the department- students and teachers of the Department.

Dr. Ritu Vats

Department of English

Following the instructions of Delhi University Department of English admitted 61 students (34 general, 13 OBC, 8 SC, 5 ST and 1 foreigner) for the session 2017-18. Department has dedicated faculties who have expertise in emerging literature like Black Literature, Women's Writing, Science Fiction and Dalit Literature. Department is not only confined to the prescribed syllabus but also expose the students to emerging issues in contemporary social, political and literary world. Department's relationship with students is not limited to class-room teaching rather Department contributes to the overall development of the students. Department has a Literary Society through which Department engages with the students. Literary Society has some elected representatives such as President, Treasurer and Secretary who take care of activities organized by the society.

Last year Department had 68 students. Out of 68; 33 students got first division, 24 students got second division and rest of students got third division. Our students performed better than the students from the neighbouring colleges such as Aryabhatta, ARSD, Motilal Nehru, Motilal Nehru (E) and Venkateswara.

Department of English is a young Department as most of the faculty members were appointed a few years back. But we hope, in coming years, Department will make a contribution in the development of the institution.

Dr. Narender Kumar

Department of Microbiology

A series of interactive events were planned and organized by the Department of Microbiology in the academic year 2017-18 in order to widen the world-view of students pursuing B.Sc. (H) Microbiology and to acquaint them with current challenges in the subject area.

A total of 15 students of the Department of Microbiology along with two teachers participated in a One-day Public Outreach Programme at Translational Health Science and Technology Institute (THSTI) on September 22, 2017 as a pre-event of International Science Festival (IISF), organized by Ministry of Science and Technology under the "Science Setu"programme. Two of our IIIrd Year students, Sangeet Makhija and Vaibhav Joshi, won 3rd prize in intercollege debate competition. The participants also visited the laboratories in the NCR Biotech Science Cluster, THSTI.

3rd year Microbiology students attended the Wellness India Conference & Expo 2017, (Medical Agriculture, Animal Biotechnology and Bioinformatics sessions) at Pragati Maidan from 29th to 31st August 2017.

In current academic session our department organized scientific talks and interactive sessions by three well-established and acclaimed alumni. On November 6, 2017, Dr. Rinu Sharma (batch 1994-97), presently working as Assistant Professor at School of Biotechnology, GGS Indraprastha University, New Delhi delivered a lecture on "Clinical and functional implications of miRNAs in esophageal cancer".

In another session held on the same day, was Dr Sidharth Chopra (batch 1994-97), presently working as Senior Scientist, Division of Microbiology, CSIR-Central Drug Research Institute, Lucknow delivered an interesting talk on "Drugs for Bad bugs: Progress amongst Challenges". He emphasized that the resurgence of drug resistance urgently requires the development of novel therapeutics against drug-resistant pathogens to treat infections. Drug discovery is an extremely challenging battle and needs a multi-disciplinary, interconnected approach. A total of 75 students and 9 faculty members attended the sessions.

On the 12thof January 2018, Dr. Sumant Puri (batch 1996-99), Assistant Professor (Microbiology), Temple University, US Awas invited for a talk. A total of 85 students and 8 faculty members attended the event. All three sessions were enriching experiences for the students as they got an opportunity to interact with the eminent scientists on recent trends and career options.

The department organized a field trip to Udaipur from 18th -21st January, 2018. Thirty students were accompanied by three teachers. The students collected the soil and water samples from various sites for comparative analysis as a part of their curriculum.

On February 2, 2018, a day long International Seminar on "Infectious Diseases: Current Strategies for Diagnosis and Therapy"was organized in the college. Six eminent speakers were invited for two different

sessions. The talk delivered by Professor Savvas Savvides, Ghent University, Belgium was titled "Structural Biology Reveals the Molecular Virtuosity of Viral Decoy Receptors". Dr Julie Bouckaert, and Dr Marc F Lensink from University Lille, Francespoke about"Adherent-invasive E. coli finding their Sugar in the Inflamed Ileum: Dysbiosis in Crohn's Disease" and "Modelling Molecular Interaction", respectively. Dr Andrew Lynn, JNU, India enlightened us about "Sequences, Structures, Systems and Big Data: The Evolution of Bioinformatics".

In the second session, Professor T Ramamurthy, National Chair and Head, Centre for Human Microbial Ecology, THSTI, Faridabad, India delivered a lecture on "Challenges in Curing Clostridium difficile Infection". The last talk was titled "Personalized Medicine-Where do we stand?" by Dr Anup Madan, Principal Scientist and Genomics/Associate Director, Sequencing Group, Covance Inc., USA.

This event was a grand success with the participation of 75 students and 6 teachers from 7 other invited Delhi University colleges along with 75 students and 9 teachers from Department of Microbiology and 1 teacher from the Department of Statistics of our college.

Dr. Kusum R Gupta

Report on Remedial Classes

Remedial Classes Cell of RLA College has successfully organized additional remedial classes for the students who have trouble coping up with the curriculum for the odd semester of session 2017-2018. In Collaboration with various departments, Remedial Cell prepared the list of slow learners and socio economically weak students and supported them in achieving their goals by providing them additional classes after the college hours. Remedial Cell has also motivated a lot of teachers of the college to conduct remedial classes. With their cooperation many of the needy students got benefitted in their studies.

Vikas Kumar
Convener, Remedial Classes Cell

Department Of Statistics

The session 2017-18 is marked with lot of activities in the department of Statistics. We are glad to share that success of all the events which was possible only due to shear hard work and dedication of both students and faculty of the department.

The session began with the orientation on 21st July 2017 and freshers welcome on 11th Aug. An excellent team of students with bubbling energy and enthusiasm were elected as office bearers of the Statistics Society through departmental elections held on 25th Aug.

Share your knowledge. It's a way to achieve immortality - Dalai Lama

To achieve immortality, the society started a blog on 17th Sep with the aim to spread the word about Data and Statistics. The blog mainly emphasized upon the practical use of Statistics in our daily life and various occupations available to the Statisticians. This move was unprecedented and a first among all the department of Statistics present in various colleges of DU. With the words of Mr. Mukesh Ambani in mind, "Data is the New Oil", the Department of Statistics, RLAC successfully managed to share the wisdom of wide scale importance of Statistics in future and it definitely hopes to continue doing so.

The department organized an educational tour where a group of 31 students of the department with 4 faculty members visited Central Potato Research Institute (CPRI), Shimla (HP) from 4th-7th October. The students got to know how the agricultural investigations are based on the application of statistical methods and procedures which are helpful in hypotheses testing, estimations of parameters and predictions. It was a fun-filled and an enthralling trip where the students balanced between learning and enjoying the best moments of their lives. These experiences are one in a million where they learn to cooperate, lead, share, talk and most importantly explore themselves in the hefty mountains with soft winds blowing which made our trip delightful.

First Faculty Development Programme titled "Ist IT workshop on the basics of Excel and Power Point" coordinated by Dr. Mukta Mazumder and Mr. Rajesh Sachdev from 9th -14th Oct was successfully completed by 16 faculty members. The faculty learned these tools with a promise to make an effort to use these tools to manage their data and enhance research.

Karl Pearson rightly said- "I tend not to work with a specific person in mind; Art is a matter of statistics. It is not about individuals, it's about people''.

On this note, WORLD STATISTICS DAY was celebrated the on 23rd October. Society's name PANACEA and logo were officially inaugurated in the event designed by Rashi English Deptt student (selected in an in-house competition of logo designing). A documentary ''JOY OF STATISTICS'' by Dr. Henfrey, showcased a scientist sharing her life experiences about statistics and data. An inter-college Debate competition, "ARE FALLING OIL PRICES- GOOD FOR THE ECONOMY?" instilled excitement among students where an overwhelming response of 19 teams from Miranda, Shivaji, JDM, Khalsa, MLNC, Rajdhani, GTBIT, Satyawati, SGDK, IGNOU, RLA, Kalindi to name the few participated in the debate.

Add-on certificate course on "Analytics Using R" coordinated by Dr. Seema Gupta, Mr. Rajesh Sachdev and Mr. Arun Gautam from 18-23rd Dec, 2017 was successfully completed by 31 Students.

We are pleased to share that this year we took initiative to organize alumni talk to make a strong bond where two of our alumni Mr. Raja Babu (2008) working as Lead Analyst and Mr. Gautam Kumar (2009) working as Business Analyst shared their experience of actual data handling. Interactions of this kind are helpful to increase our alumni network which will further give us a boost when it comes to internships and placements.

The departmental fest Random Walk '18 was held on 26-27th Feb'18. The invited talks on Supply Chain Management: To be Faster and Smarter by Prof. Jaggi (Deptt. of Operational Research, DU), Significance of experimental designs by Prof. Rajendra Prasad (Principal Scientist, IASRI) and Data Science by Ivy Pro School were appreciated by the students as well as the faculty. This year students came up with new innovative ideas of a mix of Statistics, Management and fun games like Policy Bazar, Stats Mania, Crypto Chaos, Lion Zden, Couch Potato, Treasure Hunt. There was a large participation from the colleges like SRCC, Hansraj, CVS, Venkteshwara, PGDAV, Ramjas, Hindu, KMC etc. The events ended on a positive note and turned out to be a huge success with the unending guidance and support of the faculty and cooperation of the students of the Statistics society.

Dr. Neena Mital
Convener

Department of Computer Science

The Department of Computer Science organized a talk on "Recent trends in Machine Translation" on 25th September 2017. The talk was on current research topics in Machine Translation where the speaker Prof. D. K. Lobiyal, Dean, School of Computer and System Sciences, Jawaharlal Nehru University covered a variety of topics and issues related to the design, engineering, development and evaluation of modern state-of-the art MT systems. The talk was based on what was the past, present and future of Machine Translation. The goal of this seminar was to familiarize students with current hot topics in Machine Translation. A detailed discussion was held on Language Linguistics, Computational Linguistics, Lexical ambiguities across different Languages and different Machine Translation approaches. At the end of the lecture there was an interactive session between the students and Prof. D. K. Lobiyal. How to change things when change is Hard," Shrink the Change." In other words, make the change more manageable and within reach. With the above objective Department of Computer Science organized a competition on E-Waste Management i.e. "Best out-of E-Waste" on 4th September 2017. Students were the focus of this event because they are believed to be the agents of change with the power to influence others and promote awareness among neighbors. The goal of the event was to create the best out of a bunch of discarded electronic

waste. This competition encouraged the students to come up with creative ideas to better use the discarded E waste such a computer chips, wires compact disc etc. The students from many courses such as B.A. Prog., B.Sc. (H) Computer Science, B.A. (H) English, B.A. (H) Hindi and B.Sc.(H) Microbiology participated with great enthusiasm. This event proved that we can recycle our E waste in our own innovative ways at home. The department also organized a two day annual festival "Automata 2018" from 21st february to 22nd february 2018. The first day started with a National Seminar on " Synchronization of devices using Cloud" in which the eminent speakers like Mr. Himanshu Chawla CEO, IRIS Global; Mr. Rahul Aggarwal CEO, I2K2 Solutions; Ms. Swati Thomas Founder, AEmidio; and Mr. Anand Babu Strategic Relationship Manager, ICT Academy shared their knowledge with the students. The event had a large participation of around 150 students and faculty from different colleges. Day two of the festival witnessed many technical and non-technical events organised by the department where number of students particiapted enthusiastically. The two day festival was a great success. The department also organized an educational cum recreational trip to Jim Corbett and Nainital on 10th February 2018 to 12th february 2018.

Dr. Vandana Gandotra

Alumni Association

The college has made a beginning by formation of RLA Alumni Association on May 13, 2017 to establish a 'connect' amongst all its former and current students by virtue of having a strong alumni association of its own.

The first executive body has been formed by nomination of some ex-students .The alumni were nostalgic on revisiting the college. The Alumni Association will be a vital bridge which aims to bring together all its students on a single platform.

As kick off and precursor to various events that would follow The Alumni Committee RLAC organized an Interactive Session among former and current students of Humanities and Geology.

The interactive session was a roaring success where everyone actively participated. The Alumni who were representing different domains of knowledge appreciated the progress made by college in terms of infrastructure support and other facilities and thanked RLAC Alumni Committee and other teachers for inviting them as faculty for the interactive sessions .

We present some snapshots of the events reminiscent of our association with former students.

Alumni Committee RLAC organized an Interactive Session with former students

Alumni Committee RLAC organized an Interactive Session among former and current students of Humanities on 10th February 2018 in the Seminar Room of the college.

A host of former students were invited who after graduating from RLAC pursued post-graduation level courses at various institutions of higher studies like Jawaharlal Nehru University, Delhi University, JamiaMilliaIslamia, Indian Institute of Mass Communication etc. Some of these students are today into teaching at various colleges of Delhi University, pursuing doctoral research after securing Junior Research Fellowships of the UGC, completing Masters or are journalists at different media organizations. The interaction between them and present students of the college was so enthusiastic and lively that the session went on for over five hours. Lots of discussions took place around future career options for students of humanities presently in the college

and more importantly deliberations took place about the role of humanities in the overall nurturing of university students.

The undergraduate students from the college prepared for the session wholeheartedly and their presence in large numbers on a weekend in the college for this occasion speaks volumes about their interest in such events. The Alumni Committee has duly registered the success of this event and feels encouraged to organize more such events in the near future.

NBT
नवभारत टाइम्स

एलुम्नाई मीट में अनुभव किए साझा

एलुमनी मीट में पूर्व छात्रों ने अपने अनुभव को किया साझा

आरएलए कॉलेज में इंटरैक्टिव सेशन आयोजित

The event got duly covered in the print media with national dailies like Navbharat Times, DainikJagran and Navoday Times carrying pictographic news coverage.

Geology Department ignites young minds in the Alumni interaction with former students

On 21st July, 2017 two of the newly passed out students NitinJhalani (DU topper, 2017) and Ajay both of whom were on their way to EISER Kolkata to pursue integrated M.Sc.-PhD, interacted with the newly joined students of B.Sc (H) Geology I Yr and shared their experiences .

One ex-studentAnkitKumar Verma (passed out in 2014), pursuing PhD on "An Investigation of the Effect of Impact Processes on Rock Breakdown on Earth and Mars" at Trinity College, Dublin, Ireland came to the college on 8th November, 2017.

He interacted with the B.Sc (H) Geology II and III yearstudents . The students got to know about upcoming field of Extra-Terrestrial Geology and also ways to get scholarships to study abroad.

Alumni Lecture Series

The alumni committee has come up with the idea of inviting our distinguished alumni as resource person in "Alumni Lecture Series ".In the first of this series a lecture on the topic "Understanding Digital Media/Marketing " was organized on 20/02/18. The Esteemed speaker ,Mr. Ritesh Aggarwal, an alumnus of Ram Lal Anand College, is Co founder of Baba Pinnak Media-a digital media agency providing consultancy services in digital media marketing.The program began with an address by our respected Principal after whichthe stage was set for Mr. Ritesh Aggarwal.The lecture was interactive all through and the seminar roon was allpacked.His lecture basically focussed on Digital Space,Digital Media and Digital Marketing.He also spoke about the future prospects available and how far they can take us.He also discussed about the online courses available in this area.Above all his main focus was to make students aware of the importance of social media.

Mrs. Seema Joshi, Convenor

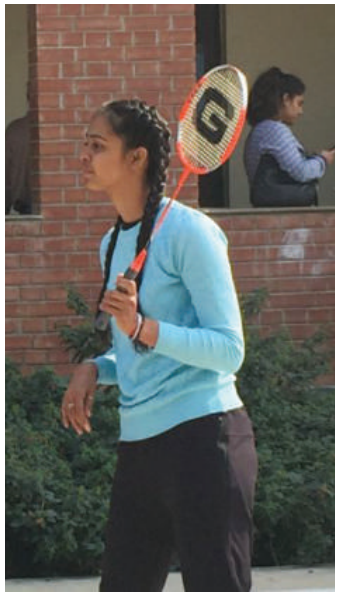

Department of Physical Education

In view of the dynamic role of Physical activities and their related responses in the wholesome development of an individual, the Department of Physical Education organizes many activities throughout the year to propagate the spirit of sports among students and to create an awareness regarding health and fitness.

Students of Ram LalAnand College participated in various Intramural and Extramural activities such as Athletics, Basketball, Baseball, Badminton, Ball Badminton, Chess, Cricket, Judo, Football, Table Tennis, Volleyball, etc. Both male and female participation was significant. In line with the motto 'SPORTS FOR ALL' many activities were also planned for teaching and non-teaching faculty.

A fitness testing camp was also organized by the department in the first week of November so as to check various physical and physiological orders of students as well as for teaching and non-teaching staff followed by the measurement's comparison with the standard norms for BMI and Body Fat Percentage. The response was noteworthy and determined by the routine checkup and comparative discussionswith the participants.

Dr. Pradeep Sharma, Assistant Professor

Volleyball

Cricket

Basketball

Badminton

Table tennis

Football

Judo

Chess

Sports Stars 2018

HARSHIT SEHRAWAT
B.A. (POL.SCI) IYR
Participated in 63rd Junior National Ball Badminton Champion ship
Bronze Medal in 3rd National Circle Fencing Tournament

SHIVANG MISHRA
B.Se. (GEOLOGY) IIYR
Participated in 63rd Junior National Ball Badminton Championship

PRIYANKA RASTOGI
B.A. (HINDI) IIYR
Participated in 63rd Junior National Ball Badminton Championship

EKTA
B.A. (HINDI) II YR
Participated in 63rd Junior National Ball BadmintonChampionship

TARUN KUMAR DAGAR
B.COM. (P) III YR
Participated in All India Inter University Volleyball Championship

AMIT KUMAR
B.A. (PROG.) III YR
Silver Medal Judo Championship
Bronze medal in Wrestling Championship

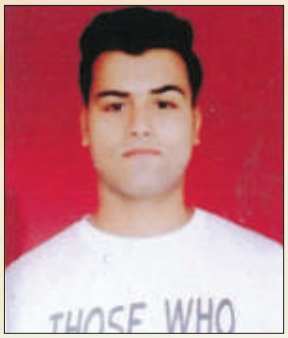

TANMAY
B.A. (PROG.) II YR
Participated in All India Inter University Judo Championship
Gold Medal in Inter college Judo Championship
Bronze in Inter College Wrestling Championship

PARUL
B.Se. (COMP. SCI.)
Bronze Medal in Inter College Judo Championship

SHUBHAM
B.A. (ENGLISH) II YR
Bronze Medal in Inter College Judo Championship

MEGHA BISHT
B.A. (PROG.) II YR
Silver Medal in Inter College Boxing Championship

SHUBHAM SINGH
B.A. (HISTORY) II YR
Silver Medal in Inter College Boxing Championship

ANKIT MISHRA
B.A. (POL.SCI.) II YR
Participated in All India Cooch Behar Cricket Trophy

Department of Management Studies

A seminar was organized by BMS department on 'Corporate Exposure to Young and Curious Minds' on 30thOctober 2017 in the amphitheater.

Two eminent speakers Mr. Pranav Bhatia and Mr. Sachin Birla were invited. Pranav is a founder of Stirring Minds and ZIGEDU Learning Solutions Pvt Ltd. He spoke on basic essentials required for starting a new venture and addressed the problems faced by new entrepreneurs and focused on the first-mover advantage in the market. Sachin is a member of National Institute of Financial Markets. He spoke on the topic 'Online Trading' and explained the procedure and requirements for trading in both primary and secondary markets.

This is to inform you that a seminar was organised by BMS department on 'Corporate Exposure to Young and Curious Minds' on 30.10.17 from 11:00 am till 2:30 pm in the Amphi Theater.

The speakers invited were Pranav Bhatia and Sachin Birla Mr. Panav Bhatia is a founder of stirring Muds and ZIGEDU hearning solutions Pvt Ltd. and currently the Managing Director at human Interactions Pvt Ltd. He spoks on basic essential required for starting a new venter and addressed the problems faced by new entrepreneurs and focussed on the first mover advantage in the market Mr. Sachin Bula is a member of National Institute of Financial Market. He spoke on the topic online trading & explained the procedure & requirements for trading both primary & secondary markets.

Dr. Deepti Gupta
Convener

Report on Centre for Education & Training in Disaster Management Committee

Realizing the importance of awareness and mitigation planning of natural and man-made disasters, a special committeewas constituted under the guidance of our GB member Shri P.P. Srivastava who has a vast experience in this field as a researcher and an administrator. Prime responsibility of the committee which has Dr. Prabhas Kumar Pande and Dr. Archana Gaur as member, is to make the college and surroundings a disaster free zone. In addition, Committee is also exploring the possibility of introducing a short term course on important aspects of Disaster managements desired and conveyed by the Governing Body of the college. On 7th November, 2017 Committee organized lectures on disaster management which were largely attended by the students and faculty. Mr. Rajesh Bhatia (Retired Deputy Secretary, Govt. of Delhi & IRS Trainer) delivered a lecture on "Introduction to Disaster Management" highlighting the role of natural and man-made disasters and their effective management. Another speaker Miss Sushma Guleria Research associate, NIDM) gave an informative talk on "Types of Disasters and Rescue Operations". In addition to these absorbing and informative talks, Mr. Manoj Chandela (ASI, Delhi Traffic Police) enhanced our insight on various aspects of "Road safety" which was very much appreciated by the audience.

On 23rd, March, 2018, Committee on Disaster Management advanced further on its activity front and organized a seminar on "Disaster Response & Mitigation" which was largely attended by students and faculty members of the college. Dr. ArunBapat, a renowned seismologist, delivered a talk on "Seismic vulnerability of NCR DELHI and how to mitigate Seismic Disasters". He discussed various famous buildings and impact of previous earthquakes on them and explained the architecture of safe building. Shri Randeep Rana, (DIG, NDRF) gave a very engrossing and informative talk on "Is India disaster response ready?" Shri P.P. Shrivastav in his inaugural address and later on interactions with audience, strongly emphasized on making everyone in the college a disaster fighter who is trained to fight these disasters within campus and elsewhere. The seminar was followed by a meeting of all distinguished guest and other members under the chairmanship of Shri P.P. Shrivastav to decide the future course of action. It was resolved that a course content focusing on natural disasters and their mitigation will be prepared and tabled in next meeting. A possibility of having training under NDRF is also being explored. Meeting ended with the vote of thanks by college Principal Dr. R.K. Gupta.

नेक्सप्लोरा 2018 की धूम

यदि मन में आत्मविश्वास हो नई ऊर्जा हो, बेहतर करने की सोच हो, तो हर आयोजन एक नया संदेश देता है। दिल्ली विश्वविद्यालय के रामलाल आनन्द महाविद्यालय के उत्सव 'नेक्सप्लोरा 2018' में यही देखने को मिला। महाविद्यालय के प्रशिक्षकों ने जहाँ कार्यक्रम का बेहतर खाका तैयार किया तो वहीं ऊर्जावान छात्र–छात्राओं ने शानदार प्रस्तुति दी। द्विदिवसीय वार्षिकोत्सव का भव्य शुभारम्भ 16 फरवरी को भरतनाट्यम के शानदार कलात्मक प्रस्तुति के साथ हुआ। इस कार्यक्रम का उद्घाटन महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राकेश कुमार गुप्ता ने दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया। इस अवसर पर मंच पर प्राचार्य के साथ कार्यक्रम के संयोजक व छात्र संघ सलाहकार डॉ. 'सुभाष चन्द्र डबास' कला एवं सांस्कृतिक समिति की संयोजिका डॉ. नीना मित्तल, डॉ. संजय शर्मा डॉ. देवेन्द्र कुमार, डॉ. कुसुम रानी गुप्ता, डॉ. रीटा जैन के भरपूर सहयोग से कार्यक्रम सफल हुआ। छात्र संघ के सभी पदाधिकारी एवं शिक्षकगण उपस्थित रहे।

आयोजन के दौरान महाविद्यालय के प्राचार्य ने सभी को संबोधित करते हुए कहा कि ''नेक्सप्लोरा 2018'' सभी नकारात्मक प्रवृत्तियों पर सकारात्मकता का प्रतीक है। हम बेहतर करने केलिए सतत् प्रयत्नशील हैं और मुझे खुशी है कि मेरे कॉलेज के लोग सदा ही मेरे साथ होते हैं।

कार्यक्रम के प्रथम दिन स्वरचित पाठ प्रतियोगिता, गायन प्रतियोगिता, रचनात्मक लेखन, हिन्दी वाद–विवाद प्रतियोगिता, चित्रा फोटोग्राफी प्रतियोगिता, नुक्कड़ नाटक एवं विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिनमें विभिन्न महाविद्यालयों से आए हुए प्रतिभागियों ने भाग लिया और पुरस्कार भी जीते।

इस कार्यक्रम में एक भारत श्रेष्ठ भारत के तहत सिक्किम से दिल्ली आए हुए करीब 50 प्रतिभागी वार्षिकोत्सव का आनन्द उठाने पहुँचे, इसके साथ ही श्री विरेन्द्र सिंह बोकन (सहायक निर्देशक एक भारत श्रेष्ठ भारत) श्री के. एल. पार्चा (जिला युवा समन्वयक, नेहरू युवा केन्द्र) डॉ. ए. के. ग्रुभ (सिक्किम प्रतिभागी प्रमुख) भी कार्यक्रम में शिरकत करने पहुँचे। इन सभी लोगों का स्वागत प्राचार्य व छात्रों के द्वारा फूलमाला पहनाकर व तिलक लगाकर किया गया। सिक्किम से आए हुए प्रतिभागियों ने नृत्य व गीत से अपने क्षेत्रिय संस्कृति की छटा बिखेरी वहीं अनेकता में एकता का संदेश भी दिया।

कार्यक्रम के अगले सत्र में डी.सी.पी. साउथ वेस्ट सुश्री मोनिका भारद्वाज अपनी टीम के साथ पहुँची। महाविद्यालय के प्राचार्य व कार्यक्रम के संयोजक डॉ. सुभाष चन्द्र डबास ने डी.सी.पी. व उनकी टीम का एक जीवंत पौधे से स्वागत किया। पुलिस उपायुक्त मोनिका भारद्वाज ने विद्यार्थियों को, खासकर छात्राओं को दिल्ली पुलिस द्वारा दी जा रही सुरक्षाओं के बारे में बताया। वार्षिकोत्सव के प्रथम दिन का आकर्षण कुतबी ब्रदर्स सूफी गायकों के गीत रहे, जिनके बालीवुड एवं सूफी गीतों ने वहाँ मौजूद सभी युवाओं व श्रोताओं का मन मोह लिया।

महोत्सव के दूसरे दिन 17 फरवरी को एकल नृत्य प्रतियोगिता, समूह नृत्य प्रतियोगिता, अंग्रेजी वाद–विवाद प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी, कार्टून मेकिंग, व अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। जिसमें महाविद्यालय के छात्रों व अन्य महाविद्यालयों से आए हुए छात्र–छात्राओं ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। कार्यक्रम का समापन भव्य अंदाज में किया गया। उत्सव के अंतिम दिन शाम को पंजाबी गायक 'द लैन्डर्स' शामिल हुए। उन्होंने अपने अंदाज में ही गीतों से समा बाँध दिया।

आशुतोष मिश्रा
बी.जे.एम.सी. प्रथम वर्ष

Nexplora-18

STUDENT UNION
Present

STUDENT UNION
Presents

P.S. SOUTH CAMPUS
WEST DISTRICT
NEW DELHI

STUDENT UNION
Presents

DU beat

STUDENT UNION
Presents
NEXPLORA-18
DU beat

NEXPLORA-18
QUTBI BROTHERS
DU beat
DU EXPRESS

STUDENT UNION
Present
NEXPLORA-18

STUDENT UNION

Felicitating 25 Years Of Contribution

Dr. Rakesh Kumar Gupta

Dr. Seema Gupta

Dr. Rakesh Kumar (History)

Dr. Devender Kumar

Mr. Rampal Yadav

Mr. Sanjay Jain

Mrs. Chanchal Batra

Mrs. Sunita Sharma

Mr. Shahab Singh